श्रीसर्वेश्वरो जयति

जगद्गुरु श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः

श्रीरामकथा विशेषांक

श्रीजानकीवल्लभाय नमः

श्रीहनुमते नमः

अपार जनसमूह को श्रीरामकथा रसपान से परितृप्त करते हुए युगसन्त श्रीमुरारीबापू

* श्रीसर्वेश्वरो जयति *
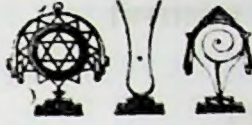
।। जगद्गुरु श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ।।

अ० भा० जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ द्वारा संचालित—

श्रीनिम्बार्क

धार्मिक पाक्षिक-पत्र

का

श्रीरामकथा—विशेषांक

प्रवक्ता—

'युगसन्त' श्रीमुरारी बापू

महुवा (सौराष्ट्र)

[दि० २१-४-९० से २९-४-९० ई० तक]

गुरुपूर्णिमा महोत्सव
वि० सं० २०४८

न्यौछावर
२१) रु०

सम्पादक मण्डल—

पं० गोविन्ददास 'सन्त' धर्मशास्त्री

पं० दयाशङ्कर शास्त्री

पं० भँवरलाल उपाध्याय

पं० सत्यनारायण 'पथिक'

पं० रामलोचनप्रसाद

डॉ० रामप्रसाद शर्मा

पत्रकार कमल जोशी

मुद्रक—

श्रीनिम्बार्क मुद्रणालय

निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

किशनगढ़ (राज०)

❁ श्रीसर्वेश्वरो जयति ❁

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्री 'श्रीजी' श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज

द्वारा विरचित–

श्रीराममहिमाष्टक

विधिवेदबुधावलिगीतगुणः परमर्षिसमर्चितपादयुगः ।
मम रामवरः सुरवृन्दनुतो जयतीह सदा शरणार्तिहरः ॥१॥

ब्रह्मादिदेव, वेद व विद्वानों के द्वारा जिनके गुण गाये गये हैं, महा महर्षिजनों ने जिनके चरण युगल की पूजा की है, जो सुर समाज द्वारा अभिवन्दित एवं शरणागत की रक्षा करने वाले हैं, ऐसे हमारे श्रीरामजी की समस्त लोकों में सदा जय हो ॥१॥

परिपूर्णतमः श्रुतिशास्त्रपरो निखिलागमचर्चितचारुयशाः ।
मम रामवरः सुरवृन्दनुतो जयतीह सदा शरणार्तिहरः ॥२॥

जो परिपूर्ण पुरुषोत्तम परब्रह्म हैं, वेद व शास्त्रों की मर्यादा में तत्पर हैं, सम्पूर्ण शास्त्रों में जिनके सुन्दर यश की चर्चा की गई है, सुर समाज द्वारा अभिवन्दित, शरणागत के कष्टों को दूर करने वाले उन हमारे श्रीरामजी की सदा सर्वत्र जय हो ॥२॥

जनकात्मजया सह कान्तिधरो निज-धाम्नि सदा विलसच्चरण ।
मम रामवरः सुरवृन्दनुतो जयतीह सदा शरणार्तिहरः ॥३॥

जनकलली श्रीसीताजी के साथ सुशोभित, निज धाम में सदा विराजमान, सुरसमाज द्वारा अभिवन्दित, शरणागत रक्षक हमारे श्रीरामजी की सदा जय हो ॥३॥

अनुजाञ्चितहर्षधरः सततं पवनात्मजमानसमोदकरः ।
मम रामवरः सुरवृन्दनुतो जयतीह सदा शरणार्तिहरः ॥४॥

स्वकीय भ्रातृवृन्द श्रीभरतलालजी, श्रीलक्ष्मणलालजी तथा श्रीशत्रुघ्नलालजी से सदा सुशोभित होने से निरन्तर परम प्रसन्न, पवनपुत्र श्रीहनुमान्‌जी के मानस में सदा मोद (हर्ष) करने वाले, सुरसमाज द्वारा अभिवन्दित, शरणागत रक्षक हमारे श्रीरामजी की सदा जय हो ॥४॥

शुचिसुन्दररूपसुधामधुरो नवफुल्लितनीलसरोजमुखः ।
मम रामवरः सुरवृन्दनुतो जयतीह सदा शरणार्तिहरः ।।५।।

स्वच्छ सुन्दर रूपसुधा से जो अत्यन्त मधुर हैं, जिनका श्रीमुख नव विकसित नील-कमल के समान श्याम व प्रसन्न है, सुर-समाज द्वारा अभिवन्दित, शरणागत-रक्षक उन हमारे श्रीरामजी की सदा जय हो ।।५।।

भवबन्धनमुक्तिकरः सदयं करुणारसकोष इनो जगतः ।
मम रामवरः सुरवृन्दनुतो जयतीह सदा शरणार्तिहरः ।।६।।

दया के साथ संसार के बन्धन से मुक्त करने वाले, करुणारूपी अमृत-रस के आगार, जगत् के स्वामी (सूर्यवंशी) सुर-समाज द्वारा अभिवन्दित, शरणागत प्रतिपाल, उन हमारे श्रीरामजी की सदा जय हो ।।६।।

धृतकंजकरः शिवचापधरः सरयूमणितीरविहारपरः ।
मम रामवरः सुरवृन्दनुतो जयतीह सदा शरणार्तिहरः ।।७।।

जो निज कर में कमल को धारण किये हुए, शिवजी के धनुष को चढ़ाने वाले, श्रीसरयूजी के मणिजटित तट पर विहार करने वाले हैं, सुर-समाज द्वारा अभिवन्दित, शरणागतवत्सल उन हमारे श्रीरामजी की सदा जय हो ।।७।।

अनुराग-विराग-रहस्यधरः सुखदः खलु राम उदारवरः ।
मम रामवरः सुरवृन्दनुतो जयतीह सदा शरणार्तिहरः ।।८।।

अनुराग (प्रेम) और विराग (वैराग्य) के रहस्य को समझने वाले, सबको सुख देने वाले, निश्चय ही योगियों की योग-साधना के आश्रय, परम उदार, सुर-समाज द्वारा अभिवन्दित, शरण में आये हुए भक्तजनों की पीड़ा को हरने वाले हमारे श्रीरामजी की सदा सर्वत्र जय हो ।।८।।

सीतारामरतिप्राप्त्यै श्रीराममहिमाष्टकम् । राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ।।

पाठकों के हृदय में श्रीसीतारामजी के युगल-चरणों की प्रेमाभक्ति का आविर्भाव होने के लिये अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधिपति श्री "श्रीजी" श्रीराधा-सर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज द्वारा यह श्रीराममहिमाष्टक विनिर्मित हुआ ।।९।।

श्रीहनुमन्महिमाष्टकम्

जगदीश्वररामपदाब्जरतो जपजीवन-जिष्णु-सहिष्णु-सुधीः ।
जडमानसतामसदूरकरो जयतीशबलो हनुमानजितः ॥१॥

जगत् के ईश्वर भगवान् राम के चरण-कमलों में निरन्तर निरत, जप ही जिनका जीवन है, जो जयशील, सहिष्णु और विद्वान् हैं, जड अर्थात् अज्ञानी-जनों के मानस के तामस (अज्ञानान्धकार) को दूर करने वाले हैं, जिनको किसी ने नहीं जीता है, ईश (भगवान् श्रीराम) ही जिनका परम बल है, ऐसे श्रीहनुमान्जी की जय हो, अर्थात् श्रीहनुमान्जी को प्रणाम करते हैं ॥१॥

अनुरागसुधारससिन्धुरहो मिथिलेशसुतापदभक्तिरतः ।
सततं मनसा हरिनामधरो जयतीशबलो हनुमानजितः ॥२॥

अहो ! जो प्रेम रूप अमृत रस के सागर हैं, मिथिलेश श्रीजनकजी की पुत्री श्री-जानकीजी के श्रीचरणों की भक्ति में संलग्न हैं, निरन्तर श्रीहरिनाम को हृदय से धारण किये हुये हैं, जिनको किसी ने नहीं जीता है, श्रीराम ही जिनका परम बल है, ऐसे श्रीहनुमान्जी को प्रणाम करते हैं ॥२॥

अनिशं निजनाथगुणस्मरणश्शरणाभयदानमहानिपुणः ।
करतालसुकीर्तननृत्यकरो जयतीशबलो हनुमानजितः ॥३॥

जो सदा अपने स्वामी श्रीराम के गुणों का स्मरण करते रहते हैं, शरणागत भक्त-जनों के लिये अभय दान करने में महान् निपुण हैं, कर से ताल बजाते हुये श्रीहरिनामसंकीर्तन के साथ नृत्य करते रहते हैं, जिनको किसी ने नहीं जीता है, श्रीराम ही जिनका परम बल है, ऐसे श्रीहनुमान्जी को प्रणाम करते हैं ॥३॥

पृषदश्वसुतो निजधर्मरतो वरणीयगुणोऽनिलवेगचरः ।
प्रलयंकरभीकरभीमरवो जयतीशबलो हनुमानजितः ॥४॥

वायु-नन्दन, निज धर्म में निरत, वरणीय (श्रेष्ठ) गुणों से युक्त, वायु के वेग के समान तीव्र गति से विचरण करने वाले, प्रलयकारी भयङ्कर भीम (घोर) गर्जना करने वाले, जिनको किसी ने नहीं जीता है, श्रीराम ही जिनका परम बल है, ऐसे श्रीहनुमान्जी को प्रणाम करते हैं ॥४॥

करशैलधरः खलु विप्रवरो दनुजान्तक उत्तममानयुतः ।
अतिमंजुलपीतजटासुभगो जयतीशबलो हनुमानजितः ।।५।।

कर (हाथ) में पर्वत को धारण किये हुये, द्विज श्रेष्ठ, राक्षसों का अन्त करने वाले उत्तम सम्मान से युक्त, अत्यन्त मनोहर पीतवर्ण की जटाओं से शोभित, जिनको किसी ने नहीं जीता है, श्रीराम ही जिनका परम बल है, ऐसे श्रीहनुमान्जी को कणाम करते हैं ।।५।।

करकंजसुशोभितहेमगदो निजगर्जनकम्पितशत्रुदलः ।
प्रबलोऽतुलशक्तिधरो वरदो जयतीशबलो हनुमानजितः ।।६।।

जिनके हस्त कमल में सुवर्ण की गदा शोभित हो रही है, जो अपनी गर्जना से शत्रु दल को प्रकम्पित कर देते हैं, महा बलवान्, अतुल शक्तिशाली तथा भक्तों को वर देने वाले हैं, जिनको किसी ने नहीं जीता है, श्रीराम ही जिनका परम बल है, ऐसे श्रीहनुमान्जी को प्रणाम करते हैं ।।६।।

अभिबद्धकरः शुभदृष्टिधरो मधुरं मधुरं हरिनाम जपन् ।
प्रतिधामगतो नयशास्त्रपटुर्जयतीशबलो हनुमानजितः ।।७।।

जो शुभ सौम्य दृष्टिवाले, हाथ जोड़े मधुर-मधुर स्वर में श्रीहरि का नाम जपते हुये प्रत्येक धाम में पहुँच सकने वाले, नीति-शास्त्र में निपुण हैं, जिनको किसी ने नहीं जीता है, श्रीराम ही जिनका परम बल है, ऐसे श्रीहनुमान्जी को प्रणाम करते हैं ।।७।।

सकलागम-तन्त्र-पुराणमुखः प्रभुदास्यमतिर्हरिनामरतिः ।
सुविचित्रयतिः कपियूथपतिर्जयतीशबलो हनुमानजितः ।।८।।

सम्पूर्ण आगम (शास्त्र), तन्त्र और पुराण जिनको कण्ठस्थ हैं, स्वामी (श्रीराम) की दासता में जिनकी मति है, और श्रीहरि के नाम-जप में जिनको प्रेम है, जो विलक्षण यति (जितेन्द्रिय) एवं वानर यूथ के स्वामी हैं, जिनको किसी ने नहीं जीता है. श्रीराम ही जिनका परम बल है, ऐसे श्रीहनुमान्जी को प्रणाम करते हैं ।।८।।

श्रीसीतारामपादाब्ज-पराभक्तिप्रदं वरम् । पठनान्मनसा नित्यं सद्यः सर्वसुखावहम् ।।
अर्थदं मुक्तिदं दिव्यं हनुमन्महिमाष्टकम् । राधासर्वेश्वराद्ये न शरणान्तेन निर्मितम् ।।

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधिपति श्री "श्रीजी" श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज द्वारा विनिर्मित दिव्य यह श्रीहनुमन्महिमाष्टक परम श्रेष्ठ तुरन्त सब प्रकार के सुखों व धन आदि वैभव प्रदाता बन्धन का मोक्ष करने वाला है और श्रीसीतारामजी के चरण कवलों में पराभक्ति को प्रदान करता है ।।९-१०।।

★ ● ★

आचार्य श्रीनिम्बार्क और उनका सम्प्रदाय

[लेखक—पं० श्रीरामगोपाल शास्त्री, निम्बार्क भूषण]
शिक्षामन्त्री - अ० भा० जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ

आज के युग में विशेषतया राजनीति के क्षेत्र में लोग सम्प्रदाय शब्द का गर्हित अर्थ में प्रयोग करने लग गये हैं। राष्ट्र में एकता लाने के लिये हमारे लोकनायक सम्प्रदायवाद का समूल उन्मूलन करने के लिये जितनी शक्ति व्यथित करते हैं उतना ही यह रोग अनेक पार्टियों का रूप धारण करके बढ़ता ही जा रहा है। जब तक इसके वास्तविक अर्थ को समझकर इसे आदर नहीं देंगे तब तक राष्ट्र व विश्व में शान्ति तथा एकता कथमपि सम्भव नहीं हो सकती।

शान्ति आत्मा का धर्म है-शरीर का नहीं। आत्मा ज्ञान स्वरूप व ज्ञाता है। इसे शान्ति यथार्थ ज्ञान से ही मिल सकती है अयथार्थ ज्ञान से नहीं। यथार्थ ज्ञान का मूल वेदादि आप्त वाक्य हैं जो परम्परा से आम्नात हैं। जिस परम्परा से हम यथार्थ का ज्ञान प्राप्त करते हैं उसी का नाम सम्प्रदाय या आम्नाय है। जैसा कि कोषकार ने कहा है - "अथाम्नाय: सम्प्रदाय:।"

मन्त्र साधना अथवा मन्त्रणा भी तभी सफल होती है जबकि वह ज्ञान के मूल स्रोत वेद के विपरीत न हो। सम्प्रदाय से विहीन या विपरीत कोई भी साधना उपासना आदि सफल नहीं हो सकती। इसीलिये सभी सम्प्रदायें अपने को अनादि वैदिक सत्सम्प्रदाय कहकर गौरव का अनुभव करती हैं। श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय भी इस तथ्य को स्वीकार करती हुई वेद, उपनिषद्, सात्विक पुराण व शास्त्रों को अपने सिद्धान्त का मूल मानती है।

हँसावतार

श्रीनिम्बार्कोपदिष्ट उपासना की परम्परा का मूल श्रीहँस भगवान् हैं। अतः श्रीहँस सम्प्रदाय भी इसका एक नाम है। हिरण्यगर्भ ब्रह्मा के मानस पुत्र सनकादिकों ने अपने पिता से योग की ऐकान्तिकी सूक्ष्म गति के सम्बन्ध में प्रश्न किया। ब्रह्माजी प्रश्न के बीज को नहीं समझ सके। अन्त में नित्य निकुञ्जविहारी सर्वेश्वर प्रभु श्यामसुन्दर का ध्यान किया। उस समय भगवान् श्रीहँसरूप से प्रकट हो गये। आपने सनकादिकों के प्रश्न का समाधान किया तथा अष्टादशाक्षर श्रीगोपाल मन्त्र व मानसी पूजा के साथ मोक्ष मार्ग का उपदेश किया। इस प्रकार श्रीहँस भगवान् सनकादिकों को ज्ञान, भक्ति रहस्य, शरणागति व अष्टादशाक्षर मन्त्रराज का उपदेश करके अन्तर्हित हो गये। श्रीसनकादि ब्रह्मा के मानस पुत्र हैं वे लोक में आसक्त नहीं होते। वे सब वीतराग और विमत्सर हैं। ब्रह्माजी ने सृष्टि रचना के लिए कहा पर इन्होंने सर्जन की इच्छा नहीं की। इस प्रकार सनकादि भगवान् निवृत्ति धर्माश्रय वैदिक सम्प्रदाय के प्रवर्तक लोकाचार्य हैं।

देवर्षि नारद भगवान्

देवर्षि श्रीनारदजी ब्रह्माजी की गोद से मार्गशीर्ष शुक्ला द्वादशी को प्रकट हुए। श्री सनकादिकों से आपको अष्टादशाक्षर श्रीगोपाल-मन्त्र की दीक्षा प्राप्त हुई। आप ही श्रीआद्य

निम्बार्काचार्यजी के गुरु है। निकुञ्ज उपासना में आप मुग्धा सखीरूप हैं।

आद्याचार्य श्रीनिम्बार्कमहामुनीन्द्र

एक दिन कर्मों में संशय होने के कारण विवाद करते हुए सब मुनि ब्रह्माजी के पास गये। विचित्र वैदिक कर्मों की प्रवृत्ति व निवृत्ति के सम्बन्ध में प्रश्न किये। ब्रह्माजी स्वयं इनके साथ क्षीरसागर में प्रभु अनिरुद्ध के पास गये। विश्वात्मा भगवान् ने कहा—"हे सुदर्शन ! निवृत्ति लक्षण भागवत् धर्म का उपदेश करो।" मेरु के दक्षिण पार्श्व में तैलङ्ग देश में गोदावरी तट पर अवतीर्ण होकर देवदर्शन श्रीनारदजी से दीक्षा लेकर नष्ट प्राय जीवों को वैष्णव धर्म का उपदेश करो।" भगवान् श्रीसुदर्शन ने उक्त आदेश को स्वीकार करके महीमण्डल में अवतार लिया।

भृगुवंश समुद्भव "अरुण" नामक तैलङ्ग ब्राह्मण के यहाँ "जयन्ती" में कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा को श्रीनिम्बार्क का प्राकट्य हुआ। जन्म होते ही दिव्य तेजस्वी बालक को देखकर माता जयन्ती ने पूछा - आप देवाधि देव हैं या दिवाकर हैं अथवा दिव्याम्बर देव गणाधिप हैं ? कौन हैं ? जा मेरे जठर से जन्म ले रहे हैं। तब बालक निम्बार्क ने कहा –'पुराकल्प में ऐरावती के तट पर "हविर्धान" नाम से विख्यात् तुम्हारा पुत्र था, वह ही मैं अब इस कल्प में प्रेम निबन्धन के कारण पुनः तुम्हारे यहाँ प्रकट हुआ हूँ।

श्रीनिम्बार्काचार्य के प्राकट्य के सम्बन्ध में संकेतित "हविर्धान" की अन्तः कथा इस प्रकार है—

वर्तमान श्वेतवाराहकल्प में तीन कल्प पूर्व त्रेतायुग के अन्तिमचरण में द्विजों ने विष्णु-क्षेत्र में श्रीहरि का भजन किया। असुरों ने इनके यज्ञ में विघ्न उत्पन्न किया। इससे कुण्ठित वे मेरु के ऊपरी भाग में ब्रह्माजी की शरण में गये। ब्रह्माजी ने श्रीहरि का ध्यान किया। उन्होंने मुनियों की रक्षा हेतु चक्रराज श्रीसुदर्शन को आज्ञा दी। तदनुसार चक्रराज ने मुनि रूप धारण करके यज्ञ की रक्षा की। इस रूप में आप 'हविर्धान' नाम से विख्यात हुए। वेदों को आनन्दित करने से ये 'नियमानन्द' भी कहे जाने लगे। श्रीनियमानन्द का ही कालान्तर में निम्बवृक्ष में अर्क (सूर्य) के दर्शन कराने की घटना के कारण 'निम्बार्क' यह नाम प्रसिद्ध हुआ। नियमानन्द का 'निम्बार्क' नाम होने की विशेष घटना इस प्रकार है—

"एक दिन अरुण ऋषि कहीं गये हुए थे। पीछे से एक ब्रह्मानन्द यति बालक नियमानन्द के दर्शनार्थ घर आ गये। माता जयन्ती ने उनका सत्कार करके भोजन के लिये प्रार्थना की। अतिकाल हुआ देखकर यति बिना भोजन किये वापस जाने लगे। बालक नियमानन्द ने यति का पदाभिवन्दन करके निवेदन किया—"स्वामीजी ! देखिये अभी तो निम्बवृक्ष पर सूर्य है" यह कहकर निम्ब पर सूर्य भगवान् के दर्शन करा दिये। यति ने यह देखकर 'अभी दिन है, रात नहीं हुई।' यह विश्वास कर लिया। भोजन किया, जल पीया। पश्चात् जाने लगे तो देखा–चार घड़ी रात बीत गई। वे आश्चर्य चकित हुए। यह चमत्कार सुदर्शनावतार बालक नियमानन्द का ही है। अपने दिव्य सुदशन तेज को ही इसने निम्बवृक्ष पर स्थापित करके रात को भी दिन के रूप में प्रकाशित कर दिया है। यह समझ गये।

उस समय यति ब्रह्मानन्द के रूप में दर्शनार्थ आये ब्रह्माजी ने कहा—'जिस लिये

आपका अवतार हुआ है, उसे सार्थक करो। शीघ्र ही यहाँ नारदजी पधारेंगे, उनसे दीक्षा प्राप्त करो। मुझे निम्ब में अर्क के दर्शन कराये हैं अतः अब आपका "निम्बार्क" यह नाम प्रसिद्ध होगा। यह कह कर ब्रह्माजी वहाँ से अन्तर्धान हो गये।

एक दिन अकस्मात् देवर्षि श्रीनारदजी वीणावादन व हरि गुणगान करते हुए श्री-अरुण ऋषि के आश्रम में पधारे। ऋषि ने पाद्य अर्घ्य आदि द्वारा देवर्षि का पूजन कर आसन पर उन्हें विराजमान किया। श्रीनिम्बार्क के सम्बन्ध में देवर्षि नारदजी ने कहा—ऋषिवर तुम्हारा यह पुत्र मनुष्य नहीं है। यह तो साक्षात भगवान् है। इस मृत्युलोक के मानवों का विशेषतः नास्तिक पाखण्डों को सदुपदेश के द्वारा सत्पथ में लाकर उद्धार करने के लिये और सत्सम्प्रदाय के प्रवर्तन के लिये श्रीभगवान् की आज्ञा से श्रीसुदर्शनचक्र तुम्हारे पुत्र के रूप में अवतीर्ण हुये हैं। लौकिक व्यवहार एवं शास्त्र मर्यादा के अनुसार मैं इनको दीक्षा और नैष्ठिक ब्रह्मचर्य देकर पूर्ण ब्रह्मविद्या का उप-देश करने के लिये तुम्हारे आश्रम में आया हूँ।"

श्रीनिम्बार्क ने देवर्षि को अपना आन्तरिक भाव अभिव्यक्त करके उनकी कृपा प्राप्ति की प्रार्थना की। देवर्षि श्रीनारदजी ने अपने गुरुदेव श्री-सनकादि भगवान् से जो ब्रह्म विद्या व पञ्च-पदी अष्टादशाक्षर श्रीगोपालमन्त्र प्राप्त किया था वह गुरु शक्ति संचार के साथ श्रीनिम्बार्क को प्रदान कर दिया और कहा इस विद्या का धारण व स्फुरण साधन सापेक्ष है, अतः यहाँ ही कठोर तप करो एवं भगवदाज्ञा का पालन करते हुए जगत् में जीवों का उद्धार करो। ऐसा कहकर एवं सनकादिकों से प्राप्त श्रीसर्वे-श्वर भगवान् की सेवा देकर श्रीदेवर्षि नारद वहाँ ही अन्तर्हित हो गये।

श्रीनिम्बार्क ने अपने गुरुदेव के आदेशा-नुसार श्रीनिम्बार्काश्रम (निम्बग्राम) में ही कठोर तपस्या की। श्रीसर्वेश्वर प्रभु श्रीनित्य-निकुञ्जविहारी युगल का साक्षात्कार एवं आत्मज्ञान लाभ होने से ये सिद्ध मनोरथ हुए। तीर्थ यात्रा के प्रसङ्ग में पैदल यात्रा करते हुए आपने भारत के पूर्व, पश्चिम, उत्तर व दक्षिण में असंख्य जीवों को सन्मार्ग में लाकर उनका उद्धार किया।

ग्रन्थों में-वेदान्त पारिजातसौरभ, वेदान्त कामधेनु (दशश्लोकी), मन्त्र रहस्य षोडशी, प्रपन्नकल्पवल्ली, राधाष्टक, कृष्णाष्टक, प्रातः स्मरण स्तोत्र आदि ग्रन्थ आपके द्वारा विरचित हैं। इनके अतिरिक्त भी अनेक ग्रन्थ आपके द्वारा विरचित हैं जो विधर्मियों के अत्याचार के समय नष्ट हो गये बताये जाते हैं।

सिद्धान्त

श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय का दार्शनिक सिद्धान्त स्वाभाविक द्वैताद्वैत है। इसे ही भेदाभेद भी कहते हैं। वेद व उपनिषदों में जहाँ द्वैत बोधक श्रुतियाँ मिलती हैं वहाँ अद्वैत का भी प्रतिपादन किया गया है। निम्बार्क दर्शन दोनों प्रकार की श्रुतियों को स्वाभाविक कह कर वेद को सर्वा-शतः प्रमाण मानता है। जैसे सुवर्ण के अनेक प्रकार के आभूषण बनाये जाते हैं। सबके नाम और रूप पृथक्-पृथक् होते हैं। वे आपस में एक दूसरे के व्यावर्तक हो जाते हैं। नासाभूषण, कर्णभूषण नहीं कहा जा सकता और कर्णभूषण, नासाभूषण नहीं बन सकता। सब भिन्न-भिन्न हैं फिर भी सुवर्ण सब में होने से अभिन्न भी है। अनेक प्रकार के व अनेक नाम के आभूषण हैं पर वे हैं किसके ? इस प्रश्न का एक ही उत्तर मिलेगा कि वे सब सोने के हैं। सुवर्ण सब में व्याप्त है। सत् से सत् की ही सृष्टि होती है।

जब सुवर्ण सत् व सब में व्याप्त है तो इसके बने विभिन्न आभूषण असत् कैसे हो सकते हैं।

इसी प्रकार जब ब्रह्म सत् है तो जगत् असत् (मिथ्या) कैसे हो सकता है। जगत् को ब्रह्म का विवर्त कहने से पार नहीं पड़ती। ब्रह्म व्यापक होने से उसका कोई प्रतिबिम्ब नही हो सकता क्योंकि वह तो वाच्य या परिच्छिन्न वस्तु का ही हो सकता है। निम्बार्क दर्शन ने जगत् को ब्रह्म का शक्ति विक्षेप लक्षण परिणाम माना है। ब्रह्म के अतिरिक्त सभी पदार्थ ब्रह्म की सत्ता के अधीन एवं नियम्य हैं। ब्रह्म जगत् से अभिन्न होता हुआ अर्थात् उपादान कारण होता हुआ निमित्त कारण अर्थात् भिन्न भी है। इसी प्रत्यक्ष तथ्य के आधार पर इस सम्प्रदाय ने स्वाभाविक भेदाभेद अथवा द्वैताद्वैत सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है।

नित्य निकुञ्जविहारी श्रीराधाकृष्ण युगल ही इस सम्प्रदाय में उपास्य हैं। साधन के लिये श्रीगोपालतापिनी उपनिषद् की पञ्चपदी विद्या (अष्टादशाक्षर श्रीगोपालमन्त्रराज) का उपदेश दिया जाता है। आगम के आधार पर शरणागति मन्त्र के उपदेश की भी परम्परा है। उपासना का विशेष ज्ञान प्राप्त करने के लिये श्रीआदिवाणी, श्रीमहावाणी आदि वाणी ग्रन्थों का मनन तथा मर्मज्ञ रसिक महात्माओं का सत्सङ्ग करना चाहिये। ★

श्रीसुदर्शनचक्रावतार आद्याचार्य
जगद्गुरु श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य

श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय

[लेखक—म० मं० श्रीमहान्त स्वामी व्रजविहारीशरण 'राजीव', महामन्त्री श्रीनि० सभा]
प्रधान सम्पादक - श्रीभक्तिभागीरथी, अहमदाबाद

वैष्णव सम्प्रदायों में श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय अति प्राचीनतम है इसकी परम्परा हंस भगवान् से चल रही है।

एक बार सनकादि मुनियों ने ब्रह्माजी से प्रश्न किया कि सांसारिक जीव वासनाओं से ऊपर उठकर मुक्ति पद कैसे प्राप्त कर सकते हैं? उस समय ब्रह्माजी ने अथर्ववेद का उल्लेख करते हुए श्रीगोपाल तापिन्युपनिषद् में वर्णित पंचपदा ब्रह्म विद्या का पंच संस्कार पूवक सदुपदेश दिया और कहा कि श्रीसर्वेश्वर प्रभु की उपासना से ही मुक्ति पद प्राप्त करने का मार्ग सुगम हो सकता है।

सनकादि महर्षियों ने इसी तथ्य का उल्लेख देवर्षि नारदजी से किया और उन्होंने आगे चलकर यही उपदेश श्रीनिम्बार्काचार्यजी को दिया। भगवान् श्रीनिम्बार्क का जन्म दक्षिण भारत के तैलंगाना के वैदूर्य पत्तन (मूंगीपैठण) नामक नगर में गोदावरी के तट पर अरुणाश्रम में द्वापरान्त युधिष्ठिर शक. ६ में हुआ था। आपके पिता का नाम महर्षि अरुण और माता का नाम जयन्ती देवी था। बचपन में आपका नाम नियमानन्द रखा गया था। वे अपने माता-पिता के साथ व्रज मण्डल स्थित गिरि गोवर्धन आकर यहीं भजन-साधना करने लगे थे। आठ वर्ष की आयु में आपके माता-पिता ने उपनयन संस्कार किया। इसके बाद वेद वेदांग का अध्ययन प्रारम्भ किया। एक बार आश्रम में ब्रह्माजी पधारे उन्होंने कहा मैं सूर्यास्त के बाद अन्न ग्रहण नहीं करता। इससे निम्बार्काचार्य चिन्तित हुए उन्होंने नीम के वृक्ष पर अपने चारित्रिक तेज से सूर्य का प्रकाश कर दिया। इसके बाद ब्रह्माजी ने भोजन किया। इसी घटना के बाद आपका नाम **"निम्बार्काचार्य"** हो गया।

आचार्य रूप मे प्रतिष्ठित होने पर आपके नाम से ही निम्बार्क सम्प्रदाय की स्थापना हुई। आचार्य ने अपने दार्शनिक विचारों से यही प्रतिपादित किया कि ब्रह्म, जीव और जगत् ये तीनों तत्व अनादि, अनन्त हैं।

ब्रह्म स्वतन्त्र रूप में विद्यमान रहता है, जीव और जगत् उसके अधीन रहते हैं। उनकी मान्यता है कि समस्त चराचर जगत् ब्रह्म का ही अंश होने से सत्य रूप है। इसलिए किसी भी प्राणी को पीड़ित नहीं करना चाहिए। जड़ वस्तुओं के दुरुपयोग को भी वे निषिद्ध मानते थे। उनका कथन था कि अचेतन वस्तुओं के प्रति भी समादरणीय भाव रखना चाहिए।

भगवान् श्रीनिम्बार्काचार्य ने वेदों में वर्णित **'द्वैत'** तथा **'अद्वैत'** दोनों ही सिद्धांतों को मान्यता प्रदान की है। इस प्रकार स्वतः सिद्ध हो जाता है कि आचार्य निम्बार्क ने वेद मन्त्रों की पूर्णतः सुरक्षा करके अपने सम्प्रदाय को अन्य सम्प्रदायों से अलग रखा है।

उनकी मान्यता है कि **'स्वाभाविक द्वैताद्वैत'** का सिद्धान्त ही यह प्रतिपादित करता है कि मनुष्य को प्राणिमात्र से प्रेम करना चाहिए और सभी के साथ मिलजुल कर रहना चाहिए।

उपासना तत्त्व की व्याख्या में भगवान् श्रीनिम्बार्काचार्य कहते हैं—

'स्वभावतोऽपास्तसमस्तदोष-
मशेषकल्याणगुणैकराशिम् ।
व्यूहांगिनं ब्रह्म परं वरेण्यं
ध्यायेम कृष्णं कमलेक्षणं हरिम् ।।

इसको सविशेष स्पष्ट करते हुए उन्होंने निम्न श्लोक का भी उल्लेख किया है—

'उपासनीयं नितरां जनैः सदा
प्रहाणयेऽज्ञानतमोऽनुवृत्तेः ।
सनंदनाद्यै मुनिभिस्तथोक्तं
श्रीनारदायाखिल तत्त्व साक्षिणे।।'

अज्ञानांधकार को दूर करने के लिए निरन्तर उक्त श्लोकों का पाठ करना चाहिए। इस सम्प्रदाय में श्रीगोपाल मन्त्र दिया जाता है, जो परम्परागत है, यथा–

नारायण मुखाम्भोजान्मंत्रस्त्वष्टादशाक्षरः ।
आविर्भूतः कुमारैस्तु गृहीत्वा नारदाय वै ।।
उपदिष्टः स्व शिष्याय निम्बार्काय च तेन तु ।
एवं परंपराप्राप्तो मन्त्रस्त्वष्टादशाक्षरः ।।

(विष्णु यामल)

इस प्रकार यह पंचपदी ब्रह्म विद्या (श्रीगोपाल मन्त्रराज उपदेश) श्रीहंसरूप नारायण से श्रीसनकादिक महर्षियों को, उनसे श्रीनारदजी को और देवर्षि से श्रीनिम्बार्काचार्य को प्राप्त हुआ। इन्होंने महर्षि बादरायण कृत ब्रह्म सूत्रों पर वेदान्त पारिजात नामक भाष्य की रचना की। इसके अतिरिक्त वेदान्त दशश्लोकी, मन्त्र रहस्य षोडशी, प्रपन्न कल्पवल्ली, प्रपत्ति चिन्तामणि, श्रीमद्भगवद्गीता वाक्यार्थ, प्रातः स्मरण स्तोत्र तथा श्रीराधाष्टक नामक अनेक ग्रन्थों की रचना की।

आपके पश्चात् आपके शिष्य पांचजन्यावतार श्रीश्रीनिवासाचार्यजी ने ब्रह्म सूत्रों पर **'वेदान्त कौस्तुभ'** नामक वृहद् भाष्य का प्रणयन किया है। भगवान् श्रीनिम्बार्काचार्य से चौथी पीढ़ी में श्रीपुरुषोत्तमाचार्यजी ने श्रीनिम्बार्ककृत 'वेदान्त दशश्लोकी' पर **'वेदान्त रत्न मंजूषा'** नामक वृहद् टीका करके वेदान्त दर्शन का अनुपम दिग्दर्शन कराया है। १३ वीं पीढ़ी में आचार्य श्रीदेवाचार्यजी ने वेदान्त-दर्शन पर **'जाह्नवी'** नामक ग्रन्थ की रचना की। १४ वीं पीढ़ी में श्रीसुन्दरभट्टाचार्यजी ने इसी 'जाह्नवी' नामक ग्रन्थ पर 'सेतु' नामक विस्तृत टीका लिखी। इसी सन्दर्भ में दिग्विजयी श्रीकेशवकाश्मिरीभट्टाचार्यजी महाराज ने ब्रह्म सूत्रों पर विस्तृत रूप में **'वेदान्त कौस्तुभ प्रभा'** नामक भाष्य की रचना की है।

उपर्युक्त समस्त सद्ग्रन्थ श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय की महत्ता के उज्ज्वल प्रतीक हैं। अर्वाचीन समय में ज० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ के आचार्य पद पर इस सम्प्रदाय के एकमात्र विरक्ताचार्य **अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य श्री "श्रीजी" श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज** विराजमान हैं। आपने भी अनेक ग्रन्थों की रचनाएँ की हैं 'श्रीस्तवरत्नाञ्जलि' नामक ग्रन्थ आपकी एक विशिष्ट रचना है। इसके अतिरिक्त युगलगीतिशतकम्, श्रीसर्वेश्वर सुधाबिन्दु, श्रीराधामाधवशतकम्, श्रीनिकुञ्ज सौरभम्, भारत-भारतीवैभवम्, श्रीयुगलस्तवविंशति एवं भारत कल्पतरु आदि ग्रन्थ प्रमुख हैं जिनमें भगवान् के गुणगान के साथ-साथ भारत राष्ट्र की अद्भुत महिमा का वर्णन है। इन्हीं आचार्यश्री के तत्त्वावधान में विशाल **श्रीरामकथा** का यह आयोजन हुआ था।

★ ● ★

साभ्रमती नदी के तट पर स्थित—
श्रीनिम्बार्कतीर्थ व उसकी अद्भुत महिमा

यह निम्बार्कतीर्थ जहाँ श्रीरामकथा का नवदिवसीय आयोजन हुआ। अरावली पर्वत-माला की विशाल उपत्यका में स्थित तीर्थगुरु श्रीपुष्करराज क्षेत्रान्तर्गत पिप्पलाद तीर्थ एवं साभ्रमती नदी के समीप है। यह पिप्पलाद तीर्थ आज भी पीपलाद ग्राम के नाम से यहाँ सुप्रसिद्ध है जहाँ पर महर्षि दधीचि के पुत्र पिप्पलाद ने केवल पीपल के पत्तों का आहार करके इस क्षेत्र में तपस्या की है।

श्रीपुष्करारण्य में पिप्पलाद तीर्थ से कुछ दूर साभ्रमती के तट पर श्रीनिम्बार्कतीर्थ का जो वर्णन है वह तीर्थ यही है। इस तीर्थस्थल का भगवान् वेदव्यासकृत पद्मपुराणान्तर्गत उत्तर खण्ड अध्याय १५८ में महत्वपूर्ण उल्लेख इस प्रकार किया गया है।

यहँ प्रसङ्ग श्रीमहादेवजी अपनी परम प्रिया जगदम्बा भगवती श्रीपार्वतीजी को सुना रहे हैं—

☀ श्रीमहादेव उवाच ☀

पिप्पलादात्ततस्तीर्थात्पिचुमन्दार्कमुत्तमम्।
तीर्थं साभ्रमतीतीरे व्याधिदौर्गन्ध्यनाशनम् ।।१।।
पुरा कोलाहले युद्धे दानवैर्निर्जिताः सुराः।
वृक्षेषु विविशुस्तत्र सूक्ष्माः प्राणपरीप्सया ।।२।।
तत्रविल्वे स्थितः शंभुः अश्वत्थे हरिरव्ययः।
शिरीषेऽभूत्सहस्राक्षो निम्बे देवः प्रभाकरः।।३।।
एवमादि यथायोग्यं वृक्षेषु विबुधास्तथा।
यावत्कोलाहलो दैत्यो विष्णुना प्रभविष्णुना।।४।।
हतो महाहवे तावत् स्थितास्ते वृक्षमाश्रिताः।
येन येन हि यो वृक्षो विबुधेन समाश्रितः ।।५।।
स तु तन्मयतां यातस्तस्मात्तं न विनाशयेत्।
इति सूर्यस्य विश्रामात्पिचुमन्दार्कमुत्तमम् ।।६।।
तीर्थं रोग हरं स्नानात् साभ्रमत्यास्तटेऽभवत्।
अत्र गत्वा विशेषेण तं रविं यदि पूजयेत् ।।७।।
पूजयित्वा सुरश्रेष्ठं लभते वाञ्छितं फलम्।
अत्र द्वादशनामानि गत्वा ये वै पठन्ति च ।।८।।
ते नराः पुण्यकर्माणो यावज्जीवं न संशयः।
आदित्यं, भास्करं, भानुं, रविंविश्वप्रकाशकम् ।।९
तीक्ष्णांशुं, चैव मार्तण्डं, सूर्यं चैव प्रभाकरम्।
विभावसुं, सहस्राक्षं, तथा पूषणमेव च ।।१०।।
एवं द्वादश नामानि यः पठेत्प्रयतः सुधीः।
धनं वै पुत्र-पौत्रांश्च लभते नगनन्दिनि ।।११।।
एकैकं नाम आश्रित्य योऽर्चयेन् नरो भुवि।
सप्तजन्मभवेद्विप्रो धनाढ्यो वेदपारगः ।।१२।।
श्रोत्रियो लभते राज्यं वैश्यो धनमवाप्नुयात्।
शूद्रो वै लभते भक्तिंतस्मात्सूक्तं परं जपेत् ।।१३।।
निम्बार्कतः परं तीर्थं न भूतं न भविष्यति।
अत्र स्नात्वा च पीत्वा च मुक्तिभागी भवेद्ध्रुवम् ।।

—पद्मपुराण

भावार्थ—पिप्पलादतीर्थ से कुछ दूर साभ्रमती नदी के किनारे सम्पूर्ण आधिव्याधियों को मिटाने वाला पिचुमन्दार्क (निम्बाकतीर्थ) है। प्राचीन समय में कोलाहल नामक एक दैत्य हो गया है। उसके साथ देवताओं का युद्ध छिड़ गया था। उसके प्रहारों से घबड़ा कर अपने प्राण बचाने के उद्देश्य से देवता सूक्ष्म रूप हो वृक्षों पर जा चढ़े।

जब तक महाविष्णु ने उस कोलाहल दैत्य का वध नहीं किया तब तक शंकरजी बिल्ववृक्ष पर, विष्णुजी पीपल पर, इन्द्र शिरीष वृक्ष पर और सूर्य निम्ब वृक्ष पर छिपे रहे। जो-जो

देवता जिन-जिन वृक्षों पर रहते थे वे-वे वृक्ष तत्तद्देवमय कहलाये। इसी कारण से इन देव वृक्षों को काटना निषिद्ध माना जाता है। जिस स्थल पर सूर्य ने निम्ब वृक्ष पर निवास किया था, वह 'निम्बार्कतीर्थ' कहलाया। इस तीर्थ में स्नान करके निम्बस्थ (नीम में विराजमान) सूर्य (निम्बार्क) की पूजा की जाय तो उस पूजक के समस्त रोग-दोषों की निवृत्ति हो जाती है।

आदित्य, भास्कर, भानु, रवि, विश्व प्रकाशक, तीक्ष्णांशु मार्तण्ड, सूर्य, प्रभाकर, विभावसु, सहस्राक्ष और पूषण, पवित्र होकर इन बारह नामों के जपने से धन-धान्य, पुत्र-पौत्र आदि की प्राप्ति होती है। इन बारह नामों में से किसी एक नाम का भी जपने वाला ब्राह्मण सात जन्मों तक धनाढ्य एवं वेद पारंगत होता है। क्षत्रिय राजा और वैश्य धन-सम्पन्न हो जाता है। शूद्र तीनों वर्णों का भक्त बन जाता है। अधिक क्या कहा जाय। हे पार्वती! निम्बार्कतीर्थ से बढ़कर और कोई तीथ नहीं है न भविष्य में ऐसा तीर्थ हो सकता है। क्योंकि इस तीर्थ में केवल स्नान और आचमन करने मात्र से ही मुक्ति (भगवत्प्राप्ति) का पात्र बन जाता है।

इस प्रकार पद्मपुराण—उत्तरखण्ड के अध्याय १५८ में श्रीमहादेवी-पार्वती सम्वादरूप उपर्युक्त इन चौदह श्लोकों में श्रीनिम्बार्कतीर्थ माहात्म्य का फल श्रुति सहित भावार्थ कहा गया हैं।

इसी श्रीनिम्बार्कतीर्थ (सरोवर) के जीर्णोद्धार के उद्देश्य से श्रीमुरारी बापू की कथा की स्वीकृति होकर यहां श्रीरामकथा का यह भव्य आयोजन हुआ। इस आयोजन में भक्तों द्वारा जो भी भेंट प्राप्त हुई वह इस तीर्थ स्थल के जीर्णोद्धार में लग रहो है कार्य चल रहा है भक्तजन इस कार्य में अपनी अधिकाधिक आर्थिक सेवा प्रदान कर पुण्य के भागी बनें।

इसी निम्बार्कतीर्थ क्षेत्र में "साभ्रमती" नदी का भी पद्मपुराण के १३४ वें अध्याय में वर्णन है। वर्तमान में यह नदी रूपननदी के नाम से प्रसिद्ध है। इसी नदी के समीप निम्बार्क-तीर्थ की स्थिति पद्मपुराण में वर्णित है—

'तीर्थं रोगहरं स्नानात् साभ्रमत्यास्तटेभवत्'

(पद्मपुराण अध्याय १५८ श्लोक ७)

अर्थात् साभ्रमती नदी के तट पर स्थित निम्बार्कतीर्थ में स्नान करने से सम्पूर्ण आध्यात्मिक, आधिभौतिक रोगों की निवृत्ति हो जाती है।

पद्मपुराण के १३४ वें अध्याय के अन्तर्गत भगवान् शंकर पार्वतीजी से कहते हैं-देवि! मैं साभ्रमती नदी के माहात्म्य का वर्णन करता हूँ, जिसे ध्यान से सुनो साभ्रमती नदी में स्नान करने मात्र से प्राणी परम पुण्य को प्राप्त करता है।

इस प्रकार उक्त अध्याय में साभ्रमती नदी का विस्तार से वर्णन करते हुए भगवान शंकर ने कहा कि हे देवि! इस नदी के नाम युगों के अनुसार भिन्न-भिन्न होंगे। यथा—

कृते कृतवती नाम त्रेतायां गिरिकर्णिका।
द्वापरे चन्दना नाम कलौ साभ्रमती स्मृता॥

अर्थात् सतयुग में इस नदी का नाम कृतवती त्रेता में गिरिकर्णिका, द्वापर में चन्दना और कलियुग में साभ्रमती होगा।

यह नदी निम्बार्कतीर्थ के बहुत ही निकट है और इसी के तट पर निम्बार्काचार्यपीठ का "गंगा सागर" नामक उद्यान है जहाँ पर वर्तमान में नवदिवसीय 'रामकथा' करने पधारे हुए विश्व विख्यात युगसन्त श्रीमुरारी बापू की आवास व्यवस्था की गई।

यह स्थान वर्तमान अनन्त श्रीविभूषित निम्बार्काचार्यपीठाधिपति श्री 'श्रीजी' महाराज के तत्त्वावधान में विशेष विकसित रूप धारण करता जा रहा है। ★

अ० भा० जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

❋ संक्षिप्त परिचय ❋

"आचार्य मां विजनीयात्" इस भगवद्-वचनानुसार आचार्य प्रवर श्रीभगवत्स्वरूप ही होते हैं और श्रीभगवद् इच्छानुसार ही इस भूतल पर समय-समय पर अवतरित होकर प्राणीमात्र को पावन बनाते हैं। उनका प्रत्येक कार्य प्रभु प्रीत्यर्थ ही होता है। सर्वदा वैदिक धर्म, भगवदुपासना, वैष्णवता के प्रचार के लिए उनके सभी कार्य उत्तमोत्तम होते हैं। श्री-निम्बार्क सम्प्रदाय में अ० भा० श्रीनिम्बार्का-चार्यपीठ के संस्थापक श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज भी ऐसे ही एक महान् आचार्य थे जिन्होंने अधर्म परायण प्राणियों को धर्म की ओर अभिमुख कर भगवत् शरणागति प्रदान की। वि० सं० १४५० के लगभग राजस्थान के खंडेला राज्य के ग्राम ठीकरिया के गौड़ द्विजवंश में आपका आविर्भाव हुआ। अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज से आपने वैष्णवी दीक्षा प्राप्त की और उन्हीं के साथ ही धर्म प्रचारार्थ भारत भ्रमण करते रहे।

जब राजस्थान, पंजाब, उत्तरप्रदेश आदि की प्रजा द्वारका आदि तीर्थों की यात्रा करने आती थी, तब श्रीनिम्बार्कतीर्थ में स्थित एक यवन तान्त्रिक उन्हें बहुत सताता था। दुःखित प्रजा ने श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज के चरणों में उपस्थित होकर प्रार्थना की-'आपके प्राचीन स्थल श्रीनिम्बार्कतीर्थ को एक यवन फकीर भ्रष्ट कर रहा है, उस प्रदेश में हिन्दुओं का यातायात ठप्प हो चुका है अतः वहाँ की स्थिति सुधारने एवं उस यवन तान्त्रिक के आतङ्क से मुक्त करने के लिए आप अपने कृपा-पात्र किसी प्रतापी शिष्य को वहाँ भिजवावें।'

जनता की करुण पुकार सुनकर श्रीहरि-व्यासदेवाचार्यजी महाराज ने अपने शिष्य श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी को श्रीनिम्बार्कतीर्थ जाने की आज्ञा प्रदान की। आपने श्रीगुरुदेव की आज्ञा को शिरोधार्य करते हुए श्रीनिम्बार्कतीर्थ की ओर प्रस्थान किया और अपने गुरुदेव के आशीर्वाद से यवन तान्त्रिक को परास्त कर अपने इस निम्बार्कतीर्थ के स्वरूप की रक्षा की।

यह क्षेत्र बहुत समय तक निर्जन या बीहड़ वन के रूप में रहा था जिससे यहाँ उपद्रवियों द्वारा तीर्थ यात्रियों को प्रायः कष्ट पहुँचाया जाया करता था। श्रीपरशु-रामदेवाचार्यजी ने अपने सदुपदेशों एवं कथा-कीर्तनादि द्वारा थोड़े ही समय में इन जंगली लोगों के हृदय में भगवद् भक्ति का अंकुर जमा दिया और वे सब श्रद्धालु बन गये। वि० सं० १५१५ में खेजड़ला के भाटी सरदार श्री सीयोजी ने आपसे वैष्णवी दीक्षा ली और शेरशाह बादशाह से सलेमाबाद का ताम्रपत्र भेंट कर-वाया। उसके बाद यहाँ की आबादी उत्तरो-त्तर बढ़ने लगी और आस-पास के व्यक्ति भी आकर रहने लगे। सलेमाबाद के विकास होने के पश्चात् किशनगढ़ की आबादी और राज्य की स्थापना हुई। महाराजा किशनसिंहजी को बादशाह से सरवाड़ आदि अन्य तीन परगनों के साथ-साथ सात गांवों वाला परगना (सलेमा-

बाद) मिला और उन्होंने सर्व प्रथम श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी को देवरै (मन्दिर) जमीन और कोसेटा भेंट किया।

आचार्यपीठ के संस्थापक श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज प्रतिदिन सलेमाबाद से तीर्थराज पुष्कर स्नानार्थ पधारते थे और लौटकर अपना नित्य कृत्य करते थे, यह उनकी महान् तपस्या का प्रताप था। उसे आज आचार्यपीठ में दर्शनार्थ रखी हुई उनकी चरण पादुकाओं (खड़ाउओं) और माला के दर्शन करके अनुभूति कर सकते हैं। वे एक महान् आचार्य थे। श्रीसर्वेश्वर प्रभु (शालिग्राम) स्वरूप जो गुरुदेव श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज द्वारा उन्हें प्रदत्त हुई थी और जो अद्यावधि आचार्यपीठ में विराजमान है, जिन स्वरूप में युगलकिशोर श्रीराधाकृष्ण का आपको साक्षात्कार होता था। भक्त और भगवान् का परस्पर सम्भाषण होता था, उसका उल्लेख कृष्णगढ़ नरेश महाराजा राजसिंहजी की सुता भक्तिमती सुन्दरकुंवरिजी ने स्वरचित "मित्र शिक्षा" ग्रन्थ में किया है। आपके अनेक चरित्र मिलते हैं जो कि श्रीसर्वेश्वर प्रभु से पूर्ण सम्बन्धित हैं जिनका विवरण "परशुरामसागर" नामक वृहद् ग्रन्थ में वर्णित है।

अन्तर्धान के समय पुष्कर-वृन्दावन और निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) तीनों स्थलों पर भक्तों ने आपके एक साथ दर्शन किये। आप वि० सं० १६६४ में अन्तर्धान हुए। आपके हवन कुण्ड (धूनी) की भस्म और नालाजी का जल आज भी श्रद्धालु भक्तों के रोग दोषों को शांत कर देता है।

आपके पश्चात् आचार्यवर्य श्रीहरिवंशदेवाचार्यजी महाराज, श्रीनारायणदेवाचार्यजी, श्रीवन्दावनदेवाचार्यजी, श्रीगोविन्ददेवाचार्यजी, 'श्रीजी' श्रीगोविन्दशरणदेवाचार्यजी, 'श्रीजी' श्रीसर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी, 'श्रीजी' श्रीनिम्बार्कशरणदेवाचार्यजी, 'श्रीजी' श्रीव्रजराजशरणदेवाचार्यजी, 'श्रीजी' श्रीगोपीश्वरशरणदेवाचार्यजी, 'श्रीजी' श्रीघनश्यामशरणदेवाचार्यजी, एवं 'श्रीजी' श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्यजी पीठासीन हुए। वर्तमान में ४८ वीं पीढ़ी आचार्यवर्य श्री 'श्रीजी' श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज अ० भा० जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ पर पीठासीन हैं। आपके समय में सम्प्रदाय एवं आचार्यपीठ का सर्वतोमुखी विकास हो रहा है। श्रीरामकथा का यह आयोजन भी आपश्री की ही महती कृपा का प्रतिफल था।

आचार्यपीठ में विराजित—

श्रीसनकादिक संसेव्य

❁ श्रीसर्वेश्वर प्रभु ❁

अनन्तानन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीमन्निम्बार्क सम्प्रदायाचार्यों के परमाराध्य प्रातः स्मरणीय भगवान् "श्रीसर्वेश्वर प्रभु" श्रीशालिग्रामजी का अति प्राचीन और सूक्ष्म श्रीविग्रह है। यह प्रभु सृष्टिकर्ता श्रीब्रह्मदेव के मानस पुत्र श्रीसनकादिकों के संसेव्य ठाकुर हैं। पश्चात् श्रीसनकादिकों के द्वारा हरिभक्ति परायण वीणापति देवर्षि श्रीनारदजी को इनकी सेवा का सौभाग्य प्राप्त हुआ। पुनः यही सेवा श्रीनारद मुनि द्वारा भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र के करकमल सुशोभित श्रीचक्रसुदर्शनावतार आद्याचार्य जगद्गुरु श्रीनिम्बार्कमहामुनीन्द्र को द्वापरयुग के अन्त में संप्राप्त हुई। जिसको आज ५०८६ वर्ष हो रहे हैं। ऐसी प्राचीन एवं सूक्ष्म श्रीविग्रह संसार में अन्यत्र उपलब्ध नहीं है।

श्रीसर्वेश्वर भगवान् गुञ्जाफल सदृश अति सूक्ष्म श्रीविग्रह हैं। इसके चारों ओर

गोलाकार दक्षिणावर्तचक्र और किरनें बड़ी ही तेज एवं मनोहर प्रतीत होती हैं। मध्यभाग में एक बिन्दु है और उस बिन्दु के मध्यभाग में श्रीयुगल सरकार श्रीराधाकृष्ण के सूक्ष्म दर्शन स्वरूप दो बड़ी रेखाएं हैं।

आद्याचार्य श्रीनिम्बार्क भगवान् से उत्तरोत्तरवर्ती सभी पूर्वाचार्यों द्वारा संसेवित यह प्रतिमा अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, श्रीनिम्बार्कतीर्थ-सलेमाबाद (राजस्थान) में अद्यावधि विद्यमान है। नित्यप्रति मंगला आरती के पश्चात् इस श्रीविग्रह का गोदुग्धादि से श्री पुरुषसूक्त द्वारा विधि-पूर्वक अभिषेक होता है। आचार्यश्री स्वयं अभिषेक कराकर तुलसीदल समर्पण कर शृङ्गार आरती उतारते हैं। उसी समय सूक्ष्मदर्शी यन्त्र से दर्शक भक्तों को श्री विग्रह दर्शन कराने का कार्यक्रम निर्धारित रहता है। केवल उसी समय भक्तजन इन श्रीविग्रह के दर्शन कर सकते हैं। धर्म प्रचारार्थ या भक्तजनों के आग्रहानुसार यदि आचार्यश्री का कभी बाहर पधारना होता है तब श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सेवा सहित ही पधारना होता है।

श्रीसर्वेश्वर प्रभु श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय के एक परमोपास्य श्रीविग्रह हैं और इनकी महिमा विशाल तथा विलक्षण है। इन्हीं प्रभु के अनन्त कृपा प्रसाद से यहाँ सर्वत्र सुख-समृद्धि का अनुभव होता है।

भगवान् श्रीराधामाधव

आचार्यपीठ में विराजमान् श्रीराधामाधव प्रभु श्रीनिम्बार्कवीथीपथिक रसिक शिरोमणि श्रीजयदेव कवि संसेव्य ठाकुर हैं। श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ में विराजने से पहले बंगाल से आकर ब्रजमण्डल में श्रीराधाकुण्ड विराजते थे। वि० सं० १८२३ में जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्रीगोविन्दशरणदेवाचार्यजी महाराज को स्वप्न में आदेश दिया कि मुझे पुष्कर क्षेत्रस्थ आचार्यपीठ सलेमाबाद ले चलो। आचार्यश्री ने पूछा-कैसे किस प्रकार से ले चलें? तब श्रीमाधवजी ने कहा कि-"अपने रथ में बिठा ले चलो।" प्रभु की आज्ञा के अनुसार रथ में विराजमान करके प्रस्थान किया। पीछे से राधाकुण्ड के ब्रजवासी भक्तों ने विचार किया कि भगवान् को ब्रज से बाहर नहीं ले जाने देना चाहिये। वे सब संगठित होकर चले। रथ भरतपुर पहुँचा वहाँ सेवा हो रही थी। आये हुए नर-नारियों ने आचार्यश्री से प्रार्थना की—'श्रीमाधव भगवान् ब्रज में ही विराजें बाहर न पधारें भरतपुर नरेश से भी अनुरोध किया गया। नरेश को विश्वास था कि आचार्यश्री को प्रभु का आदेश हुआ है स्वयं वे अपनी इच्छा से पधारे हैं, उनकी इच्छा के विरुद्ध कुछ भी नहीं हो सकता। यह चित्त में निश्चित करके नरेश ने निर्णय दिया कि आप सब रथ को खेंचकर ले जाइये, यदि माधवजी की इच्छा होगी तो पधार जायेंगे। अगर आप से रथ न चले और आचार्यश्री के घोड़े भी रथ न खेंच सके तो श्रीमाधवजी यहाँ भरतपुर में विराजेंगे। सैकड़ों ब्रजवासियों ने रथ को खेंचा परन्तु वह रथ अत्यन्त बल लगाये जाने पर तनिक भी न चल सका। फिर जब आचार्यश्री ने प्रार्थना की तो वह रथ चल पड़ा। सभी दर्शक चकित हो गये। मार्ग में जितने भी नगर आये उनके नागरिकों ने श्रीमाधव प्रभु एवं आचार्यचरणों का हार्दिक स्वागत किया। पुनीत दिवस ज्येष्ठ शु० १० (गंगा दशहरा) को बड़े समारोह पूर्वक श्रीसर्वेश्वर प्रभु के सन्निकट श्रीमाधवजी विराजमान हुये।

वि० सं० १८६० के लगभग देश में अराजकता का वातावरण बना मुस्लिम शासन कमजोर हो चुका था, अंग्रेज शनैः-शनैः देश को हथिया रहे थे और कई शक्तिशाली फौजी लूट-

मार कर रहे थे। ऐसी स्थिति में वि० सं० १८६८ में 'श्रीमाधवजी' रूपनगर के किले में पधराये गये। आचार्यपीठ के विशाल मन्दिर को यवन लुटेरों ने ध्वंस कर डाला, तब कुछ दिनों बाद संगमरमर का नया मन्दिर बना। जोधपुर नरेश की ओर से मकराना से संगमरमर पत्थर भेंट रूप में अर्पित हुआ। वि० सं० १८७१ में श्रीमाधवजी रूपनगर से आचार्यपीठ (सलेमाबाद) पधारे उसी समय श्रीकिशोरीजी की प्रतिमा को प्रतिष्ठा कराई गई। तब से श्रीराधामाधवजो अचल रूप से आचार्यपीठ निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) में मध्यभाग में विराजमान हैं। प्रेमी भक्तजन भगवान् श्रीराधामाधव की अद्‌भुत छवि के दर्शन कर तृप्त हो जाते हैं।

आचार्य मन्दिर–

भगवान् श्रीराधामाधव व श्रीसर्वेश्वर प्रभु के बायें उत्तर भाग वाले मन्दिर में श्रीगोकुलचन्द्रमाजी एवं श्रीबांकेविहारीजी के दर्शन हैं और दायें (दक्षिण) भाग में आचार्य मन्दिर है, जहाँ श्रीहँस श्रीसनकादिक, श्रीनारद, श्रीनिम्बार्क और श्रीनिवासाचार्य, इन आचार्य पंचायतन के सुन्दर दर्शन हैं। आचार्य मन्दिर से दक्षिण पूर्व में वेद मन्दिर है जहाँ चारों वेद एक साथ प्रतिष्ठित हैं। उत्तर भाग में अनन्त श्रीविभूषित जगद्‌गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर रसिकराजराजेश्वर श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज के चित्र रूप में अनुपम दर्शन हैं। मन्दिर के बड़े चौक में दोनों ओर क्रमश: श्रीभगवत् पार्षद रूप श्रीहनुमानजी एवं श्रीगरुड़जी के दिव्य स्वरूप सुशोभित हैं, दक्षिण में नीचे उतरने पर 'सिद्धपीठ' के दर्शन हैं। यहाँ आचार्य सिंहासन और श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज के दिव्य चित्रपट एवं हवनकुण्ड के दर्शन हैं। हवनकुण्ड की भस्म, श्रीसर्वेश्वर प्रभु की समर्पित तुलसीदल, श्रीनालाजी का जल, श्रीनिम्बार्कतीर्थ (सर्वेश्वर कुण्ड) की रज, आदि को यहाँ से श्रद्धालु भक्त ले जाते हैं।

समाधि स्थल–

सोलहवीं-सत्रहवीं शताब्दी के अनन्तर जिन-जिन आचार्यों का यहाँ लीला विस्तार हुआ, उनमें श्रीवृन्दावनदेवाचार्यजी महाराज की समाधि पुरानी है। तिजारा एकांतरा आदि ज्वरों से मुक्त होने के लिये जो इस समाधि का आश्रय लेता है, वह अवश्य रोग मुक्त हो जाता है। इन समाधि स्थलों में आचार्यों के चरण कमलों की पूजा होती है। इन समाधियों के पूजन से श्रद्धालु भक्तजनों की कामनायें भी पूर्ण होती थीं और हो भी रही हैं। यहाँ हनुमानजी का मन्दिर एवं शिवालय तथा चारों ओर सुरम्य पुष्प वाटिका भी है।

पुस्तकालय–

आचार्यपीठ में प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थों का भी विशाल संग्रह है। इस पुस्तकालय में श्रीनारद पंचरात्र आदि बहुत से दुर्लभ ग्रन्थ हैं। महाभारत भागवत आदि विशाल ग्रन्थ तक एक पत्र में उल्लिखित हैं। बहुत से ग्रन्थ अस्त-व्यस्त भी हो गये। भूतपूर्व आचार्यश्री की उदारता एवं दयालुता के कारण बहुत से ग्रन्थों को कई एक व्यक्ति उड़ा लेगये।

प्रदक्षिणा

यहाँ आचार्यपीठस्थ श्रीराधामाधव सर्वेश्वर भगवान् की अन्दर मन्दिर में तो प्रदक्षिणा होती ही है, उसके बाहर भी दो प्रदक्षिणा (परिक्रमा और होती हैं, उनमें पहिली केवल मन्दिर मात्र की होती है और दूसरी समस्त नगर (पुरी) की प्रदक्षिणा होती है। ये दोनों बाहिरी परिक्रमा पर्वों पर एकत्रित होने वाली जनता करती है। श्रीगिरीराजजो की परिक्रमा की भाँति यहां की परिक्रमा करने से कई एक भक्तों की कामना भी पूर्ण होती रही हैं। ★

सम्पादकीय

※ स्वान्तः सुखाय सर्वजन हिताय श्रीरामकथा ※

हिन्दी साहित्य सम्राट् गोस्वामी श्री-तुलसीदासजी महाराज ने श्रीरामकथा की अद्भुत महिमा का वर्णन करते हुए बड़े ही सुन्दर शब्दों में लिखा है—

रामकथा जग मंगल करनी ।
मंगल करनी कलिमल हरनी ।।

श्रीरामकथा समस्त विश्व के लिए मंगल कारक है, इतना ही नहीं अपितु कलियुग के समस्त कलि कल्मष को हरण करने वाली भी है ।

इसी श्रीरामकथा के सुप्रसिद्ध कथावाचक विश्व विख्यात महुआ (सौराष्ट्र) गुजरात निवासी 'युगसन्त' श्रीमुरारी बापू हरिव्यासी जिनके द्वारा भारत में ही नहीं अपितु देश-विदेशों में भी यह सुललित रसमय श्रीरामकथा होती है । आप श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय के अनुयायी हैं । श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय की आचार्य परम्परा में ३५ वीं संख्या में श्रीमहावाणीकार रसिकराजराजेश्वर श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज परम प्रतापी आचार्य हुये हैं जिन्होंने देवी तक को वैष्णवी दीक्षा दी है । जिनके लिये भक्तमाल के रचयिता स्वामी श्रीनाभाजी लिखते हैं—

खेचरिनरकी शिष्य निपट अचरज यह आवे ।
विदित बात संसार संत मुख कीरति गावे ।।
बैरागिन के वृन्द रहत संग श्याम सनेही ।
ज्यों जोगेश्वर मध्य मनो शोभित बैदेही ।।
श्रीभट्ट चरणरज परसते सकल सृष्टि जाकी नई ।
हरिव्यास तेज हरि भजन बल देवी को दीक्षा दई ।।

[भक्तमाल छप्पय ७७]

अर्थ—यह बड़े आश्चर्य की बात है कि आकाश में विचरने वाली देवी मनुष्य की शिष्य हुई । किन्तु यह घटना सारे संसार में प्रसिद्ध है और महात्मा लोग श्रीहरिव्यासजी की इस कीर्ति का गान करते हैं । आपके साथ वैराग्य भावना से युक्त श्यामसुन्दर के चरणकमलों के प्रेमी सन्तों के समूह सदा रहते थे । इन सन्तों के बीच श्रीहरिव्यासदेवजी इसी प्रकार सुशोभित होते थे जैसे योगेश्वर याज्ञवल्क्य आदि ज्ञानियों के मध्य में विदेहराज श्रीजनक । अपने गुरुदेव श्रीभट्टजी के चरण स्पर्श करने के कारण आपके समक्ष समस्त संसार शिर झुकाता था । हरि भजन के प्रताप के कारण आपने एक बार देवी को भी दीक्षा प्रदान की थी ।

ऐसे श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज की शिष्य परम्परा में युगसन्त श्रीमुरारी बापू दीक्षित हैं अतः अपने नाम के आगे 'हरिव्यासी' शब्द लगाते हैं । आपकी त्यागवृत्ति, उदार भावना एवं कथा-प्रवचन की सुन्दर शैली ही आपके यश को बढ़ाने में प्रधान कारण है ।

श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज के ही पट्ट शिष्य (उत्तरवर्ती) आचार्य अनन्त श्री-समलंकृत जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्रीमत्परशु-रामदेवाचार्यजी महाराज ने स्वरचित 'श्रीपरशु-रामसागर' के एक दोहे में कहा है—

रामकृष्ण के नाम में, भेदाभेद न कोय ।
पार करन को परशुरा, पोत भये प्रभु दोय ।।

श्रीराम और श्रीकृष्ण के नाम में कोई भेदभाव नहीं है, श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज कहते हैं कि ये दोनों के ही नाम जीवों को भव से पार करने के लिये सुन्दर नौका है ।

उदाहरणार्थ गोस्वामी श्रीतुलसीदासजी तथा श्रीसूरदासजी को ही लीजिये। श्रीतुलसीदासजी महाराज ने रामोपासक होते हुये भी कई पदों में भगवान् श्रीकृष्ण का गुणगान किया है, एवं श्रीसूरदासजी महाराज ने कृष्णोपासक होते हुये अनेक पदों में भगवान् श्रीराम का गुणगान किया है। स्वरूपेण उपासना भले ही पृथक्-पृथक् हो, किन्तु राम हैं सोई कृष्ण हैं और कृष्ण है सोई राम। कीर्तनों में कई ऐसे दोनों के सम्मिलित रूप से भी पदों द्वारा गुणगान मिलता है जैसे—

१—राम कृष्ण उठ कहिये भोर।
२—जग में सुन्दर हैं दो नाम।
चाहे कृष्ण कहो चाहे राम।।
३—जगत में फिर से आवो राम।
बजावो बंशी व्रज में श्याम।।

इत्यादि

श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय के आचार्य श्रीवृन्दावनदेवाचार्यजी महाराज एवं श्री 'श्रीजी' महाराज ने भी अपने-अपने वाणी ग्रन्थों में भगवान् श्रीराम का यथेष्ठ गुणगान किया है। इसी प्रकार वर्तमान श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री 'श्रीजी' श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य जी महाराज ने भी स्वरचित श्रीस्तवरत्नाञ्जलि में भगवान् श्रीराम एवं श्रीहनुमानजी के अष्टक लिखे हैं तथा श्रीमिथिलेशसुताष्टक भी पुस्तक रूप में पृथक् छपवाया है। इसी सरणी के अनुसार युगसन्त श्रीमुरारी बापू भी श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय के होते हुये भी अपने इष्टदेव के साथ-साथ श्रीरामचरित के द्वारा भगवान् श्रीराम श्रीहनुमानजी का कथा में सुललित स्वरों में बड़े ही सुन्दर ढंग से गुणगान करते हुये श्रीराम-कृष्ण की एकता का परिचय देते हैं और समय-समय पर बीच-बीच में दोनों के नाम का ही संकीर्तन कराते रहते हैं।

आपकी जन्मस्थली महुआ के समीप ही एक छोटा सा ग्राम 'तलगाजरडा' है। आपने अपने पितामह श्रीत्रिभुवनदासजी हरिव्यासी जो कि अपने समय के प्रसिद्ध सन्त एवं रामायणी थे। अपने बाल्यकाल में ही आपने उनसे श्रीनिम्बार्कीय वैष्णव पद्धति के अनुसार अथर्ववेदीय श्रीगोपालतापिनी उपनिषदोक्त श्रीमन्त्रराज गोपालमन्त्र की दीक्षा शिक्षा प्राप्त कर ली थी। उनके द्वारा ही नित्य प्रति श्रीरामचरितमानस की पाँच चौपाइयाँ एवं उनका भाव विधिवत् अध्ययन कर तथा उनके द्वारा ही श्रीरामकथा करने का आपको प्रोत्साहन मिला। आपके पिता का नाम श्रीप्रभुदासजी हरिव्यासी एवं माताश्री का नाम श्रीसावित्रीदेवी था। आपकी रामकथा "स्वान्तः सुखाय एवं सर्वजन हिताय" ही होती है। आपकी रामकथा के विशाल पण्डाल में हजारों ही की संख्या में आबाल वृद्ध नर-नारी श्रोताजन बैठकर कथा का रसास्वादन करते हैं। आपका कहना है कि हमारी कथा में बैठकर यदि एक विभीषण श्रीराम की शरण में चला जाय, कोई कुम्भकर्ण अपनी निद्रा त्याग दे, किसी रावण को रामबाण लग जाय तो मैं अपनी कथा को सार्थक समझूंगा।

इस प्रकार आपके परम पवित्र जीवन सम्बन्धी जानकारी हमें हमारे परम सुहृदवर श्रीभक्तिभागीरथी के सह सम्पादक प्रिंसिपल विद्वद्वरेण्य श्रीकृष्णशरणाचार्यजी (विमल) सा. र. एम्. ए. बे. आ. बी. एड. द्वारा लिखित एवं सम्पादित 'युगसन्त' श्रीमुरारी बापू हरिव्यासी नामक ग्रन्थ द्वारा सम्प्राप्त हुई, एतदर्थ हम उनके पूर्ण आभारी हैं कि जिनके ग्रन्थ रत्न से हमें यह जानकारी मिली।

युगसन्त श्रीमुरारी बापू की श्रीरामकथा साधारण कथा नहीं बड़े समारोह पूर्वक होती

है। धार्मिक भावना युक्त बड़े-बड़े धनीमानी भक्तजन इस पारमार्थिक कार्यों में अर्थ संग्रह कर इस आयोजन में अपनी धनराशि का सदुपयोग कर आप भी कथामृत का रसास्वादन करते हैं साथ ही हजारों की संख्या में श्रोता रूप से बैठकर कथामृत पान करते हैं ऐसे जागतिक जीवों के कल्याण होने वाले पारमार्थिक कार्यों में हाथ बटाते है।

इस कथा के प्रवक्ता युगसन्त श्रीमुरारी बापू हरिव्यासी अपने इस नव दिन पर्यन्त चलने वाली श्रीरामकथा के अनुष्ठान नित्य प्रति हवन गंगाजल पान तथा दिन में मौनवृत्ति भगवद्गुण गान समझ कर कथा तो सुनाते हैं, किन्तु अन्य किसी व्यक्ति से बातचीत नहीं करते हैं। कथा के पश्चात् रात्रि में कुछ समय मिलने वाले भक्त जनों का मौन खोलकर बातचीत करने का समय निर्धारित कर देते है। भला ऐसे अनुष्ठानी भगवन्निष्ठ हरिभक्तिपरायण श्रीयुगसन्तजी का श्रोताओं पर भगवद्भक्ति का प्रभाव क्यों न पड़ेगा।

नित्यप्रति पाँच चोपाइयों के क्रम से आपने श्रीरामचरितमानस का श्रीगुरुदेव से अध्ययन किया है। श्रीरामचरितमानस साक्षात् श्रीराघवेन्द्र सरकार का स्वरूप है, अतः श्रीगुरुशरणागति पूर्वक हरिशरणागत होकर श्रीगुरु मुख से श्रीरामकथा का अध्ययन करने वाले हरिभक्तिपरायण वक्ता को पूर्ण सफलता प्राप्त होती ही है इसमें कोई सन्देह नहीं। गुरु कृपा एवं उनके द्वारा शुभाशीर्वाद की बड़ी भारी महिमा है—

जिन पर गुरु प्रसन्न ह्वै जाही।
क्या दुर्लभ तिरलोकी माँही॥

आपने सर्व प्रथम अपने गुरु स्थान में ही ईस्वी सन् १९६० में श्रीरामकथा करके बाद में श्रीगुरु कृपा से सर्वत्र कथा करना प्रारम्भ किया।

युगसन्त श्रीमुरारी बापू गत हरिद्वार कुम्भ पर श्रीसर्वेश्वर प्रभु के दर्शनार्थ श्रीनिम्बार्क नगर में भी पधारे उस समय आचार्यश्री से भी मिले बहुत समय तक परस्पर विचार विमर्श हुआ।

पुनश्च जब आपकी श्रीरामकथा श्रीवृन्दावनधाम में हुई उस समय भी आचार्यश्री ने आपको आमन्त्रित कर बड़ी कुंज में आपके द्वारा स्वरचित एक ग्रन्थ का विमोचन करवाया। आपकी रामकथा के आगे से आगे वर्ष-वर्ष भर से भी अधिक के कार्यक्रम निर्धारित रहते हैं। सलेमाबाद के लिये श्रीरामकथा की चर्चा चलने पर आपका कहना था कि जब भी आचार्यश्री की आज्ञा होगी हम अन्य कार्यक्रमों को आगे--पीछे करके सलेमाबाद में कथा करने को तैय्यार हैं। एक बार किशनगढ़ का भी विचार हुआ, किन्तु वह योग किसी कारण वश नहीं बन पाया। उस समय का लाभ सुजानगढ़ के सेठ साहब ने उठाया। वहाँ के कथा के बचत की अर्थराशि श्रीनिम्बार्क भगवान् की तपःस्थली नीमगांव में नव निर्मित मन्दिर में सेवार्थ भेजी गई। गत अप्रेल में जब सलेमाबाद आचार्यपीठ में कथा होने का योग आया तो उस समय आपकी कथा जोधपुर में हो रही थी। उस समय पीठ की ओर से भक्त प्रवर श्रीराधेश्यामजी ईनाणी, श्रीघनश्यामजी आगीवाल, श्रीओमजी झँवर, श्रीरतनलालजी बाल्दी और मन्दिर से श्रीदानविहारीशरणजी कथा के लिये समय निश्चित करने को जोधपुर पहुँचे। तब आपने वैशाख कृ० एकादसी से वैशाख शुक्ला पचमी तदनुसार २१ अप्रेल से २९ अप्रेल तक ९ दिन की स्वीकृति प्रदान की। तत्पश्चात् श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ में भक्तों की एक वृहद् बैठक हुई और उसमें कथा की व्यवस्था हेतु "श्रीसर्वेश्वर रामकथा समिति' का गठन हुआ। नियमानुसार समिति के अध्यक्ष, मन्त्री, कोषाध्यक्ष आदि का चुनाव होकर कार्यारम्भ हुआ। जिसका विवरण इस अंक में आगे प्रकाशित है।

★★

प्रेरणा-स्त्रोत

[लेखक—म० मं० श्रीमहान्त स्वामी व्रजविहारीशरण 'राजीव', महामन्त्री श्रीनि० सभा]
प्रधान सम्पादक—श्रीभक्तिभागीरथी, अहमदाबाद

भारतीय संस्कृति—

सम्यक् कृति का नाम ही संस्कृति है। जगन्नियन्ता प्रभु श्रीसर्वेश्वर द्वारा निर्मित असंख्य कृतियों में मनुष्य को ही गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ है। भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता में मानव को **"ममैवांशः"** कहकर अपने ही एक अंश के रूप में उसकी प्रशंसा की है। हमारे ऋषि-मुनियों द्वारा सर्जित विचार प्रणाली और तदनुकूल आचार संहिता को भी कालक्रमानुसार संस्कृति में समाविष्ट कर दिया गया। विचारों का विस्तार अनवधि काल मर्यादा में सुरक्षित रखना असम्भव होने से महान् विचारों ने ही सूत्रों का रूप लेकर आत्मसंरक्षण की योजना साध ली। ये विचार सूत्र ही तत्पश्चात् यथोचित प्रतीकों में परिणमित हो गये। आचार-संहिता में निहित उपदेशों की गहनता दूर करने के लिए शास्त्रकारों ने विभिन्न प्रकार के उत्सव-महोत्सवों का सर्जन किया। उत्सव के उमंग में आचार पालन सहज और सरल बन गया। प्रतीकों में बुद्धि का वैभव और उत्सवों में भाव का प्रवाह बहता हुआ दृष्टिगोचर होता है।

अर्वाचीन समय में सारासार के विवेक को खो देने वाला मनुष्य, संस्कृति के तत्त्वों में विहित सत्त्व को समझे बिना ही निरर्थक बातों में दुराग्रही बनकर भटकता हुआ दिखाई देता है। विश्व को चिरंतन मार्ग दर्शन देने वाली संस्कृति का पूर्ण विकास इसी भारत देश में हुआ। भारतीय संस्कृति अर्थात् वेद मान्य संस्कृति। मानव मात्र को उसकी समस्त समस्याओं का समाधान भारतीय सांस्कृतिक विचारधारा से ही मिल सकता है। परन्तु दुःख की बात तो यह है कि अपनी संस्कृति की महानता को न समझ सकने वाला भारतवासी अपने प्रश्न के समाधानार्थ विश्वभर का चक्कर काट रहा है।

शिल्प कृति की प्रशंसा करने में विश्व कितनी ही बार शिल्पी को भूल जाता है, किन्तु उसकी रचना में शिल्पी ने जो अथक परिश्रम किया, उसकी निष्ठा, प्रेम, परिश्रम और हृदय के भाव को शिल्प कृति कैसे भूल सकती है? इस अमृतमयी अमूल्य श्रीरामकथा का समग्र यश तीर्थ स्वरूप **'युगसन्त' श्रीमुरारी बापू को ही है। स्वशक्ति से स्वयं सिद्ध ऐसे महापुरुष कार्यसिद्धि का यश स्वयं न लेकर दूसरे को देने में हमेशा तत्पर रहते हैं। 'युगसन्तजी'** महापुरुषों-सन्तों की परम्परा में अग्रिम स्थान पर हैं। आज इन्हीं युगसन्तजी से जनता जनार्दन को ताजे, सुगन्धित तथा विविधरंगी पुष्प प्राप्त हो रहे हैं। इस पुष्पमाला में एकाध पुष्प, एकाध पंखुड़ी गिरी हुई या खण्डित दिखाई दे, तो यह दोष माला बनाने वाले का ही है। ईश्वर या महापुरुष हमें श्रेष्ठ वस्तु का ही संप्रदान करते हैं, परन्तु हम कितनी ही बार अपनी अल्पता या अधूरेपन को उसमें जोड़ते रहते हैं और इस प्रकार उस श्रेष्ठ-उत्तम और

निरपवाद वस्तु को कनिष्ठ और सापवाद बना देते हैं।

कोई भी उत्सव या महोत्सव एकता के साधक, प्रेम के पोषक, प्रसन्नता के प्रेरक, धर्म के संरक्षक और भावना के संवर्धक होते हैं। उत्सव शब्द 'उद्—सू' धातु से बनता है अर्थात् उत्सव उसे कहते हैं जो 'ऊर्ध्व जन्म' कराता है। किसी भी उत्सव के पीछे भाव का ही महत्त्व है। भाव शून्य अन्तःकरण के द्वारा किया गया उत्सव यन्त्रवत् बन जाता है। उससे मानव में जड़त्व पैदा हो जाता है। भावपूर्ण सारग्राही बुद्धि से जो उत्सव मनाया जाता है वही जीवन में आनन्द का निर्माण करता है। जीवन में निराशा को समाप्त करके नूतन आशा का संचार करता है।

सनातन हिन्दू धर्म—

सनातन हिन्दू धर्म अति प्राचीनतम होने के कारण समय-समय पर इसके रूप में परिवर्तन हुआ है। किन्तु धर्म के मुख्य-तत्त्व वही रहे हैं, जिन्हें श्रुतियों स्मृतियों ने मान्यता प्रदान की है। धर्म का यह स्वरूप किसी भी स्थान विशेष की परिधियों में (सीमाओं में) सीमित नहीं रहा। उसने समस्त पृथ्वी पर रहने वालों के साथ कौटुम्बिक भावना का प्रतिपादन किया। **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** फिर भी सीमित माना जाने लगा। अतः तत्ववेत्ता ऋषि जो **'सर्वभूतहिते रताः'** थे, उन्होंने प्राणीमात्र से स्नेह का नाता जोड़ा था। ईश्वर की उपासना के साथ उनके नित्यकर्मों में **पंच महायज्ञ** का विधान था। **(१) ब्रह्म यज्ञ**—आचार्यों की सेवा करते हुए वेदादि ज्ञान को अर्जन करना। **(२) पितृ यज्ञ**-माता-पिता तथा गुरुजनों का सम्मान तथा उनकी कीर्ति में वृद्धि करना। **(३) अतिथि यज्ञ**—अतिथि सत्कार। **(४) भूत यज्ञ**—भूत-प्राणियों को अन्न-जल से तृप्त करना तथा किसी को कष्ट न देना। **(५) देव यज्ञ**—प्रत्येक घर में रात-दिन हवन-आहुतियों के द्वारा देवताओं को प्रसन्न करना।

जप, तप, साधना, सदाचार के द्वारा नैतिकता पूर्ण जीवन यापन करने पर हिन्दू धर्म सदैव बल देता रहा है। सत्य, सरलता, क्रोध भाव, दान, धैर्य, सहनशीलता, निर्मलता, अहिंसा, इन्द्रिय निग्रह, अपरिग्रह, अचौर्य आदि सद्वृत्तियों को जीवन में उतारने या पालन करने से मनुष्य का उत्कर्ष और उसकी श्रीवृद्धि होती है, इसका भी उपदेश सनातन धर्म में दिया गया है।

मातृभूमि के प्रति प्रेम तथा राष्ट्र निष्ठा आम जीवन का संबल माना गया है। अन्य देश के निवासी अपनी मातृभूमि से प्रेम करते हैं किन्तु भारतवासी 'भारत भूमि' को देवी मानकर उसकी अर्चना करते हैं। उनका कथन है— **"जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी"**। हिन्दू धर्म उन समस्त उदात्त भावनाओं से ओत-प्रोत है, जिसमें अन्य धर्मों के प्रति विरोधी भावना नहीं मिलती।

साधु सन्त—

भारतीय धर्म और संस्कृति में साधु-सन्तों का स्थान प्राचीनकाल से ही महत्वपूर्ण रहा है। वस्तुतः सभ्यता के प्रभात-काल से ही प्रवृत्ति और निवृत्ति इन दो विभागों का प्रचलन उपनिषद् काल में प्रत्यक्ष रूप से दृष्टिगोचर होता है। श्रेय और प्रेय का पर्यायवाची शब्द ही निवृत्ति और प्रवृत्ति है। सांसारिक और पारिवारिक बन्धनों से मुक्त होकर स्वान्तः सुखाय की भावना और जनता जनार्दन की आत्मिक एवं आध्यात्मिक सेवा का लक्ष्य ही साधु-सन्तों का रहा है। ये साधु-सन्त प्राचीन काल के ऋषि-महर्षियों से भिन्न हैं, कारण कि

ऋषियों जैसा पति-पत्नी का सम्बन्ध यहाँ नहीं है।

गुरु सेवा-

गुरु पूजन अर्थात् ध्येय पूजन। गुरु का जीवन ध्येय मूर्ति सदृश होता है, ध्येय का साकार स्वरूप होता है। मानव-जीवन में ध्येय आते ही संयम आता है, संयम से शक्ति संग्रहीत होती है और शक्ति से ही मानव ध्येय के पास पहुँचता है और अन्त में उसका साक्षात्कार कर लेता है।

अज्ञानरूपी अन्धकार का निवारण करके ज्ञान की ज्योति जलाने वाले गुरु और जीवन-विकास की लालसा रखने वाले शिष्य का सम्बन्ध अलौकिक होता है।

अज्ञानतिमिरांधस्य ज्ञानांजनसलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

गुरु के समीप बैठकर **'तद्विद्धि प्रणिपातेन परि प्रश्नेन सेवया'**—इस गीता वचन के अनुसार शिष्य नम्रता, जिज्ञासा और सेवा से गुरु के पास रहने वाले ज्ञानामृत का पान करता है। गुरु यह तो शिष्य के जीवन का **'पेपर वेट'** है, जिसके द्वारा वासना विचारों से शिष्य की जीवन पुस्तिका के पन्ने उड़ते नहीं। गुरु के उपकारों से जिसका हृदय भर गया है, ऐसे किसी कृतज्ञ व्यक्ति ने कहा है—

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

ब्रह्मा की भाँति सद्गुणों के सर्जक, विष्णु की भाँति सद्वृत्ति के पालक और शिव की भाँति दुर्गुणों-दुर्वृत्तियों के संहारक तथा जीव और ब्रह्म का मिलन कराने वाले गुरु साक्षात् परः ब्रह्म के समान हैं। गुरु के समीप पहुँचते ही बुद्धि ग्रहण शील बनती है। उनका सम्पर्क ही ऐसा मधुर होता है कि उनसे अलग होने का मन ही नहीं होता। उनके एक ही स्मित से वर्षों की थकान दूर हो जाती है। उनकी अमिय दृष्टि से मन की मलिनता दूर हो जाती है। यदि सच्चा गुरु न मिले तो **'कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्'**— भगवान् श्रीकृष्ण को गुरु बनाकर उनके द्वारा बताए गये जीवन-मार्ग पर चलना ही श्रेयस्कर है।

तीर्थ-

ईश्वर के धाम को हम तीर्थ कहते हैं। मानव शरीर भी ईश्वर का ही धाम है। अतः इसके समान जीवित तीर्थ और क्या हो सकता है? मनुष्य ईश्वर से एक अंगुल नीचा नहीं है। आज हमने अपने आस-पास के लाखों तार्थों को विस्मृत कर दिया है। आज हम दूसरों के हृदय को दुःख देते समय अचकाते नहीं। परन्तु तीर्थ में दान न देने का दुःख होता है। किसी वस्त्र-हीन को वस्त्र देने की इच्छा नहीं होती, दरिद्र नारायण की सेवा से हम मुख मोड़ लेते हैं। यही कारण है कि हम तीर्थ को तीर्थ के रूप में पहचानते नहीं। मनुष्य में ईश्वर को देखने की लालसा नहीं होती।

यदि हम शरीर और मन पर अत्याचार कर सकते हैं, तो जिन्दगी को तीर्थ क्षेत्र कैसे बना सकते हैं? आज हमने शरीर और मन को कुरुक्षेत्र बना दिया है और कौरव बनकर अनेक महाभारत खेलते रहते हैं।

तीर्थोदक का पान करने में हम पुण्य मानते हैं, किन्तु अपने जीवन-जल का किसी को पान करने की इच्छा हो, तो उसे पवित्र नहीं बना सकते! तीर्थों को जिस प्रकार संकीर्ण कर्मों का केन्द्र बना दिया है उसी प्रकार जीवन-तीर्थ को भी सीमित अर्थ में बदल दिया है।

आचार और विचार की बुद्धि का योग ही तीर्थ है। कल्याण का परम शिखर तीर्थ है। झुक जाने का मन हो, वही तीर्थ है। किन्तु हम तो दंभ की दीवारों के पीछे छिप गये हैं। सत्य का अनुसरण नहीं कर सकते और उसे देख भी नहीं सकते, इससे ज्यादा दुर्भाग्य और क्या होगा ?

शब्दों में जीना सरल है, किन्तु आचार में जीना कठिन है, इसी कारण हम जीवन को तीर्थ नहीं बना पाते। जो स्वयं को जानता है या जानने का यत्न करता है, वस्तुतः वही जीवन को तीर्थ के रूप में देख सकता है। श्री सर्वेश्वर प्रभु के निवास योग्य हृदय आंगन वाला मनुष्य जड़ या चेतन तीर्थ की कभी उपेक्षा नहीं कर सकता। हमारा पावन कर्तव्य है कि अपने आस-पास के जीवित तीर्थों की उपेक्षा न करें।

श्रीराम-

इस जगतरूपी अरण्य में राम भी हैं और रावण भी और श्रीसीताजी भी। किन्तु बहुसंख्यक रावण के सामने अल्पसंख्यक राम हैं। सत्य हमेशा लघुमति में ही होता है। धर्म हमेशा धारण करने वाले के पास होता है। रावणवृत्ति में सरलता से पतित होने वाले ने राम को जगाने का कभी यत्न नहीं किया ! प्रेम और करुणा के बिना सूने हृदय में राम जाग नहीं सकते। राम तो हमारे हृदय में ही हैं, किन्तु हम "परोपदेशे पांडित्यम्' को ही मानते हैं। सीता चाहिए, किन्तु राम बनने की इच्छा नहीं। लक्ष्मणजी की सेवा चाहिए, किन्तु बड़े भाई का धर्म पालन करना नहीं चाहते। रावण का नाश करना है वह भी राम बनकर नहीं, रावण बनकर। कारण कि रावण बनना सरल है।

श्रीराम का मार्ग-

गोस्वामी श्रीतुलसीदासजी ने कहा है कि जिनके ऊपर ईश्वर की कृपा होती है, वही इस मार्ग पर चल सकता है। यह मार्ग राम का मार्ग है, रामायण का मार्ग है।

अति हरि कृपा जाहि पर होई।
पाउँ देहि एहि मारग सोई।।

(उ० १२९-४)

रामायण में कथा आती है—भगवान् श्रीराम चित्रकूट में विराजमान हैं। श्रीभरतजी उनके दर्शन के लिए आते हैं और श्रीराम को पुकारते हैं—

"पाहि नाथ कहि पाहि गोसाईं'

(अयो० २४०-२)

लक्ष्मणजी भरतजी की आवाज को सुनकर श्रीरामजी से कहते हैं कि भरतजी आ रहे हैं। इस शब्द को सुनते ही श्रीराम इतने अधिक प्रेम अधीर हो गए, वे दौड़ पड़े, उन्हें मार्ग ही नहीं सूझ रहा था, उनकी चार वस्तुएँ दौड़ते समय गिर गईं—

'कहुँ पट कहुँ निषंग धनु तीरा।'

(अयो० २४०-८)

धनुष, बाण, निषंग और वल्कल ये चार चीजें गिर गईं। श्रीराम ने भरत का आलिंगन किया। बस, ये चार वस्तुएँ जहाँ गिरीं वही राम का मार्ग है।

धनुष जो स्थूल न हो, किन्तु —

'बर बिग्यान कठिन कोदंडा।'

(लंका ८०-८)

जिसके जीवन में ज्ञान नहीं विज्ञान हो। विज्ञान अर्थात् ज्ञान चरितार्थ होकर आचार में आ गया हो तो, जिसके जीवन में ज्ञान के अनु-

रूप आचार विज्ञान हो, वहाँ समझ लेना चाहिए यही ईश्वर का मार्ग है।

दूसरे हैं बाण—

'सम जम नियम सिलीमुख नाना।'

(लं० ८०-९)

जिसके जीवन में संयम, नियम हो, वही राम का मार्ग है।

वल्कल अर्थात् माया। माया जिसकी गिर गयी हो, जिसे फेंका न गया हो। माया रूपी वस्त्र सहज ही छूट जाय तो समझ लेना चाहिए कि यही ईश्वर का मार्ग है। और चौथा है निषंग-तूणीर।

'अमल अचल मन त्रोन समाना।'

(लंका ८०-९)

व्यक्ति का अचल और अमल मन ही निषंग या तूणीर है। जिसका मन प्रभु की चरण धूलि में आ लोटता हो, जिसके जीवन में संयम हो, ज्ञान जीवन में चरितार्थ हो गया हो, जिसका ईश्वर-प्राप्ति की दौड़ में माया का वस्त्र गिर गया हो, तो समझ लेना चाहिए यही ईश्वर का मार्ग है।

ईश्वर की कृपा होने पर ही इस मार्ग पर चला जा सकता है, अन्यथा नहीं। पुरुषार्थ में भी अनुग्रह आवश्यक है।

रामायण की कथा केवल प्रतीकात्मक कथा नहीं है। रामकथा एक वास्तविकता है। इस राष्ट्र की यह एक अद्भुत घटना है। रामकथा दर्पण के समान है।

लोकपावन श्रीरामकथा

विस्रव्यस्तवामृतकथोदवहास्त्रिलोक्याः पादावनेजसरितः शमलानि हन्तुम्।
आनुश्रवं श्रुतिभिरंघ्रिजमङ्गसङ्गैस्तीर्थद्वयं शुचिषदस्त उपस्पृशन्ति ॥

[भा० ११-६-१९]

देगवरण भगवान् की स्तुति करते हुये कहते हैं कि आपने त्रिलोकी की पापराशि को धो बहाने के लिए दो प्रकार की पवित्र नदियाँ बहा रखी हैं-एक तो आपकी अमृतमयी लीला से भरी हुई कथा नदी और दूसरी आपके पाद प्रक्षालन के जल से भरी श्रीगंगाजी। अतः सत्सङ्ग सेवी विवेकी जन कानों के द्वारा आपकी कथा नदी में और शरीर के द्वारा गङ्गाजी में गोता लगाकर दोनों ही तीर्थों का सेवन कर अपने पाप-ताप मिटा देते हैं।

भगवान् शंकर श्रीपार्वतीजी से कहते हैं—

धन्य धन्य गिरिराज कुमारी। तुम समान नहि कोऊ उपकारी ॥
पूछेउ रघुपति कथा प्रसंगा। सकल लोक जग पावनी गंगा ॥

यह श्रीरामकथा समस्त लोक को पावन करने वाली गंगा है। गंगा तो जितने प्रदेश में प्रवाहित होती है वहाँ ही लोगों को लाभान्वित करती है, पर श्रीरामकथा सम्पूर्ण जगत् को पावन कर रही है।

★★

आपके द्वारा आचार्यपीठ, सलेमाबाद, मदनगंज, श्रीवृन्दावन एवं पुष्कर आदि क्षेत्रों में श्रीसंस्कृत-विद्यालय, छात्रावास, औषधालय, पुस्तकालय, वाचनालय, गोशाला तथा सन्त-सेवा, श्रीसर्वेश्वर मासिक-पत्र, श्रीनिम्बार्क पाक्षिक-पत्र तथा अन्य साहित्य प्रकाशन आदि धार्मिक एवं पारमार्थिक संस्थाओं का सञ्चालन हो रहा है।

विक्रम सम्वत् २०२६ तदनुसार ई० सन् १९७० के फाल्गुन चैत्र मास में आपने लगभग तीन हजार भक्तों के साथ 'श्रीव्रज चौरासी कोसीय पद यात्रा' बड़े समारोह के साथ सम्पन्न की। यह यात्रा श्रीवृन्दावन वंशीवट से प्रारम्भ होकर वहीं आकर पूर्ण हुई। यात्रा करने वाले भक्तों का कहना था कि "न भूतो न भविष्यति" वाली कहावत को चरितार्थ करने वाली ऐसी पद यात्रा हमने तो नहीं देखी। नगर-नगर ग्राम-ग्राम में भक्तों का उत्साह, प्रेम तथा उनके द्वारा कृत स्वागत समारोह, शोभा यात्रा आदि का दृश्य अपूर्व था।

आपने श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ में वि० सं० २०३१ में अ० भा० विराट् सनातन धर्म सम्मेलन किया जो कि बड़ा ही महत्वपूर्ण था। इसका अनुपम वर्णन विस्तृत रूप में प्रकाशित 'श्रीसनातन-धर्म-सम्मेलन-स्मारिका' में द्रष्टव्य है।

इसी प्रकार आपके द्वारा अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ में ही श्रीपुरुषोत्तम मासीय आयोजनों में दो बार श्रीमद्भागवत के अष्टोत्तर शत पाठ पारायण तथा श्रीसुदर्शनमहायाग, गोपालयाग एवं श्रीमुकुन्द महायाग भी बड़े समारोह पूर्वक सम्पन्न हुए हैं।

आपश्री के समय में ही विगत इन ३०-४० वर्षों में अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ में तथा पीठ से संलग्न संस्थाओं में जीर्णोद्धार एवं नव निर्माण का कार्य भी बहुत हुआ है। जैसे श्रीधाम वृन्दावन में श्री श्रीजी महाराज की बड़ी कुञ्ज एवं उससे सम्बन्धित अन्य अनेक कुञ्जों में जीर्णोद्धार एवं नव निर्माण। मथुरा में श्रीपरशुरामद्वारा का जीर्णोद्धार एवं नव निर्माण। भगवान् श्रीनिम्बार्काचार्यजी तपःस्थली निम्बग्राम में प्राचीन संस्थानों का जीर्णोद्धार तथा वहीं पर लाखों की लागत का भव्य विशाल नूतन मन्दिर का नव निर्माण श्रीनिम्बग्राम सेवा मण्डल द्वारा। श्रीपुष्करराज के श्रीपरशुरामद्वारा में जीर्णोद्धार एवं नव निर्माण। झीटिया नामक ग्राम में भी जहाँ भगवान् की जागीर के कृषि कूप हैं वहाँ भी आपश्री के द्वारा नवीन मन्दिर का निर्माण होकर श्रीगोपालजी महाराज की स्थापना हुई। तथा आचार्यपीठ में ही गंगासागर नामक कृषि कूप पर भी उद्यान एवं भवन आदि का निर्माण कराया। इसी प्रकार आचार्य समाधि स्थल पर जीर्णोद्धार एवं उद्यान का निर्माण हुआ।

अजमेर निम्बार्ककोट का नव निर्माण एवं मदनगंज (किशनगढ़) में श्रीराधासर्वेश्वर मन्दिर की स्थापना, प्राचीन स्थान श्रीगोपालद्वारे का जीर्णोद्धार तथा आचार्यपीठ में भी सम्मेलन के समय समस्त मन्दिर का जीर्णोद्धार एवं जहाँ-तहाँ विविध रूपात्मक नव निर्माण, विद्यालय का विशाल भवन, श्रीराधामाधव गोशाला, छात्रावास, पोस्ट आफिस का निर्माण एवं निम्बार्काचार्य राजकीय प्राथमिक विद्यालय का भवन निर्माण कर सरकार को प्रदान करना इत्यादि निर्माण कार्य आपश्री के समय में ही सम्पन्न हुए हैं।

इसी प्रकार आपश्री की ही सत्प्रेरणा से युगसन्त श्रीमुरारी बापू द्वारा श्रीरामकथा का यहाँ यह आयोजन हुआ है जो आज के विभ्रान्त जन को सन्मार्ग दिखाने में सहायक रहा है। ★

श्रीरामकथा के मूल प्रेरक—
अ० भा० जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री "श्रीजी"
श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज

आपका जन्म विक्रम सं० १९८६ वैशाख शुक्ला १ तदनुसार दिनांक १० मई सन् १९२९ में श्रीनिम्बार्कतीर्थ सलेमाबाद निवासी गौड़ विप्र वंश में हुआ था। माता का नाम स्वर्णलता (श्रीसोनी बाई) तथा पिता का नाम श्रीरामनाथ शर्मा गौड़ था। प्राक्तन पुण्य कर्मानुसार किसी भाग्यशाली दम्पति को ही ऐसे महापुरुषों को जन्म देने एवं लालन-पालन का सुयोग प्राप्त होता है। जिसमें महापुरुषों का आविर्भाव होता है, वह कुल परम पवित्र है। आपका बाल्यकालीन नाम रतनलाल था। वि० सं० १९९७ आषाढ़ शुक्ला २ (रथयात्रा) तदनुसार दिनांक ७ जुलाई सन् १९४० में आपने श्रीनिम्बार्काचार्य पीठाधिपति अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु "श्रीजी" श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्यजी महाराज के श्रीचरणकमलाश्रित हो विधिवत् वैष्णवी दीक्षा ग्रहण कर उक्त पीठ में ही युवराज पदेन प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त की। आपके अध्ययनार्थ विरक्त वैष्णव ब्रह्मचारी पण्डित श्रीलाडिलीशरणजी काव्यतीर्थ को नियुक्त किया गया जो कि बड़े श्री 'श्रीजी' महाराज के ही (कृपापात्र) शिष्य थे।

वि० सं० २००० में अपने श्रीगुरुदेव के गोलोकस्थ हो जाने पर ज्येष्ठ शुक्ला २ दिनांक ५ जून सन् १९४३ में आप पीठासीन होकर श्रीवृन्दावनस्थ व्रजविदेही चतुःसम्प्रदाय श्रीमहान्त तर्क--तर्कतीर्थ न्याय वेदान्त भूषण श्रीधनञ्जयदासजी (श्रीकाठिया बाबा) की देखरेख में सुव्यवस्थित रूप से वि० सं० २००९ अर्थात् सन् १९५२ पर्यन्त मन्दिर श्रीदावानलविहारी, दावानल कुण्ड, श्रीवृन्दावन में ही निवास करते हुए न्याय, व्याकरण-वेदान्त आदि का अध्ययन किया। अध्ययन काल के अवसर में १४ वर्ष की आयु में ही आपने कुरुक्षेत्र में होने वाले अ० भा० साधु सम्मेलन में भाग लेकर सर्वसम्मति से अध्यक्षपद को समलंकृत किया।

इस प्रकार १४ वर्ष की अवस्था से ही आपने निज आराध्यदेव श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सेवा एवं परिकर सहित देश के विभिन्न भागों में परिभ्रमण कर तथा "श्रीनिम्बार्काचार्य तीर्थयात्रा स्पेशल ट्रेन" द्वारा तीन धाम सप्तपुरी की यात्रा और प्रयाग, हरिद्वार, नासिक तथा उज्जैन आदि स्थानों में कुम्भ पर्वों पर निर्मित श्रीनिम्बार्कनगर द्वारा अखण्ड हरिनाम संकीर्तनादि विविध धार्मिक आयोजनों एवं अपने दिव्य आदेशों सन्देशों द्वारा भारतीय संस्कृति तथा वैष्णव धर्म की जागृति की है। आपके द्वारा आद्याचार्य प्रणीत प्रातः स्तवराज पर निर्मित 'युग्मतत्वप्रकाशिका' नामक संस्कृत टीका एवं 'स्तवरत्नाञ्जलि' 'युगलगीतिशतक' 'श्रीराधामाधवशतक' 'श्रीनिकुञ्ज सौरभ' 'भारत-भारती-वैभव एवं श्री 'श्रीजी' महाराज के सदुपदेश भी परम उपादेय हैं।

इस प्रकार इस दीर्घकालीन ४० वर्ष के परिभ्रमण में सहस्रों ही की संख्या में धर्म-प्राण जनता ने आपसे शिक्षा-दीक्षा ग्रहण कर आपके दिव्य सदुपदेशों द्वारा अनुपम लाभ प्राप्त किया है।

श्रीरामकथा के प्रेरक एवं संरक्षक—

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य

श्री "श्रीजी"

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज

अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ

निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

ऋषियों जैसा पति-पत्नी का सम्बन्ध यहाँ नहीं है।

गुरु सेवा-

गुरु पूजन अर्थात् ध्येय पूजन। गुरु का जीवन ध्येय मूर्ति सदृश होता है, ध्येय का साकार स्वरूप होता है। मानव-जीवन में ध्येय आते ही संयम आता है, संयम से शक्ति संग्रहीत होती है और शक्ति से ही मानव ध्येय के पास पहुँचता है और अन्त में उसका साक्षात्कार कर लेता है।

अज्ञानरूपी अन्धकार का निवारण करके ज्ञान की ज्योति जलाने वाले गुरु और जीवन-विकास की लालसा रखने वाले शिष्य का सम्बन्ध अलौकिक होता है।

अज्ञानतिमिरांधस्य ज्ञानांजनसलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

गुरु के समीप बैठकर '**तद्विद्धि प्रणिपातेन परि प्रश्नेन सेवया**'—इस गीता वचन के अनुसार शिष्य नम्रता, जिज्ञासा और सेवा से गुरु के पास रहने वाले ज्ञानामृत का पान करता है। गुरु यह तो शिष्य के जीवन का '**पेपर वेट**' है, जिसके द्वारा वासना विचारों से शिष्य की जीवन पुस्तिका के पन्ने उड़ते नहीं। गुरु के उपकारों से जिसका हृदय भर गया है, ऐसे किसी कृतज्ञ व्यक्ति ने कहा है—

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

ब्रह्मा की भाँति सद्गुणों के सर्जक, विष्णु की भाँति सद्वृत्ति के पालक और शिव की भाँति दुर्गुणों-दुर्वृत्तियों के संहारक तथा जीव और ब्रह्म का मिलन कराने वाले गुरु साक्षात् परः ब्रह्म के समान हैं। गुरु के समीप पहुँचते ही बुद्धि ग्रहण शील बनती है। उनका सम्पर्क ही ऐसा मधुर होता है कि उनसे अलग होने का मन ही नहीं होता। उनके एक ही स्मित से वर्षों की थकान दूर हो जाती है। उनकी अमिय दृष्टि से मन की मलिनता दूर हो जाती है। यदि सच्चा गुरु न मिले तो '**कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्**'—भगवान् श्रीकृष्ण को गुरु बनाकर उनके द्वारा बताए गये जीवन-मार्ग पर चलना ही श्रेयस्कर है।

तीर्थ-

ईश्वर के धाम को हम तीर्थ कहते हैं। मानव शरीर भी ईश्वर का ही धाम है। अतः इसके समान जीवित तीर्थ और क्या हो सकता है? मनुष्य ईश्वर से एक अंगुल नीचा नहीं है। आज हमने अपने आस-पास के लाखों तीर्थों को विस्मृत कर दिया है। आज हम दूसरों के हृदय को दुःख देते समय अचकाते नहीं। परन्तु तीर्थ में दान न देने का दुःख होता है। किसी वस्त्र-हीन को वस्त्र देने की इच्छा नहीं होती, दरिद्र नारायण की सेवा से हम मुख मोड़ लेते हैं। यही कारण है कि हम तीर्थ को तीर्थ के रूप में पहचानते नहीं। मनुष्य में ईश्वर को देखने की लालसा नहीं होती।

यदि हम शरीर और मन पर अत्याचार कर सकते हैं, तो जिन्दगी को तीर्थ क्षेत्र कैसे बना सकते हैं? आज हमने शरीर और मन को कुरुक्षेत्र बना दिया है और कौरव बनकर अनेक महाभारत खेलते रहते हैं।

तीर्थोदक का पान करने में हम पुण्य मानते हैं, किन्तु अपने जीवन-जल का किसी को पान करने की इच्छा हो, तो उसे पवित्र नहीं बना सकते! तीर्थों को जिस प्रकार संकीर्ण कर्मों का केन्द्र बना दिया है उसी प्रकार जीवन-तीर्थ को भी सीमित अर्थ में बदल दिया है।

आचार और विचार की बुद्धि का योग ही तीर्थ है। कल्याण का परम शिखर तीर्थ है। झुक जाने का मन हो, वही तीर्थ है। किन्तु हम तो दंभ की दीवारों के पीछे छिप गये हैं। सत्य का अनुसरण नहीं कर सकते और उसे देख भी नहीं सकते, इससे ज्यादा दुर्भाग्य और क्या होगा ?

शब्दों में जीना सरल है, किन्तु आचार में जीना कठिन है, इसी कारण हम जीवन को तीर्थ नहीं बना पाते। जो स्वयं को जानता है या जानने का यत्न करता है, वस्तुतः वही जीवन को तीर्थ के रूप में देख सकता है। श्री सर्वेश्वर प्रभु के निवास योग्य हृदय आंगन वाला मनुष्य जड़ या चेतन तीर्थ की कभी उपेक्षा नहीं कर सकता। हमारा पावन कर्तव्य है कि अपने आस-पास के जीवित तीर्थों की उपेक्षा न करें।

श्रीराम-

इस जगतरूपी अरण्य में राम भी हैं और रावण भी और श्रीसीताजी भी। किन्तु बहुसंख्यक रावण के सामने अल्पसंख्यक राम हैं। सत्य हमेशा लघुमति में ही होता है। धर्म हमेशा धारण करने वाले के पास होता है। रावणवृत्ति में सरलता से पतित होने वाले ने राम को जगाने का कभी यत्न नहीं किया ! प्रेम और करुणा के बिना सूने हृदय में राम जाग नहीं सकते। राम तो हमारे हृदय में ही हैं, किन्तु हम "परोपदेशे पांडित्यम्' को ही मानते हैं। सीता चाहिए, किन्तु राम बनने की इच्छा नहीं। लक्ष्मणजी की सेवा चाहिए, किन्तु बड़े भाई का धर्म पालन करना नहीं चाहते। रावण का नाश करना है वह भी राम बनकर नहीं, रावण बनकर। कारण कि रावण बनना सरल है।

श्रीराम का मार्ग-

गोस्वामी श्रीतुलसीदासजी ने कहा है कि जिनके ऊपर ईश्वर की कृपा होती है, वही इस मार्ग पर चल सकता है। यह मार्ग राम का मार्ग है, रामायण का मार्ग है।

अति हरि कृपा जाहि पर होई।
पाउँ देहि एहि मारग सोई॥
(उ० १२९-४)

रामायण में कथा आती है–भगवान् श्रीराम चित्रकूट में विराजमान हैं। श्रीभरतजी उनके दर्शन के लिए आते हैं और श्रीराम को पुकारते हैं—

"पाहि नाथ कहि पाहि गोसाईं'
(अयो० २४०-२)

लक्ष्मणजी भरतजी की आवाज को सुनकर श्रीरामजी से कहते हैं कि भरतजी आ रहे हैं। इस शब्द को सुनते ही श्रीराम इतने अधिक प्रेम अधीर हो गए, वे दौड़ पड़े, उन्हें मार्ग ही नहीं सूझ रहा था, उनकी चार वस्तुएँ दौड़ते समय गिर गई—

'कहुँ पट कहुँ निषंग धनु तीरा।'
(अयो० २४०-८)

धनुष, बाण, निषंग और वल्कल ये चार चीजें गिर गई। श्रीराम ने भरत का आलिंगन किया। बस, ये चार वस्तुएँ जहाँ गिरीं वही राम का मार्ग है।

धनुष जो स्थूल न हो, किन्तु —

'बर बिग्यान कठिन कोदंडा।'
(लंका ८०-८)

जिसके जीवन में ज्ञान नहीं विज्ञान हो। विज्ञान अर्थात् ज्ञान चरितार्थ होकर आचार में आ गया हो तो, जिसके जीवन में ज्ञान के अनु-

रूप आचार विज्ञान हो, वहाँ समझ लेना चाहिए यही ईश्वर का मार्ग है।

दूसरे हैं बाण—

'सम जम नियम सिलीमुख नाना।'
(लं० ८०-९)

जिसके जीवन में संयम, नियम हो, वही राम का मार्ग है।

वल्कल अर्थात् माया। माया जिसकी गिर गयी हो, जिसे फेंका न गया हो। माया रूपी वस्त्र सहज ही छूट जाय तो समझ लेना चाहिए कि यही ईश्वर का मार्ग है। और चौथा है निषंग-तूणीर।

'अमल अचल मन त्रोन समाना।'
(लंका ८०-९)

व्यक्ति का अचल और अमल मन ही निषंग या तूणीर है। जिसका मन प्रभु की चरण धूलि में आ लोटता हो, जिसके जीवन में संयम हो, ज्ञान जीवन में चरितार्थ हो गया हो, जिसका ईश्वर-प्राप्ति की दौड़ में माया का वस्त्र गिर गया हो, तो समझ लेना चाहिए यही ईश्वर का मार्ग है।

ईश्वर की कृपा होने पर ही इस मार्ग पर चला जा सकता है, अन्यथा नहीं। पुरुषार्थ में भी अनुग्रह आवश्यक है।

रामायण की कथा केवल प्रतीकात्मक कथा नहीं है। रामकथा एक वास्तविकता है। इस राष्ट्र की यह एक अद्भुत घटना है। रामकथा दर्पण के समान है।

लोकपावन श्रीरामकथा

विभ्व्यस्तवामृतकथोदवहास्त्रिलोक्याः पादावनेजसरितः शमलानि हन्तुम्।
आनुश्रवं श्रुतिभिरंघ्रिजमङ्गसङ्गैस्तीर्थद्वयं शुचिषदस्त उपस्पृशन्ति ॥
[भा० ११-६-१९]

देगवण भगवान् की स्तुति करते हुये कहते हैं कि आपने त्रिलोकी की पापराशि को धो बहाने के लिए दो प्रकार की पवित्र नदियाँ बहा रखी हैं-एक तो आपकी अमृतमयी लीला से भरी हुई कथा नदी और दूसरी आपके पाद प्रक्षालन के जल से भरी श्रीगंगाजी। अतः सत्सङ्ग सेवी विवेकी जन कानों के द्वारा आपकी कथा नदी में और शरीर के द्वारा गङ्गाजी में गोता लगाकर दोनों ही तीर्थों का सेवन कर अपने पाप-ताप मिटा देते हैं।

भगवान् शंकर श्रीपार्वतीजी से कहते हैं—

धन्य धन्य गिरिराज कुमारी। तुम समान नहि कोऊ उपकारी॥
पूछेउ रघुपति कथा प्रसंगा। सकल लोक जग पावनी गंगा॥

यह श्रीरामकथा समस्त लोक को पावन करने वाली गंगा है। गंगा तो जितने प्रदेश में प्रवाहित होती है वहां ही लोगों को लाभान्वित करती है, पर श्रीरामकथा सम्पूर्ण जगत् को पावन कर रही है। ★★

आपके द्वारा आचार्यपीठ, सलेमाबाद, मदनगंज, श्रीवृन्दावन एवं पुष्कर आदि क्षेत्रों में श्रीसंस्कृत-विद्यालय, छात्रावास, औषधालय, पुस्तकालय, वाचनालय, गोशाला तथा सन्त-सेवा, श्रीसर्वेश्वर मासिक-पत्र, श्रीनिम्बार्क पाक्षिक-पत्र तथा अन्य साहित्य प्रकाशन आदि धार्मिक एवं पारमार्थिक संस्थाओं का सञ्चालन हो रहा है।

विक्रम सम्वत् २०२६ तदनुसार ई० सन् १९७० के फाल्गुन चैत्र मास में आपने लगभग तीन हजार भक्तों के साथ 'श्रीव्रज चोरासी कोसीय पद यात्रा' बड़े समारोह के साथ सम्पन्न की। यह यात्रा श्रीवृन्दावन वंशीवट से प्रारम्भ होकर वहीं आकर पूर्ण हुई। यात्रा करने वाले भक्तों का कहना था कि "न भूतो न भविष्यति" वाली कहावत को चरितार्थ करने वाली ऐसी पद यात्रा हमने तो नहीं देखी। नगर-नगर ग्राम-ग्राम में भक्तों का उत्साह, प्रेम तथा उनके द्वारा कृत स्वागत समारोह, शोभा यात्रा आदि का दृश्य अपूर्व था।

आपने श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ में वि० सं० २०३१ में अ० भा० विराट् सनातन धर्म सम्मेलन किया जो कि बड़ा ही महत्वपूर्ण था। इसका अनुपम वर्णन विस्तृत रूप में प्रकाशित 'श्रीसनातन-धर्म-सम्मेलन-स्मारिका' में द्रष्टव्य है।

इसी प्रकार आपके द्वारा अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ में ही श्रीपुरुषोत्तम मासीय आयोजनों में दो बार श्रीमद्भागवत के अष्टोत्तर शत पाठ पारायण तथा श्रीसुदर्शनमहायाग, गोपालयाग एवं श्रीमुकुन्द महायाग भी बड़े समारोह पूर्वक सम्पन्न हुए हैं।

आपश्री के समय में ही विगत इन ३०-४० वर्षों में अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ में तथा पीठ से संलग्न संस्थाओं में जीर्णोद्धार एवं नव निर्माण का कार्य भी बहुत हुआ है। जैसे श्रीधाम वृन्दावन में श्री श्रीजी महाराज की बड़ी कुञ्ज एवं उससे सम्बन्धित अन्य अनेक कुञ्जों में जीर्णोद्धार एवं नव निर्माण। मथुरा में श्रीपरशुरामद्वारा का जीर्णोद्धार एवं नव निर्माण। भगवान् श्रीनिम्बार्काचार्यजी तपःस्थली निम्बग्राम में प्राचीन संस्थानों का जीर्णोद्धार तथा वहीं पर लाखों की लागत का भव्य विशाल नूतन मन्दिर का नव निर्माण श्रीनिम्बग्राम सेवा मण्डल द्वारा। श्रीपुष्करराज के श्रीपरशुरामद्वारा में जीर्णोद्धार एवं नव निर्माण। झोटिया नामक ग्राम में भी जहाँ भगवान् की जागीर के कृषि कूप हैं वहाँ भी आपश्री के द्वारा नवीन मन्दिर का निर्माण होकर श्रीगोपालजी महाराज की स्थापना हुई। तथा आचार्यपीठ में ही गंगासागर नामक कृषि कूप पर भी उद्यान एवं भवन आदि का निर्माण कराया। इसी प्रकार आचार्य समाधि स्थल पर जीर्णोद्धार एवं उद्यान का निर्माण हुआ।

अजमेर निम्बार्ककोट का नव निर्माण एवं मदनगंज (किशनगढ़) में श्रीराधासर्वेश्वर मन्दिर की स्थापना, प्राचीन स्थान श्रीगोपालद्वारे का जीर्णोद्धार तथा आचार्यपीठ में भी सम्मेलन के समय समस्त मन्दिर का जीर्णोद्धार एवं जहाँ-तहाँ विविध रूपात्मक नव निर्माण, विद्यालय का विशाल भवन, श्रीराधामाधव गोशाला, छात्रावास, पोस्ट आफिस का निर्माण एवं निम्बार्काचार्य राजकीय प्राथमिक विद्यालय का भवन निर्माण कर सरकार को प्रदान करना इत्यादि निर्माण कार्य आपश्री के समय में ही सम्पन्न हुए हैं।

इसी प्रकार आपश्री की ही सत्प्रेरणा से युगसन्त श्रीमुरारी बापू द्वारा श्रीरामकथा का यहाँ यह आयोजन हुआ है जो आज के विभ्रान्त जन को सन्मार्ग दिखाने में सहायक रहा है। ★

श्रीरामकथा के मूल प्रेरक—
अ० भा० जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री "श्रीजी"
श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज

आपका जन्म विक्रम सं० १९८६ वैशाख शुक्ला १ तदनुसार दिनांक १० मई सन् १९२९ में श्रीनिम्बार्कतीर्थ सलेमाबाद निवासी गौड़ विप्र वंश में हुआ था। माता का नाम स्वर्णलता (श्रीसोनी बाई) तथा पिता का नाम श्रीरामनाथ शर्मा गौड़ था। प्राक्तन पुण्य कर्मानुसार किसी भाग्यशाली दम्पति को ही ऐसे महापुरुषों को जन्म देने एवं लालन-पालन का सुयोग प्राप्त होता है। जिसमें महापुरुषों का आविर्भाव होता है, वह कुल परम पवित्र है। आपका बाल्यकालीन नाम रतनलाल था। वि० सं० १९९७ आषाढ़ शुक्ला २ (रथयात्रा) तदनुसार दिनांक ७ जुलाई सन् १९४० में आपने श्रीनिम्बार्काचार्य पीठाधिपति अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु "श्रीजी" श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्यजी महाराज के श्रीचरणकमलाश्रित हो विधिवत् वैष्णवी दीक्षा ग्रहण कर उक्त पीठ में ही युवराज पदेन प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त की। आपके अध्ययनार्थ विरक्त वैष्णव ब्रह्मचारी पण्डित श्रीलाडिलीशरणजी काव्यतीर्थ को नियुक्त किया गया जो कि बड़े श्री 'श्रीजी' महाराज के ही (कृपापात्र) शिष्य थे।

वि० सं० २००० में अपने श्रीगुरुदेव के गोलोकस्थ हो जाने पर ज्येष्ठ शुक्ला २ दिनांक ५ जून सन् १९४३ में आप पीठासीन होकर श्रीवृन्दावनस्थ व्रजविदेही चतुःसम्प्रदाय श्रीमहान्त तर्क--तर्कतीर्थ न्याय वेदान्त भूषण श्रीधनञ्जयदासजी (श्रीकाठिया बाबा) की देखरेख में सुव्यवस्थित रूप से वि० सं० २००९ अर्थात् सन् १९५२ पर्यन्त मन्दिर श्रीदावानलविहारी, दावानल कुण्ड, श्रीवृन्दावन में ही निवास करते हुए न्याय, व्याकरण-वेदान्त आदि का अध्ययन किया। अध्ययन काल के अवसर में १४ वर्ष की आयु में ही आपने कुरुक्षेत्र में होने वाले अ० भा० साधु सम्मेलन में भाग लेकर सर्वसम्मति से अध्यक्षपद को समलंकृत किया।

इस प्रकार १४ वर्ष की अवस्था से ही आपने निज आराध्यदेव श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सेवा एवं परिकर सहित देश के विभिन्न भागों में परिभ्रमण कर तथा "श्रीनिम्बार्काचार्य तीर्थयात्रा स्पेशल ट्रेन" द्वारा तीन धाम सप्तपुरी की यात्रा और प्रयाग, हरिद्वार, नासिक तथा उज्जैन आदि स्थानों में कुम्भ पर्वों पर निर्मित श्रीनिम्बार्कनगर द्वारा अखण्ड हरिनाम संकीर्तनादि विविध धार्मिक आयोजनों एवं अपने दिव्य आदेशों सन्देशों द्वारा भारतीय संस्कृति तथा वैष्णव धर्म की जागृति की है। आपके द्वारा आद्याचार्य प्रणीत प्रातः स्तवराज पर निर्मित 'युग्मतत्वप्रकाशिका' नामक संस्कृत टीका एवं 'स्तवरत्नाञ्जलि' 'युगलगीतिशतक' 'श्रीराधामाधवशतक' 'श्रीनिकुञ्ज सौरभ' 'भारत-भारती-वैभव एवं श्री 'श्रीजी' महाराज के सदुपदेश भी परम उपादेय हैं।

इस प्रकार इस दीर्घकालीन ४० वर्ष के परिभ्रमण में सहस्रों ही की संख्या में धर्म-प्राण जनता ने आपसे शिक्षा-दीक्षा ग्रहण कर आपके दिव्य सदुपदेशों द्वारा अनुपम लाभ प्राप्त किया है।

श्रीरामकथा के प्रेरक एवं संरक्षक—

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य

श्री "श्रीजी"

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज

अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ

निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

आयोजन की पृष्ठभूमि

[लेखक-पं० श्रीदयाशंकर शास्त्री, सेवानिवृत्त प्राचार्य श्रीसनातन धर्म संस्कृत महाविद्यालय ब्यावर]

किसी भी विशिष्ट कार्य का सम्पादन व मंगलमय उत्सव-महोत्सव का आयोजन अथवा किसी प्रकार के जन कल्याणकारी कार्य का शुभारम्भ किया जाता है उसके मूल में कोई विशेष हेतु होता है, और जब वह हेतु कालान्तर में मूर्त रूप से सबके समक्ष प्रकट होता है तब वह समस्त जनमानस के लिए प्रेरणास्रोत बन जाता है और समाज के अभीष्ट-विकास के लिए मार्गदर्शन कराता है, जिससे आज का विभ्रान्त जन अपने कर्त्तव्य का बोध प्राप्त कर सरलता से अपने मानवोचित लक्ष्य की प्राप्ति में अग्रसर होता है।

अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ निम्बार्कतीर्थ द्वारा समय-समय पर आयोजित होने वाले ऐसे मानव कल्याणकारी विविध विशिष्ट आयोजनों का मूल हेतु हमारे परमाराध्य आचार्य श्रीचरणों का मंगलमय चिन्तन ही है। यों तो आचार्यपीठ में प्रतिवर्ष विविध धार्मिक आयोजन होते ही रहते हैं किन्तु यहाँ पर वि० सं० २०३२ में ऐतिहासिक विराट् सनातन धर्म सम्मेलन होने के पश्चात् कुछ समय से परमपूज्य आचार्यश्री का चिन्तन इस क्षेत्र के जनकल्याण हेतु विराट् धार्मिक आयोजन के सम्बन्ध में तथा साथ ही श्रीनिम्बार्कतीर्थ सरोवर के जीर्णोद्धार हेतु चल रहा था।

वृन्दावन में जब श्रीमुरारी बापू की रामकथा का आयोजन हुआ तब श्रीमुरारी बापू को श्री श्रीजी कुञ्ज में आमन्त्रित करके आचार्य श्री द्वारा सम्मानित किया गया। प्रसंगवश आचार्यश्री द्वारा श्रीमुरारी बापू को कथा का आयोजन किशनगढ़ अथवा आचार्यपीठ में करवाने का भाव व्यक्त किया गया। इस पर श्रीबापू ने हार्दिक प्रसन्नता व्यक्त कर आचार्यश्री की आज्ञा को शिरोधार्य करते हुए कहा कि अति व्यस्त कार्यक्रमों के होते हुए भी श्रीचरणों की जब भी आज्ञा होगी प्राथमिकता देते हुए आचार्यपीठ में रामकथा का निश्चय कर लिया जायेगा। तदनन्तर भक्तप्रवर श्रीरामगोपालजी गाडोदिया द्वारा श्रीरामकथा का आयोजन सुजानगढ़ में करवाया गया वहाँ की भेंट की शेष राशि निम्बग्राम स्थित आद्याचार्य श्री-निम्बार्क भगवान् की तप:स्थली के जीर्णोद्धार हेतु सेवा में समर्पित की गई, क्योंकि वृन्दावन की रामकथा के अवसर पर जब आचार्यश्री के संकेत से श्रीमुरारी बापू का निम्बग्राम तप:स्थली दर्शनार्थ आगमन हुआ तब ही उनका उक्त सेवा का सत्संकल्प हो गया था।

सुजानगढ़ की रामकथा के अनन्तर आचार्यपीठ के प्रति परमनिष्ठावान् भक्तजनों का श्रीरामकथा का आयोजन आचार्यपीठ अथवा किशनगढ़ में कराने के सम्बन्ध में विचार-विमर्श हुआ। आचार्यश्री की आज्ञानुसार श्रीमुरारी बापू से कथा के स्थान एवं समय के निर्णय हेतु आचार्यपीठ की ओर से श्रीदानविहारीशरणजी श्रीरतनलालजी बालदी, श्रीओमप्रकाशजी झंवर, श्रीघनश्यामजी आगीवाल एवं व. श्रीराधेश्यामजी ईनाणी का एक शिष्टमण्डल श्रीबापू के निवास स्थान महुआ (सौराष्ट्र) पहुंचा। किन्तु स्थान का निर्णय नहीं हो पाया। पुनः जोधपुर रामकथा के अवसर पर उक्त शिष्टमण्डल ने जोधपुर पहुँच कर श्रीमुरारी बापू से कथा के स्थान एवं समय के निर्णय हेतु निवेदन किया। श्रीमुरारी बापू द्वारा प्रथम आचार्यपीठ में ही दिनांक २१-४-९० से २९-४-९० तक कथा करने की

सहर्ष स्वीकृति प्रदान की गई। यद्यपि श्रीमुरारी वापू की कथा का निश्चय कराने में ३-४ वर्ष का समय लग जाया करता है किन्तु इतना शीघ्र आचार्यपीठ में कथा की स्वीकृति प्रदान करना श्रीवापू की आचार्यपीठ तथा पूज्य आचार्यश्री के प्रति परम आत्मीयता पूर्ण अगाधनिष्ठा का ही द्योतक है।

कथा की स्वीकृति प्राप्त होने पर आचार्यश्री की आज्ञानुसार दिनांक ४-३-९० को एक सभा का आयोजन पूज्य आचार्यश्री के मार्गदर्शन में हुआ एवं श्रीरामकथा की समस्त व्यवस्थाओं के लिए 'श्रीसर्वेश्वर रामकथा समिति' के गठन के अन्तर्गत सर्वसम्मति से पदाधिकारियों एवं सदस्यों का चयन करके व्यवस्था सम्बन्धी कार्य-भार का वितरण किया गया। समिति के समस्त सदस्यों द्वारा अपने-अपने दायित्व को पूर्ण करने हेतु बड़ी लगन एवं उत्साह के साथ तैयारियाँ प्रारम्भ कर दी गईं। अर्थ समिति के सदस्यों ने अपने महत्वपूर्ण कार्य अर्थ संग्रह की योजना बनाकर कार्य का शुभारम्भ किया। प्रचार-प्रसार और मन्दिर के विभिन्न भागों में नवीन आकर्षक सौन्दर्यकरण हेतु सम्बन्धित आवश्यक कार्य तथा भव्य मुख्य द्वार का निर्माण कार्य प्रारम्भ किया गया।

श्रीवापू के आवास के लिए साभ्रमती नदी के तटवर्ती गंगासागर उद्यान पर कुटीर निर्माण के सम्बन्ध में विचार-विमर्श होकर निर्णय हुआ कि अस्थायी कुटीर के निर्माण में अर्थराशि व्यय न की जाकर ऐसा स्थायी निर्माण करवाया जाय जिससे भविष्य में धर्माचार्यों–विशिष्ट महात्माओं के विश्राम के लिये उसका सदुपयोग होता रहेगा। इस दृष्टि से गंगासागर पर जो आवास का निर्माण करवाया गया वह एक सुन्दर आश्रम का स्वरूप बन गया।

समय-समय पर विभिन्न व्यवस्थाओं के निर्णय हेतु 'श्रीसर्वेश्वर रामकथा समिति' की बैठकें अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री "श्रीजी" महाराज के तत्त्वावधान में होती रहीं।

'रामकथा' के विशाल आयोजन में आने वाले भक्तजनों की भारी संख्या को ध्यान में रखते हुए उनके आवास, भोजन, जल, चिकित्सा प्रकाश एवं सुरक्षा की व्यवस्था हेतु आयोजन के अनुरूप ही सुन्दर, सुव्यस्थित व्यवस्थायें की गईं। आवास के लिए यथा सम्भव अधिकाधिक सुविधा सम्पन्न अनेक प्रकार के भारी संख्या में पट भवन (स्विसको, ई. पी. टेन्ट) एवं बड़ी-छोटी रावटियाँ लाकर कुम्भ के जैसा ही श्री-निम्बार्कनगर का निर्माण करवाया गया। इसी प्रकार सन्त, महन्त एवं विशिष्ट अतिथियों के लिए निम्बार्कतीर्थ सरोवर के चारों ओर अलग से आवास व्यवस्था की गई। आवासीय पट भवनों के निकट एवं मन्दिर परिसर में ही विशाल स्तर पर भोजन की पृथक्-पृथक् (कच्चे एवं पक्के) व्यवस्था की गई जहाँ हजारों श्रोताओं ने प्रतिदिन भोजन की प्रशंसनीय व्यवस्था से लाभ प्राप्त किया।

ग्रीष्म ऋतु होने एवं पूर्व में अकाल की स्थिति के कारण जल की व्यवस्था विशेष चिन्ता का विषय थी किन्तु व्यवस्था समिति की सूझ-बूझ के फलस्वरूप टैंकरों से जल मंगवाकर बड़े हौज में संचित किया जाता रहा और हौज से मोटर द्वारा आवास परिसर में सर्वत्र नलों का जाल बिछाकर पानी पहुचाया जाता रहा। साथ ही गांव के समीपस्थ कूपों से भी मोटर लगवाकर पानी की व्यस्था में किसी प्रकार की कमी नहीं आने दी गई यहाँ तक कि कथा के दिनों में ग्रामवासियों को भी जल की सुविधा प्राप्त करने की व्यवस्था की गई।

प्रकाश की समुचित व्यवस्था ने भी जंगल में मंगल होने की उक्ति को चरितार्थ किया। कोसों दूर से ही निम्बार्कनगर एवं कथा-स्थल पाण्डाल की जगमगाती विद्युच्छटा दर्शनीय थी। विद्युत् व्यवस्था में यह विशेष बात रही कि पूरे नवदिवसीय आयोजन में किसी भी समय विद्युत् की कमी नहीं रही।

आवास एवं मन्दिर परिसर में यात्रियों के लिये चिकित्सा का भी समुचित प्रबन्ध किया गया। इसी प्रकार सुरक्षा की दृष्टि से भी अहर्निश जागरूकता के साथ व्यवस्था रही। उक्त सभी व्यवस्थाओं में सम्बन्धित राजकीय जलदाय, विद्युत्, स्वास्थ्य, आरक्षी (पुलिस) आदि सभी राजकीय विभागों का एवं सम्बन्धित अधिकारियों का प्रशंसनीय सहयोग रहा।

यातायात की सुविधा के लिये किशनगढ़-निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) मार्ग का द्रुतगति से डामर डलवाकर पुर्निर्माण भी सम्बन्धित विभाग द्वारा करवा दिया गया।

समिति द्वारा 'रामकथा' महोत्सव के लिये पत्रक एवं बड़े भित्तिपत्रों एवं समाचार पत्रों आदि द्वारा निकटस्थ ग्राम नगरों से लेकर दूरस्थ प्रान्तों तक प्रचार किया गया।

रामकथा के अवसर पर एक नवदिवसीय रामयज्ञ के आयोजन की भी व्यवस्था की गई जिसमें कथा समय के अतिरिक्त प्रातः ७ बजे से ९ बजे तथा मध्याह्नोतर २ बजे से ४ बजे तक का समय रखा गया। साथ ही रात्रि को स्वामी श्रीशिवदयालजी गिरिराजप्रसादजी वृन्दावन की रासमण्डली को भी आमन्त्रित किया जिसके रामलीलानुकरण का समय रात्रि ९ बजे से ११-३० बजे रखा गया।

यमुना सागर स्थल पर प्रातः ९ बजे से १२ बजे एवं सायं ४ बजे से ७ बजे तक रामकथा का समय निर्धारित किया गया। कथा स्थल पर भव्य मञ्च एवं विशाल पाण्डाल का निर्माण किया गया जिसमें श्रोताओं की सुविधा का ध्यान रखते हुए सुन्दर समुचित बिछायत, सैंकड़ों पंखों की व्यवस्था के साथ-साथ विशेष रूप से रंगीन टेलीविजनों की व्यवस्था की गई जिससे दूर तक बैठे श्रोताओं को भी कथा श्रवण एवं दृश्य का पूर्ण लाभ प्राप्त हो सके। ध्वनि विस्तारकों की भी कथा स्थल से लेकर निम्बार्कतीर्थ सरोवर, मन्दिर परिसर तथा आवास स्थल तक स्पष्ट रूप से सुनने हेतु व्यवस्था की गई।

रामकथा समारोह को सर्वाङ्गीण भव्य स्वरूप प्रदान करने हेतु सभी प्रकार की व्यवस्थाओं के अन्तर्गत मञ्च स्थल के निकट ही एक बाजार की भी व्यवस्था की गई जिसमें विविध प्रकार के धार्मिक साहित्यिक ग्रन्थों एवं अन्य सामग्रियों, पेय पदार्थों आदि की दुकानें भी लगाई गई।

पूज्य आचार्यश्री की प्रेरणानुसार इस नव दिवसीय रामकथा महोत्सव सम्बन्धी प्रतिदिन के कार्यक्रमों, समाचारों एवं आयोजनों की जानकारी हेतु आचार्यपीठ से प्रकाशित होने वाले "श्रीनिम्बार्क" पाक्षिक-पत्र के दैनिक अतिरिक्त प्रकाशनार्थ एक सम्पादक मण्डल का गठन किया गया जिसमें म० म० श्रीव्रजविहारीशरणजी 'राजीव' अहमदाबाद, श्रीदयाशंकरजी शास्त्री ब्यावर, श्रीरामलोचनदासजी बिहार, श्रीसत्यनारायणजी 'पथिक' निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद), श्रीभँवरलालजी उपाध्याय एवं श्रीकमल जोशी पत्रकार की सेवायें प्राप्त की गई। परम पूज्य आचार्यश्री की प्रेरणा से जयपुर से लेकर निम्बार्कतीर्थ तक मार्ग के सभी ग्रामों एवं नगरों की जनता द्वारा श्रीमुरारी बापू के स्वागत हेतु स्वागत द्वार बनाये गये।

इस प्रकार श्रीमुरारी बापू के शुभागमन से पूर्व उपरोक्त सभी प्रकार की, सभी स्तर पर तैयारियाँ पूर्ण करली गई थी। ★

श्रीरामकथा के अमर गायक—

'युगसन्त' श्रीमुरारी बापू 'हरिव्यासी'

[लेखक—श्रीकृष्णशरण आचार्य, प्रिंसिपल, व्या० वे० सा० आचार्य, सा० रत्न, बी० एड्-
सम्पादक—'श्रीभक्तिभागीरथी']

मानव जीवन निरर्थक कार्यों के लिए नहीं है। जीवन विविध रंगी होने पर भी इसका रंग निराला है। जो मानव-जीवन को सार्थक बना सके, वस्तुतः उसी का उद्धार निश्चित है। अर्वाचीन समय में मानव-जीवन में श्रद्धा, विश्वास प्रकट करने वाले अभिनव कथाकार **'युगसन्त' श्रीमुरारी बापू 'हरिव्यासी'** हैं। आपकी कठोर साधना ही आपको विश्वविख्यात कथाकार बना सकी। अपने प्रारम्भिक जीवन में एक शिक्षक का कार्य करते हुए आपने भारतीय नौनिहालों में आदर्श संस्कारों का सिंचन किया। उनकी सुषुप्त शक्तियों को प्रकाश में लाकर आदर्श सेवाभावी नागरिक बनाया। तत्पश्चात् अज्ञान, प्रमाद और आलस्य में डूबे हुए समाज को नवचेतना प्रदान करने के लिए आपने 'श्रीरामचरितमानस' को माध्यम बनाया, जिसकी पुनीत प्रेरणा आपको अपने पू० दादा गो० श्रीत्रिभुवनदासजी हरिव्यासी से प्राप्त हुई।

उस समय प्रजा में व्याप्त "धर्म" के सम्बन्ध में अनेक मतमतान्तर या धारणायें थी। वे कहते थे—हमारे समाज में धर्म के विषय में सच्ची भावना-ज्ञान दिखाई नहीं देता। दो-तीन माला करनी, घी का दीपक जलाना, देव दर्शन करना, कथा-वार्ता सुननी, किसी महात्मा के पधारने पर उनके दर्शन करना, सप्ताह या पारायण हो, तो कथा सुनना। क्या यही धर्म है?

गुरु कृपा से 'युगसन्तजी' को धर्म के बारे में जो सच्चा ज्ञान प्राप्त हुआ, उसकी स्पष्टता करते हुए वे कहते हैं—पारम्परिक प्राप्त सम्बन्धों में, प्रवृत्ति में, कार्यों में और स्वविकास-प्रगति के लिए किसी के प्रति बैर-भावना न हो, राग-द्वेष से दूर रहकर, उत्साह, सद्भावना प्रकट हो। किसी भी उपाय से इस संसार से हमारी तृष्णा, आशा, इच्छा, लोलुपता कम हो, आन्तरिक शक्ति को जाग्रत कर भगवत् स्मरण का सहारा लेकर जो जीवन की उन्नति करता है, वही सच्चा धर्म है।

जीवों के साथ के सम्बन्ध में, बातचीत में, तटस्थता, समता बनाए रखें, प्रपञ्च द्वारा किसी के साथ व्यवहार न करें, अपने स्वार्थ का त्याग करें, किसी के हृदय को आघात न पहुँचायें, किसी का अहित न हो इसका पल-पल ध्यान रहे, वास्तव में यही धर्म है। धर्म यह आचरण की विधि है। युगसन्तजी की धर्म-भावना वेद, उपनिषद् के ऋषियों की धर्म-भावना के समान ही व्यापक है। धर्म यह प्रदर्शन, अनुकरण का साधन नहीं है। इसका सम्बन्ध आचरण से है। **'सत्यं वद', 'धर्मं चर'** सत्य बोलो, धर्म का आचरण करो। इस भारतीय संस्कृति का समस्त मानव जाति के लिए सन्देश है। साथ ही—

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।
तेनत्यक्तेन भुंजीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्॥

विश्व के परम प्रख्यात मानस कथा प्रवक्ता

युगसन्त श्रीमुरारी बापू
महुवा (सौराष्ट्र)
का
श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ में श्रीरामकथा का भव्य आयोजन

युगसन्तजी की विचारधारा में शुष्क ज्ञान और स्वार्थी भक्ति का विरोध दिखाई देता है। प्रभु को प्राप्त करने के लिए अथवा आत्मसाक्षात्कार के लिए संसार त्याग की आवश्यकता नहीं है। संसार में रहते हुए अपने त्याग द्वारा प्राप्त कर्मों को करते हुए कैसी भावना रखनी चाहिए? बारम्बार उत्पन्न होने वाली परिस्थिति में किस प्रकार की समझदारी या विवेक रखना चाहिए? आदि विचारधारायें युगसन्तजी की कथा से सम्बन्धित प्रकाशित अनेक विशद ग्रन्थों में आपके अनमोल विचार संग्रहीत हैं।

इस जगत् में राग-द्वेष से प्रेरित होकर हम व्यवहार करते हैं जो हमें पसन्द नहीं, जिसके प्रति नफरत है—ऐसे प्रसङ्ग तो सतत बनते रहते हैं। इन प्रसङ्गों पर ही हमारी परीक्षा होती है। सांसारिक व्यवहार में अनेक प्रकार के अनुकूल या प्रतिकूल घटनायें घटित होती ही रहती हैं, जिनके द्वारा घृणा, अनिच्छा का वातावरण पैदा हो जाता है। ऐसे विपरीत प्रसङ्गों पर ही हमारी कठिन कसौटी होती है। यदि इस कसौटी में हम खरे उतर गये, तो सन्तोष प्राप्त होगा। यदि क्लेश उत्पन्न हुआ, क्रोध आया और हम घबरा गये, तो समझ लेना कि हमारी साधना अभी अपूर्ण है। किसी भी प्रकार के प्रसङ्ग पर यदि हम हृदय पूर्वक उसे या भक्ति-भावना से स्वीकार कर लेते हैं तो एक अनिर्वचनीय आनन्द और उत्साह की प्राप्ति होती है।

जीवन की तमाम घटनाओं को भगवान् की कृपा या अवकृपा मानकर मनुष्य अनेक प्रकार के भ्रम जाल में फँस जाता है। जीवन को मात्र जीवन के रूप में देखने से ही सन्तोष प्राप्त होता है। इसी में चतुरता है। जीवन अर्थात् परिवर्तन। यह परिवर्तन कभी दुःखकर भी हो सकता है और कभी सुखकर भी। हमारी आयोजना, गणना, सावधानी होने पर भी कहीं न कहीं कुछ अघटित हो ही जाता है। इन आकस्मिक प्रसङ्गों के तमाम परिणाम बुद्धिगम्य नहीं हो सकते। इन परिस्थितियों में हम जितनी तटस्थता अथवा केवल द्रष्टा भाव रख सकें, उतनी ही मानसिक शक्ति प्राप्त कर सकते हैं। कारण कि सुख-दुःख के प्रति मानव का दृष्टिकोण सापेक्ष होता है। किसी की मृत्यु होने पर उसके स्वजन भगवान् की दया का अभाव मानते हैं, किन्तु कफन और अन्त्येष्टि सामग्री व्यापारी की दृष्टि में आमदनी का सुअवसर होता है। अनेक बार एक ही समय एक ही परिस्थिति में घटित घटना दुःखद या सुखद होती है। इसीलिए सन्तों ने कहा है कि ईश्वर को मानना हो तो श्रद्धावान बनो। ईश्वर के दण्ड में भी श्रद्धा और पुरस्कार में भी श्रद्धा रखो। उसे अपना तन-मन सौंप दो। इसके बाद उस घटना के मूल्यांकन की चिन्ता से मुक्त हो जाओगे।

वैसे तो इस जगत् में प्रभु ने सुख का ही सर्जन किया है। मन के ही मानने से सुख या दुःख की अनुभूति होती है। यदि मन को मना सको, समझा सको, आश्वस्त कर सको तो घटनाओं को आघात की दृष्टि से देखने की अपेक्षा उसे धैर्य पूर्वक सहन करने से मानसिक शक्ति प्राप्त होगी। मनुष्य को केवल अपनी ही चिन्ता होती है। इसलिए दुःख भारी लगते हैं। आरामदायक निद्रा के लिए खटमल, मच्छर या अन्य जीव जन्तुओं पर हम दवा का प्रयोग करके उनका नाश कर देते हैं। हमारे बारे में वे क्या विचार करते होंगे? उन मूक जन्तुओं की दृष्टि से मानव ही उनके लिए दुःखदायक है।

सुन्दर उषा के समान काली अन्धेरी रात भी एक वास्तविकता है। यह सृष्टि का सहज-

क्रम है। इसके लिए भगवान् उत्तरदायी नहीं।

'युगसन्तजी श्रीमुरारी बापू अपनी अभिनव वाणी द्वारा कथा के माध्यम से युवा पीढ़ी में एक नवीन चेतना या जागृति लाने का सतत प्रयास कर रहे हैं। आप स्वदेश ही नहीं विदेशों में भी नवजागृति का कार्य कर रहे हैं। आप अनादि वैदिक श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय के हैं, इससे यह सम्प्रदाय भी गरिमा का अनुभव करता है। समय-समय पर इस सम्प्रदाय में भगवत्कृपा से महापुरुषों का प्रादुर्भाव होता रहा है। 'कल्याण' के बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न **श्रीहनुमानजी पोद्दार** भी इसी सम्प्रदाय के थे। जिन्होंने साहित्य सेवा के द्वारा एक महान आदर्श की स्थापना की, जो अवर्णनीय है। उनके द्वारा रचित "श्रीराधा-माधव चिंतन" एक अमूल्य ग्रन्थ है। अनेकानेक लेख भी प्रेरणादायी हैं। युगोंयुगों उनका साहित्य अमर रहेगा। उसी प्रकार **'युगसन्त' श्रीमुरारी बापू हरिव्यासी** का आध्यात्मिक प्रचार-प्रसार यावच्चंद्र दिवाकरौ विश्व के कोने-कोने में अमर रहेगा।

हमारे सम्प्रदाय के वर्तमान **श्रीनिम्बार्काचार्य श्री "श्रीजी" श्रीराधासर्वेश्वरशरण-देवाचार्यजी महाराज** की साहित्य सेवा, विद्या दान सनातन धर्म प्रचार भी चिर:स्मरणीय और वन्दनीय है। श्रीनिम्बार्कवीथीपथिक श्री-नृसिंहपीठ के वर्तमान अध्यक्ष अ० भा० श्री निम्बार्क महासभा के महामन्त्री महामण्डलेश्वर श्रीमहान्त **स्वामी श्रीव्रजविहारीशरणजी 'राजीव'** (प्रधान सम्पादक—श्रीभक्ति भागीरथी) की साम्प्रदायिक साहित्य सेवा, प्रचार-प्रसार और सम्प्रदाय के दुर्लभ ग्रन्थों की खोज तथा सनातन धर्म के रक्षणार्थ की गई सेवायें सराहनीय हैं।

'युगसन्तजी' की धर्म भावना का एक महत्वपूर्ण अंग है मौन। वाणी-संयम न होने पर ही संसार में हम पारावार दुःख की अनुभूति करते हैं। वाणी-संयम या मौन के द्वारा हम अनेक शक्तियों को सन्मार्ग पर ला सकते हैं। वैसे जिह्वा को वश में करना कठिन है। मौन साधना के लिए आपने सौराष्ट्र में आश्रमों की स्थापना की। मौन साधक को अपने स्वरूप दर्शन की विविध अनुभूतियां हुई हैं। मानव जीवन के सर्वोच्च ध्येय को प्राप्त करने के लिए आपने मौन-साधना के अतिरिक्त भगवन्नाम स्मरण पर भी विशेष बल दिया है।

यदि हम निश्चय कर लें तो इस वीरान संसार को वृन्दावन में परिवर्तित कर सकते हैं। संसार यह मरुभूमि नहीं, अपितु साधनामय जीवन जीने के लिए तपोमय भूमि है। संसार में ही रहकर हमें वृन्दावन का अनुभव करना है।

गुजरात की धरा का सद्भाग्य है कि अन्य मनुष्य से अंगुलि ऊँचे 'युगसन्त' श्रीमुरारी बापू जैसे महान् चिन्तक, विश्व विख्यात कथाकार महापुरुष का अवतरण हुआ।

अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ द्वारा सञ्चालित—

पारमार्थिक संस्थायें

१. श्रीसर्वेश्वर मासिक पत्र—

यह पत्र प्रति मास की पहली तारीख को श्री 'श्रीजी' मन्दिर संस्थित श्रीसर्वेश्वर प्रेस से प्रकाशित होता है। वार्षिक शुल्क २५) रु० मात्र। आजीवन सदस्यता के २५१ रु०) है एक बार देने से फिर वार्षिक शुल्क नहीं देना पड़ेगा।

२. श्रीनिम्बार्क पाक्षिक पत्र—

यह पाक्षिक पत्र प्रति मास के दिनांक १ तथा १५ को प्रकाशित होता है, वार्षिक शुल्क १५) रु० मात्र। आजीवन सदस्य शुल्क १५१) रु० एक साथ जमा कराने पर वार्षिक शुल्क नहीं देना पड़ेगा।

३. श्रीनिम्बार्क ग्रन्थमाला—

इस ग्रन्थमाला के अब तक ४५ पुष्प प्रकाशित हो चुके हैं। मंगवाकर सम्प्रदाय सिद्धान्त की जानकारी प्राप्त कीजिये। आप भी अपनी रूचि के अनुसार किसी एक अप्रकाशित पुष्प को प्रकाशित कराने में आर्थिक योगदान देकर साहित्य सेवा में हाथ बंटाइये। प्रकाशित ग्रन्थों का सूचीपत्र मंगाकर लाभ उठाइये।

४. श्रीसर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय—

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अजमेर एवं राजस्थान विश्व विद्यालय जयपुर द्वारा मान्यता प्राप्त उक्त महाविद्यालय में छात्रों को प्रवेशिका, उपाध्याय, शास्त्री तक अध्ययन की सुविधा प्राप्त है। श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय के सज्जनों को यह जानकर परम हर्ष होगा कि बोर्ड एवं विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों में भी मुख्य विषय के रूप में निम्बार्क दर्शन निर्धारित है।

५. श्रीनिम्बार्क दर्शन विद्यालय—

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी द्वारा मध्यमा तक की स्थायी मान्यता प्राप्त उक्त विद्यालय श्रीनिम्बग्राम, जि० मथुरा उत्तरप्रदेश में सञ्चालित है। जहाँ उत्तरप्रदेश, बिहार, मध्यप्रदेश आदि विभिन्न प्रदेशों तथा नेपाल के छात्रों को व्याकरण, साहित्य आदि विषयों के अध्ययन की सुविधा प्राप्त है।

६. श्रीसर्वेश्वर वेद विद्यालय—

भारत सरकार की योजना के अन्तर्गत राजस्थान संस्कृत अकादमी जयपुर के सौजन्य से संस्थापित इस विद्यालय में सस्वर वेदाध्ययन की व्यवस्था है। ६ छात्रों को प्रति मास सौ-सौ रु० छात्रवृत्ति और वेदाध्यापक का पारिश्रमिक छह सौ रुपये की राशि भी सरकार की ओर से ही प्राप्त होती है। इनके आवास, भोजन आदि की व्यवस्था आचार्यपीठ की ओर से है। इसके अतिरिक्त आचार्यपीठ से दी जाने वाली वृत्ति वाले छात्र भी अध्ययन करते हैं। वर्तमान में कुल १२ छात्र वेदाध्ययन करते हैं।

७. श्रीनिम्बार्क वेद विद्यालय—

श्रीनिम्बार्कनिकुञ्ज, निम्बार्कनगर, हीरापुरा–जयपुर में चल रहा है यहाँ पर भी ६ छात्र वेदाध्ययन में रत हैं।

८. श्रीराधासर्वेश्वर छात्रावास—

तीनों विद्यालयों के कुल मिलाकर इस छात्रावास में इस समय ६० छात्र हैं, जिनके आवास, प्रकाश, पुस्तक एवं भोजन-वस्त्रादि

की व्यवस्था पीठ की ओर से ही होरही है। धनीमानी सज्जनों को चाहिये कि इन छात्रों के लिये अन्न या वस्त्र आदि भेजकर इस शिक्षा सम्बन्धी सर्वोत्तम सेवा में सहयोग दें।

९. श्रीराधामाधव गोशाला–

इस गोशाला में इस समय दूध देने वाली तथा न देने वाली कुल मिलाकर ५० गायें हैं। दूध देने वाली गायों का दूध भगवत्सेवादि कार्यों में ही लिया जाता है। बिक्री आदि में नहीं। इस गौशाला में विद्युत् प्रकाश के साथ-साथ पंखे, बांसुरी वादन आदि दुग्धवर्द्धन साधनों की योजना भी है, स्वच्छता आदि पर भी पूर्ण ध्यान दिया जाता है। गोभक्त प्रेमियों को गो-सेवार्थ आर्थिक सहयोग भेजकर गो-सेवा में सहयोग प्रदान करना चाहिये।

१०. श्रीहरिव्यास पारमार्थिक औषधालय–

इस औषधालय द्वारा रोगियों की निःशुल्क चिकित्सा कर औषधि दी जाती है। इसम श्रीकृष्णगोपाल आयुर्वेद भवन कालेड़ा एवं श्रीवैद्यनाथ आयुर्वेद भवन झांसी द्वारा औषधियों का प्रतिवर्ष पूर्ण सहयोग संप्राप्त है।

११. श्रीनिम्बार्क पुस्तकालय–

इस प्राचीन पुस्तकालय में स्मृति, पुराण, इतिहास, व्याकरण, साहित्य, न्याय मीमांसा, एवं वैष्णव वेदान्तादि अनेक हस्तलिखित तथा प्रकाशित सहस्रों ही धार्मिक ग्रन्थों का संग्रह है। इनमें प्राचीन हस्तलिखित कई एक ग्रन्थों के प्रकाशन की भी योजना चल रही है।

१२. श्रीहँस वाचनालय–

इस वाचनालय में संस्कृत तथा हिन्दी के दनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक अर्द्धवार्षिक तथा वार्षिक अनेक पत्र पत्रादिक आते हैं। जिनको पढ़ कर सभी लाभ उठाते हैं।

१३. सन्त–सेवा–

अ. भा. श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) (२) तीर्थगुरु श्रीपुष्कर-राज संस्थित श्रीपरशुरामद्वारा (३) श्री श्रीजी मन्दिर प्रताप बाजार वृन्दावन तथा (४) श्री निम्बग्राम इन चारों संस्थानों में प्रतिदिन सन्त-सेवा होती है।

उपरोक्त इन पारमार्थिक संस्थाओं में आप अपनी इच्छानुसार आर्थिक सेवायें प्रदान कर पुण्य लाभ प्राप्त करें।

श्रीसर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय के सम्बन्ध में

विशेष निवेदन

अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ द्वारा संचालित यह महाविद्यालय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अजमेर एवं राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर से मान्यता प्राप्त है। श्री सर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय को सरकार से किसी प्रकार का अनुदान प्राप्त नहीं है। इसका सम्पूर्ण व्यय भार आचार्यपीठ ही वहन करती है। विद्यालय में अध्ययन करने वाले छात्रों के भोजन, आवास, प्रकाश, पुस्तक आदि की निःशुल्क व्यवस्था है। राजकीय नियमानुसार शिक्षकों का पारिश्रमिक भी संस्था द्वारा ही दिया जाता है। अतः इस अपूर्व विद्यादान में अपनी वार्षिक आर्थिक सेवाएँ प्रदान कर पुण्य के भागी बनें। साथ ही इसकी स्थायी सेवा निधि को पुष्ट करावें।

प्राचार्य
श्रीसर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय सलेमाबाद

श्रीनिम्बार्काचार्य तपःस्थली नीमगांव (गोवर्धन) जि० मथुरा

श्रीसुदर्शन चक्रावतार आद्याचार्य भगवान श्रीनिम्बार्काचायजी की तपःस्थली श्री गिरिराज (गोवर्धन) की उपत्यका (तरहटी) निम्बग्राम (नीमगांव) में विद्यमान है। यह तपःस्थली ५ हजार वर्ष से अधिक अति प्राचीन तपःस्थली है। आप श्रावण मास में झूलनोत्सव या फालगुन मास के फागोत्सव पर अथवा जब कभी मथुरा, वृन्दावन, बरसाना नन्दगांव तथा गोवर्धन की यात्रा करने जायें तो नीमगांव को भी न भूलें। ५ हजार वर्ष से भी अधिक अति प्राचीन इस तपःस्थली में अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य वर्तमान श्री 'श्रीजी' श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज के तत्त्वावधान में अभी लाखों की ही अर्थराशि लगकर एक विशाल मन्दिर का निर्माण हुआ है जो अत्यन्त भव्य एवं परम दर्शनीय है। "श्रीनिम्बार्कराधाकृष्णविहारी" भगवान् के इस मन्दिर में तीन निज मन्दिर हैं। मध्यभाग में प्रियाप्रियतम श्यामाश्याम युगलकिशोर भगवान् श्रीराधाकृष्ण की मनोहर झाँकी, दाहिनी ओर श्रीआचार्य पञ्चायतन तथा बाँई ओर श्रीनिम्बार्क भगवान् के दर्शन हैं।

श्रीगोवर्धन से पश्चिम की ओर गोवर्धन-बरसाना रोड़ पर ५ किलोमीटर की दूरी पर ही निम्बाग्राम स्थित है। रोड़ पर ही इस तपःस्थली का भव्य द्वार बना हुआ है। अन्दर निज मन्दिर के संलग्न ही आशुतोष भगवान् शंकर का मन्दिर है, पास में श्रीसुदर्शन कुण्ड है तथा दोनों के मध्य भाग में वह निम्बवृक्ष है जिस पर भगवान् श्रीनिम्बार्काचार्यजी ने ब्रह्माजी को अपने स्वरूप श्रीसुदर्शन चक्रराज को स्थापित कर सूर्य रूप में दर्शन कराये थे। एक बार पधार कर अवश्य ही दर्शन करें।

श्रीनिम्बार्क भगवान् के जन्मस्थान मुंगी पैठण में भजनाश्रम की स्थापना

जगद्गुरु आद्याचार्य श्रीनिम्बार्क भगवान् के जन्म स्थान मुंगी-पैठण त० शेवगांव जिला-अहमदनगर (महाराष्ट्र) के श्रीकृष्ण दयार्णव मठ में अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी' श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज की सत्प्रेरणा व आदेशानुसार एवं आपके शुभाशीर्वाद से दि० १५-४-९१ ई० को भजनाश्रम का शुभारम्भ किया गया है। प्रो० श्रीसुरेशजी जोशी ने निम्बार्क सम्प्रदाय के भक्तों द्वारा भजनाश्रम प्रारम्भ करने हेतु आर्थिक सहयोग प्रदान करने पर प्रसन्नता व्यक्त की। पैठण के नगराध्यक्ष आमदार श्री अनिल भाई पटेल ने भजनाश्रम का शुभारम्भ करते हुए मंगलकामना की एवं निम्बार्क भगवान् की जन्मस्थली पैठण नगरी की प्रतिष्ठा बढ़ाते हुए धार्मिक कार्य में सहयोग करने का आह्वान किया। नगर के ह० भ० प० प्रफुल्ल बुवा तालेगावकर, इतिहास शोधकर्ता बालासाहब पाटिल, वि० हि० प० के बाबा साहब शहाणे तथा भजनाश्रम की प्रमुख कार्यकर्ता सौ० वनमाला बाई देशमुख ने भी अपने विचार प्रकट किये।

श्रीनिम्बार्क भगवान् के पवित्र जन्म स्थान पैठण में इस भजनाश्रम की स्थापना में भक्तप्रवर श्रीभागीरथजी भराड़िया सैन्धवा की सत्प्रेरणा एवं विशेष सहयोग परम सराहनीय है। प्रतिदिन प्रातः ८ से १० बजे एवं सायंकाल ४ से ६ बजे तक ८ महिलाओं द्वारा भजन किया जा रहा है। इस पुनीत कार्य में आगे सभी के सहयोग की अपेक्षा है। अतः तन-मन-धन से सहकार्य कर हरिनाम का पुण्य सम्पादन करें। ★

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर
श्री 'श्रीजी' महाराज

श्रीगुरुचरण की महिमा को स्वीकारें।

—एक भक्त

श्रीरामकथा प्रवक्ता—"युगसन्त" श्रीमुरारी बापू

श्रीसर्वेश्वर रामकथा समिति द्वारा आयोजन की व्यवस्था हेतु
विभिन्न समितियों का गठन

अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) में अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचाय श्री "श्रीजी" श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज के तत्त्वावधान में श्रीसर्वेश्वर रामकथा समिति की महत्वपूर्ण सभा दि० ४-३-९० रविवार को सम्पन्न हुई। आयोजन को विधिवत् सुसम्पन्न कराने के लिये स्वागत समिति, प्रबन्ध समिति एवं विभिन्न समितियों का गठन निम्न प्रकार किया गया :–

प्रधान संरक्षक—

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्री "श्रीजी" श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज, अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

उपसंरक्षक—

१. महन्त श्रीहरिवल्लभदासजी शास्त्री, किशनगढ़ रेनवाल
२. मेवाड़ मण्डलेश्वर श्रीमहन्त श्रीमुरलीमनोहरशरणजी शास्त्री, उदयपुर
३. अधिकारी श्रीव्रजवल्लभशरणजी वेदान्ताचार्य पञ्चतीर्थ, अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ
४. महन्त श्रीपुरुषोत्तमदासजी, अजमेर

निर्देशक—

महामण्डलेश्वर पं० श्रीव्रजविहीशरणजी 'राजीव' अहमदाबाद

परामर्श मण्डल—

१ श्रीभागीरथजी भराड़िया, सेंधवा
२ ,, रामकरणजी बाहेती, बम्बई
३ ,, घनश्यामजी पोद्दार, जयपुर
४ ,, प्रहलादकुमारजी जिन्दल, अजमेर
५ ,, भैंरूलालजी राठी, मदनगंज
६ ,, दुर्गाप्रसादजी साबू, जोधपुर
७ ,, सुरेशचन्द्रजी केला, नासिक
८ ,, रामगोपालजी पींगलोद वाले, अजमेर
९ ,, रामगोपालजी गाड़ोदिया, सुजानगढ़
१० ,, रामविलासजी मून्दड़ा, इचलकरंजी
११ ,, गजानन्दजी मालपानी, सूरत
१२ ,, शिवानन्दजी शर्मा मैंनेजर निम्बार्कतीर्थ
१३ ,, गोपालकृष्णजी छापरवाल बम्बई

स्वागताध्यक्ष—

श्रीअश्विनीकुमारजी कानोड़िया आदित्य मिल्स लि०, मदनगंज किशनगढ़

उपस्वागताध्यक्ष—

१ श्रीमुकुन्दशरणजी गोयल, जयपुर
२ ,, सुखदेवजी मून्दड़ा, सम्बलपुरवाले, बम्बई
३ ,, रामेश्वरलालजी तोषनीवाल, बम्बई
४ ,, मनोहरलालजी बाहेती, मदनगंज
५ ,, रामनिवासजी राठी, अहमदाबाद
६ ,, शिवप्रसादजी बंसल (सर्राफ), अजमेर
७ ,, जयनारायणजी सोमानी, ब्यावर

श्रीसर्वेश्वर रामकथा समिति

अध्यक्ष—

श्रीभीमकरणजी छापरवाल, इचलकरंजी

कार्यकारी अध्यक्ष—
श्रीरामेश्वरलालजी फतेपुरिया, अजमेर

उपाध्यक्ष—
१ श्रीकल्याणप्रसादजी सूतवाले, जयपुर
२ ,, तेजनारायणजी मानधनिया, मकराना
३ ,, नवलकिशोरजी गार्गीय, ब्यावर
४ ,, चन्दनमलजी राठी, अजमेर
५ ,, द्वारकाप्रसादजी कामदार, ब्यावर

महामन्त्री—
श्रीराधेश्यामजी ईनाणी, मदनगंज

मन्त्री—
१ श्रीशंकरलालजी बंसल, अजमेर
२ ,, कैलाशचन्द्रजी काबरा, मकराना
३ ,, कालीचरणजी खण्डेलवाल, अजमेर
४ ,, रामविश्वासजी गोयल, बवाइचा
५ ,, ब्रजमोहनजी छापरवाल, कुचामन

कोषाध्यक्ष—
१ प्रधान–श्रीदुर्गालालजी अग्रवाल, मदनगंज
२ श्रीरामनिवासजी दरगड़, मदनगंज
३ ,, ओमप्रकाशजी झँवर, मदनगंज
४ ,, रामजसजी बाल्दी, अजमेर

स्वागतसमिति सदस्यगण—
१ श्री एम० के० जैन, मदनगंज
२ ,, सज्जनकुमारजी कानोड़िया, ,,
३ ,, श्यामसुन्दरजी कामदार ,,
४ ,, राधेश्यामजी लोहावाले, जयपुर
५ ,, गंगासहायजी रेला, ,,
६ ,, वल्लभदासजी झालानी, ,,
७ ,, सत्यनारायणजी राठी, सुजानगढ़
८ ,, सीतारामजी मन्त्री, अजमेर
९ ,, उत्तमचन्दजी छाजेड़, मदनगंज
१० ,, गोपालजी सोनी मदनगंज
११ ,, घनश्यामदासजी अग्रवाल ,,
१२ ,, शंकरलालजी अग्रवाल, मदनगंज गोंदवाले
१३ ,, राधेश्यामजी कोठीवाल, मदनगंज
१४ श्रीमदनलालजी मावावाले, जयपुर
१५ ,, नाहरमलजी कोठारी, जोधपुर
१६ ,, अमरचन्दजी लट्ठरिया, सेन्धवा
१७ ,, मोहनलालजी पेड़ीवाल, गंगानगर
१८ ,, रमेशचन्दजी सोनी, अजमेर
१९ ,, बाबूलालजी नवाल, भीलवाड़ा
२० ,, रमेशचन्दजी व्यास, मकराना
२१ ,, नरसिंहदासजी भांगड़िया, इन्दौर
२२ ,, लक्ष्मीनारायणजी राठी, हरदा
२३ ,, मोहनलालजी गोयल, जयपुर
२४ ,, शिवबक्सजी अग्रवाल, रूपनगढ़
२५ ,, ओमप्रकाशजी राठी, बड़ोदा
२६ ,, हंसराजजी मिश्रा, अजमेर
२७ ,, रमेशचन्द्रजी हेडा, अजमेर
२८ ,, नन्दलालजी मून्दड़ा, हरमाड़ा
२९ ,, मूलचन्दजी गोयल, अजमेर
३० ,, मोतीलालजी बाहेती, सूरत
३१ ,, भगवानदासजी हेडा, ब्यावर
३२ ,, सत्यनारायणजी नवाल, इचलकरंजी
३३ ,, जुगलकिशोरजी तोषनीवाल, बीजापुर

सन्त स्वागत समिति—
१ श्रीमहन्त बालकदासजी, फालेन
२ महन्त श्रीवनवारीशरणजी शास्त्री, वृन्दावन
३ म० श्रीदीनबन्धुशरणजी, भीलवाड़ा
४ श्रीनवलबिहारीशरणजी निम्बार्कतीर्थ
५ ,, माधवशरणजी ,,
६ ,, दानबिहारीशरणजी ,,
७ ,, मनोहरदासजी ,,
८ ,, रामसेवकदासजी कोतवाल ,,
९ ,, जमनाशरणजी ,,

अर्थ समिति—
१ श्रीभीमकरणजी छापरवाल, इचलकरंजी
२ ,, रामेश्वरलालजी फतेपुरिया, अजमेर
३ ,, राधेश्यामजी ईनाणी, मदनगंज
४ ,, रतनलालजी बाल्दी, रिड़

५ श्रीभैंरूलालजी राठी, मदनगंज
६ ,, सत्यनारायणजी राठी, इन्दौर
७ , व्रजमोहनजी छापरवाल, कुचामन
८ ,, घनश्यामदास आगीवाल, मदनगंज
९ ,, श्यामसुन्दरजी छापरवाल, अजमेर
१० ,, लालचन्दजी अग्रवाल, मकराना
११ ,, कल्याणमलजी भराड़िया, ब्यावर
१२ ,, श्यामसुन्दरजी कामदार मदनगंज
१३ ,, घनश्यामजी अग्रवाल, ,,
१४ ,, गोपालजी सोनी, ,,
१५ ,, गोपालजी छापरवाल, बम्बई
१६ ,, टीकमचन्दजी तोषनीवाल ,,
१७ ,, नोरतमलजी बाहेती, ,,
१८ ,, लक्ष्मीकान्तजी पोद्दार, ,,
१९ ,, रामप्रसादजी भँवर, सूरत
२० ,, रामगोपालजी चौधरी, अहमदाबाद
२१ ,, हनुमानप्रसादजी मानधनिया, बम्बई
२२ ,, भँवरलालजी ईनाणी, इचलकरंजी

विद्वत्परिषद—

१ श्रीगोविन्ददासजी 'सन्त', अजमेर
२ ,, दयाशंकरजी शास्त्री, अजमेर
३ ,, डा० रामप्रसादजी शर्मा, मदनगंज
४ ,, रामगोपालजी शास्त्री, जयपुर
५ ,, वासुदेवशरणजी उपाध्याय, निम्बार्कतीर्थ
६ ,, सीतारामजी श्रोत्रिय, जयपुर
७ ,, भँवरलालजी उपाध्याय, ब्यावर
८ ,, विश्वामित्रजी व्यास, निम्बार्कतीर्थ
९ ,, परशुरामजी भारद्वाज, ,,
१० ,, हरिनारायणजी शास्त्री ,,
११ ,, सत्यनारायणजी शास्त्री, अजमेर
१२ ,, राधावल्लभजी शास्त्री, कचनारिया
१३ ,, बद्रीप्रसादजी शास्त्री, पपूरणा
१४ ,, चन्द्रदत्तजी पुरोहित, परबतसर
१५ ,, गोकुलचन्दजी भारद्वाज, अजमेर
१६ ,, हरिश्चन्दजी लाटा, निम्बार्कतीर्थ
१७ श्रीमुरलीधरजी शास्त्री, प्रेमसरोवर

मन्दिर सेवा समिति—

१ पुजारी श्रीराधामाधवशरणजी, निम्बार्कतीर्थ
२ श्रीतिलोकचन्दजी मुनड़ी, कलकत्ता
३ ,, रामनिवासजी राठी, इन्दौर
४ ,, बंकटलालजी बंग, धूलिया
५ ,, लक्ष्मीनारायणजी रांदड़, नागपुर
६ ,, बिरदीचन्दजी लाहोटी, भुसावल

पाण्डाल व्यवस्था समिति—

१ श्रीगौरीशंकरजी मून्दड़ा, अजमेर
२ ,, सत्यनारायणजी राठी, सुजानगढ़
३ ,, प्रेमसागरजी शर्मा, मदनगंज
४ ,, ओमप्रकाशजी गोयल, मदनगंज
५ ,, जयनारायणजी अग्रवाल, मदनगंज
६ ,, जितेन्द्रकुमारजी मोदी ,,
७ ,, रमेशचन्द्रजी खण्डेलवाल ,,
८ ,, ओमप्रकाशजी खण्डेलवाल ,,
९ ,, गिरधारीलालजी शर्मा, निम्बार्कतीर्थ
१० ,, ठा० रोगनसिंहजी, लिचाणा

आवास व्यवस्था समिति—

१ श्रीब्रजमोहनजी शर्मा, हाथरसवाले, निम्बग्राम
२ ,, रामस्वरूपजी चौधरी, मदनगंज
३ ,, सुखदेवजी बंसल, ब्यावर
४ ,, सत्यनारायणजी अग्रवाल, जयपुर
५ ,, सत्यनारायणजी गोयल मदनगंज
६ ,, राकेशकुमारजी ईनाणी ,,
७ ,, अनिलकुमारजी लखोटिया ,,
८ , हरिकिशनजी छापरवाल ,,

भोजन-प्रसाद व्यवस्था समिति—

१ श्रीघनश्यामदासजी आगीवाल, मदनगंज
२ ,, चन्दनमलजी राठी, अजमेर
३ ,, चांदकरणजी लखोटिया, मदनगंज
४ ,, मदनलालजी सामाना, अजमेर

५ श्रीगंगारामजी शर्मा, अजमेर
६ ,, शान्तिलालजी नवाल, ब्यावर
७ ,, मिश्रीलालजी भांगड़िया, पनवेल
८ ,, रतनलालजी वेनावत, मदनगंज
९ ,, रामगोपालजी भँवर, सिणगारा
१० ,, छीतरमलजी अग्रवाल मदनगंज
११ ,, केशरीचन्दजी मालू ,,
१२ ,, रामरतनजी न्याती ,,
१३ ,, बंशीलालजी कामदार ,,
१४ ,, बंशीलालजी राठी ,,
१५ ,, सीतारामजी पांड्या हरयाजूण

भोजन वितरण समिति—

१ श्रीभागचन्दजी बाहेती, मदनगंज
२ ,, जयनारायणजी अग्रवाल, बबायचा
३ ,, सुरेशचन्दजी चौधरी मदनगंज
४ ,, विनोदकुमारजी बांगड़ ,,
५ ,, किशनलालजी अग्रवाल ,,
६ ,, मुरलीधरजी अग्रवाल, निम्बार्कतीर्थ
७ ,, अशोककुमारजी खण्डेलवाल, मदनगंज
८ ,, कृष्णगोपालजी राठी, केकड़ी
९ ,, रामदेवजी मन्त्री, पिचोलिया

पाण्डाल प्रसाद वितरण समिति—

१ श्रीगोपालदासजी मून्दड़ा, इन्दोर
२ ,, द्वारकादासजी राठी, इन्दोर

कथा उत्सव समिति—

१ श्रीदिनेशजी हेडा, अजमेर
२ ,, मांगीलालजी राठी, इन्दोर
३ ,, रामनिवासजी लखोटिया, अजमेर

प्रचार-प्रसार समिति—

१ श्रीटीकमचन्दजी तोषनीवाल, मकराना
२ ,, प्रेमसागरजी शर्मा, मदनगंज
३ ,, मणिलालजी गर्ग, अजमेर
४ ,, सत्यनारायणजी पालड़ी वाले, अजमेर
५ ,, महेन्द्रकुमारजी गंगवाल, मदनगंज
६ ,, सत्यनारायणजी पथिक, निम्बार्कतीर्थ

७ श्रीराधेश्यामजी शर्मा, अजमेर
८ ,, जनार्दनजी शर्मा, पुष्कर
९ ,, स्वरूपचन्दजी कोठारी, मदनगंज
१० ,, नीरजजी आय
११ ,, जसवन्तसिंहजी हमू
१२ ,, राजेश्वरजी शर्मा

यातायात समिति—

१ श्रीरामनिवासजी बंग, मदनगंज
२ ,, मदनलालजी मून्दडा, अजमेर
३ ,, रामनिवासजी राठी, परबतसर
४ ,, शुभराती भाई, मदनगंज

विद्युत्-प्रकाश व्यवस्था समिति—

१ श्रीनन्दकिशोरजी गोयल, मदनगंज (संयोजक)
२ ,, दामोदरप्रसादजी व्यास, जयपुर
३ ,, जगदीशप्रसादजी शर्मा, निम्बार्कतीर्थ

जल व्यवस्था समिति—

१ श्रीअमरचन्दजी कासट, आकोला
२ ,, राधेश्यामजी वियाणी, मदनगंज
३ ,, भागचन्दजी दरड़ा, ,,
४ ,, माधवशरणजी निम्बार्कतीर्थ
५ ,, घनश्यामजी शास्त्री ,,
६ ,, हरिश्चन्द्रजी यादव ,,

चिकित्सा समिति—

१ श्री डा० झाला साहब, अजमेर
२ वैद्य श्री श्रीबालमुकुन्दजी शर्मा, निम्बार्कतीर्थ
३ ,, लक्ष्मीनारायणजी शास्त्री ,,
४ ,, छगनलालजी, सिद्धपुर
५ ,, रामेश्वरलालजी, कुचामन
६ डा० श्रीकैलाशचन्दजी शर्मा करकेड़ी
७ डा० श्रीकैलाशचन्दजी माहेश्वरी
८ वैद्य श्रीरामनिवासजी शर्मा, करकेड़ी
९ ,, भँवरलालजी शर्मा, खातोली

शासकीय सहायता समिति—

१ श्रीरासासिंहजी रावत, सांसद-अजमेर
२ ,, जगजीतसिंहजी, विधायक-किशनगढ़

जासु नाम भव भेषज, हरन घोर त्रय सूल ।
सो कृपाल मोहि तो पर, सदा रहउ अनुकूल ॥

गो

हत्या बन्द हो।

—एक भक्त

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ—

तार-MILL Agency

श्रीसर्वेश्वर सेल्स कारपोरेशन

श्रीसर्वेश्वर एजेन्सी

बम्बई, कोल्हापुर, इचलकरंजी, माधवनगर, के मील व
पावरलूम के इन्डेंटींग एजेन्ट

११० एम. टी. क्लोथ मार्केट इन्दौर ४५२००२

श्रीरामकथा विशेषांक के प्रकाशन अवसर पर—

पालीवाल ट्रेडर्स

सूटिंग शर्टिंग फेन्ट, रेग्ज के थोक व्यापारी
एवं कमीशन एजेन्ट

२ विट्ठलेश्वराय मार्केट, एम. टी. क्लोथ मार्केट
इन्दौर ४५२००२ (म. प्र.)

प्रधान कार्यालय—
मे० रामनारायण दीपचन्द पालीवाल
कपड़े के व्यापारी
मु० पो० ब्यावरा (जि०-राजगढ़) म. प्र.

भवदीय चरणांकिकर—
छगनलाल पालीवाल

३ श्रीनाथूरामजी सिणोदिया, प्रधान पं० स० सिलोरा
४ ,, रतनलालजी सोनी, सरपंच-सलेमाबाद
५ ,, कैलाशचन्दजी सेठी, सरपंच-कुचील
६ ,, हरिश्चन्द्रजी शर्मा भू० प्रधान
७ ,, भागचन्दजी जैन, निम्बार्कतीर्थ

भण्डार समिति—
१ श्रीरामनिवासजी दरगड़ मदनगंज
२ ,, कल्याणमलजी अग्रवाल ,,
३ ,, कन्हैयालालजी भँवर ,,
४ ,, घनश्यामदासजी आगीवाल ,,
५ ,, दानविहारीशरणजी, निम्बार्कतीर्थ

व्यास आसन एवं मंच समिति —
महामण्डलेश्वर पं० श्रीव्रजविहारीशरणजी "राजीव" अहमदाबाद

श्रीमुरारी बापू आवास समिति —
१ श्रीनवलकिशोरजी व्यास निम्बार्कतीर्थ
२ ,, माधवशरणजी ,,
३ ,, हनुमानप्रसादजी, अहमदाबाद
४ ,, मुरार भाई ,,
५ ,, सम्पतलालजी तोषनीवाल, मकराना
६ ,, श्यामसुन्दरजी छापरवाल, अजमेर
७ ,, चन्द्रप्रकाशजी शर्मा थानेदार सा.
८ ,, जुगलकिशोरजी बाहेती, मदनगंज
९ ,, मुरारीजी (मथुरावाले) अजमेर
१० ,, पानाचन्द भाई, लीमड़ो

मन्दिर जीर्णोद्धार एवं निर्माण समिति—
१ श्रीराधेश्यामजी ईनाणी, महामन्त्री, मदनगंज
२ ,, हरिप्रसादजी भँवर, मदनगंज
३ ,, लालचन्दजी अग्रवाल, मकराना
४ ,, भागचन्दजी बाहेती, मदनगंज
५ ,, नवलकिशोरजी व्यास, निम्बार्कतीर्थ

सुरक्षा समिति—
१ ठा. श्रीजयसिंहजी, सिगला
२ श्रीसर्वेश्वरसिंहजी, तित्यारी

श्रीआचार्यमहल व्यवस्था समिति—
१ श्रीव्रजमोहनजी छापरवाल, कुचामन
२ ,, नवलकिशोरजी व्यास, निम्बार्कतीर्थ
३ , व्रजमोहनशरणजी शर्मा, नीमगांव

कार्यालय समिति—
१ श्रीरामस्वरूपजी चौधरी, मदनगंज
२ ,, घासीरामजी गौड़ निम्बार्कतीर्थ
३ ,, रामगोपालजी बाल्दी, रिढ़
४ ,, रतनलालजी जाजू, मदनगंज

पत्राचार समिति—
१ श्रीडा० रामप्रसादजी शर्मा, मदनगंज
२ ,, घीसालालजी शर्मा, मदनगंज
३ ,, भँवरलालजी उपाध्याय निम्बार्कतीर्थ
४ ,, गोविन्दप्रसादजी वैष्णव ,,

डाक व दूरसंचार समिति—
१ श्रीसंतोषचन्द्रजी पंवार, ब्यावर
२ ,, जगदीशप्रसादजी राठी, मदनगंज
३ ,, नोरतमलजी वर्मा निम्बार्कतीर्थ
४ ,, रामेश्वरप्रसादजी वैष्णव ,,

सफाई व्यवस्था समिति—
१ श्रीश्रीगोपालजी काबरा, मदनगंज
२ ,, हरिश्चन्द्रजी यादव निम्बार्कतीर्थ
३ ,, हरिनारायणजी सेन ,,
४ ,, नवयुवक मण्डल के सदस्यगण ,,
५ ,, लक्ष्मीनारायणजी डबरिया ,,

दूध व्यवस्था समिति-
१ श्रीरमेशचन्दजी अग्रवाल एडवोकेट, मदनगंज
२ ,, श्रीनारायणजी वैष्णव, मदनगंज
३ ,, सुवालालजी चौधरी, निम्बार्कतीर्थ
४ ,, किशनदासजी ,,

महिला मण्डल-
१ श्रीमती कुसुम चतुर्वेदी, जयपुर
२ सुश्री मुन्नी बाई, अजमेर
३ श्रीमती भगवतीदेवी भँवर, मदनगंज
४ श्रीमती शांतिदेवी खण्डेलवाल, मदनगंज

★★

श्रीरामकथा के सन्दर्भ में पत्रकार सम्मेलन का आयोजन

श्रीरामकथा के मर्मज्ञ श्रीमुरारीबापू द्वारा सम्पन्न होने वाले श्रीरामकथा ज्ञानयज्ञ के शुभारम्भ से पूर्व निम्बार्कतीर्थ में एक पत्रकार सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन में अजमेर वृत्त के करीब १५ पत्रकारों ने कथा-मण्डप, भव्य मंच, सन्त-महात्माओं व विद्वानों के लिये बनवाये गये विविध प्रकार के आवास गृहों व श्रीमुरारीबापू के ठहरने के स्थान यज्ञशाला युक्त आवास भवन, पाकशाला, जल, विद्युत प्रबन्ध, चिकित्सा व सुरक्षा आदि व्यवस्थाओं का निरीक्षण किया और आश्चर्य का अनुभव किया कि इतने अल्प समय में इतनी व्यवस्था एवं तैयारी कैसे सम्भव हुई।

निम्बार्काचार्य पीठाधीश्वर अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्री "श्रीजी" महाराज ने पत्रकारों को सम्बोधित करते हुये कहा कि आज देश का वातावरण बड़ा दूषित हो गया है। युवा पीढ़ी दिग्भ्रान्त है। अनेक कारणों से राष्ट्र का चरित्र दिन प्रतिदिन गिरता जा रहा है। अतः भगवान् श्रीराम के चरित्र द्वारा ही राष्ट्र का चरित्र उन्नत हो सकता है तथा रामराज्य की कल्पना साकार हो सकती है। इसी उद्देश्य से निम्बार्कतीर्थ में रामकथा कथा का आयोजन किया जा रहा है। श्री "श्रीजी" महाराज ने बताया कि इस आयोजन से प्राप्त राशि द्वारा यहां के ऐतिहासिक निम्बार्कतीर्थ सरोवर का जीर्णोद्धार भी एक प्रासंगिक उद्देश्य है।

श्री श्रीजी महाराज ने पत्रकारों को नवनिर्मित भवन 'निम्बार्क भवन' के सम्बन्ध में भ्रम निवारण करते हुये विशेष रूप से बताया कि उक्त भवन भविष्य में आगन्तुक विशिष्ट अतिथि, पूज्य आचार्यगण एवं सन्तों हेतु बनवाया गया है। श्रीमोरारीबापू हेतु की गई आवास व्यवस्था तो मात्र निमित्त है।

नव निर्मित भवन प्रतिष्ठा

ग्राम निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) से एक कि० मी० दूर साभ्रमती नदी के किनारे गङ्गासागर उद्यान के मध्य सुरम्य नवनिर्मित भवन 'निम्बार्कविहार' का प्रतिष्ठा समारोह परम पूज्य अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी'' महाराज के तत्त्वावधान में दि० १८-४-९० को आचार्यपीठस्थ विद्वत् परिषद् के विद्वानों द्वारा अभिजित् मुहुर्त में वैदिक विधि से सानन्द सम्पन्न हुआ।

समारोह में यजमानत्व मदनगंज निवासी श्रीभैरुलालजी राठी रेडियोजी ने सपत्नीक किया। समस्त शास्त्रीय कार्यक्रम अत्यन्त प्रभावी एवं चित्ताकर्षक रहा। उक्त भवन का निर्माण उद्यान में ही अवस्थित नवनिर्मित हनुमानजी के मन्दिर के सन्निकट ही किया गया। समारोह में भगवान् के राजभोग का अनुपम मधुर प्रसाद सन्तों विद्वानों छात्रों एवं कार्यक्रम में उपस्थित महानुभावों को बड़े आनन्दमय वातावरण में प्राप्त हुआ।

श्रीमुरारीबापू के दि० २१-४-९० से २९-४-९० के नव दिवसीय रामकथा ज्ञानयज्ञ के कार्यक्रम हेतु ठहरने, निवास आदि की व्यवस्था इसी भवन में की गई थी।

श्रीरामकथा समिति के अध्यक्ष श्रीभीमकरणजी छापरवाल

(एक परिचय)

आपका जन्म ग्राम रिड़ जिला-नागौर [राजस्थान] में हुआ । शिक्षा के पश्चात् आपने व्यवसाय में कदम रखा । आपकी कर्मभूमि व्यवसाय के रूप में इचलकरंजी (महाराष्ट्र) प्रधान रही है । इसके अतिरिक्त बम्बई, अजमेर तथा किशनगढ़ में भी आपके व्यापारिक संस्थान हैं ।

व्यवसाय, सामाजिक व सांस्कृतिक कार्य, सेवा, दानशीलता आदि क्षेत्रों में आपका अग्रगी एवं गौरव स्थान रहा है । व्यवसाय के क्षेत्र में आप कर्मठ व कार्यशील रहे हैं। इसीलिए आपके व्यवसाय को उत्पादक गुणवत्ता व सफल मूल्य निर्धारण नीति के फलस्वरूप १९८० में स्वर्णपदक से सुशोभित किया गया ।

सामाजिक क्षेत्र में भी आपकी भावना व कार्य रुचिशील रहा है । सामाजिक कार्यों में सबको साथ लेकर चलने के सिद्धान्त को आपने सर्वोपरि माना है । आपने अनेक सामाजिक संस्थाओं, व्यापारिक एसोसियेशनों, शिक्षा संस्थानों के महत्वपूर्ण पदों पर रह अपने दायित्व को निभाया है ।

व्यक्तित्व के विकास में शिक्षा का महत्वपूर्ण सहयोग है, ऐसा आपका मानना है इसी उद्देश्य को साकार रूप देते हुए आपने अपने स्व. पिताजी श्रीबालमुकुन्दजी छापरवाल की पुण्य स्मृति में प्राथमिक पाठशाला का निर्माण अपने ही गांव में करवाया है । आपने अनेक शिक्षा संस्थाओं को तथा विद्यार्थियों को सहयोग, छात्रवृत्तियां आदि प्रदान की है । वर्तमान में इचलकरंजी में आप आधुनिक आवश्यकताओं के मुताबिक शिक्षा जरूरत को पूरा करने के उद्देश्य से एक शिक्षा संस्थान सार्वजनिक रूप से चला रहे हैं, शिक्षा संस्थाओं के व्यवस्थापन समितियों में भी महत्वपूर्ण पदों पर आपने कार्य किया है।

अपना धन अपनी ही आवश्यकता को पूर्ण करने में ही उन्मुख नहीं रहे, परन्तु गरीबों की पीड़ा दूर करने में, आध्यात्मिक व सामाजिक कार्यों में खर्च हो, इस उद्देश्य से दानशीलता आपके जीवन का एक गुण है । आपने स्वेच्छा से अनेक जगह सहयोग प्रदान किया है । यह कार्य व्यवस्थित रूप से चले इस उद्देश्य से श्रीबालमुकुन्द छापरवाल चेरीटेबल ट्रस्ट की आपने स्थापना की है ।

अनेक धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के भी आप संयोजक रहे हैं ।

वर्तमान में निम्न संस्थाओं में कार्यरत हैं —

१. श्रीमहेश सेवा समिति, इचलकरंजी अध्यक्ष]
२. श्रीव्यंकटेश्वर एज्यूकेशन सोसायटी, इचलकरंजी [अध्यक्ष]
३. श्रीनारायणराव बाबासाहेब एज्यूकेशन । व्यंकटेश कालेज, गोविन्दराव हाई स्कूल, गंगाभाई गर्ल्स हाई स्कूल की व्यवस्थापन समिति में संचालक
४. यशवंत को-ऑप प्रोसेस [संचालक]
५. गीता मन्दिर ट्रस्ट कोल्हापुर [ट्रस्टी]

पुरुषार्थ एवं भाग्य ही जीवन को सच्चा जीवन बना देता है, यह आपके व्यक्तित्व ने चरितार्थ किया है ।

श्रीरामकथा महायज्ञ के अवसर पर—

उपलब्ध सुविधाएँ

आवास व्यवस्था—

श्रीराधामाधव मन्दिर के निकट ही स्थानीय राजकीय माध्यमिक विद्यालय प्रांगण कक्ष एवं निकट की कृषि भूमि को समतल बनाकर टेंट आदि की व्यवस्था की गई थी। टेंट की न्योछावर राशि स्विसकोटेज ५००)रु०, ई० पी० टेंट २५०) रु०, बड़ी रावटी १००)रु छोटी रावटी ७५) रु० रखी गई थी।

आदरणीय साधु सन्त महन्तों के ठहरने की व्यवस्था अलग से निम्बार्कतीर्थ सरोवर के चारों ओर टेंट, रावटी लगाकर तथा सरोवर के किनारे बने महल भवन में एवं वि शष्ट जनों हेतु श्रीराधामाधव मन्दिर परिसर में नवनिर्मित कक्षों में की गयी।

राजकीय विभाग विद्युत्, जल एवं स्वास्थ्य विभाग हेतु व्यवस्था परम पूज्य आचार्यश्री की अनुकम्पा से पूर्व निर्मित राजकीय प्राथमिक विद्यालय के कक्ष व प्रांगण में तथा प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र में टेंट लगाकर की गई थी।

इसके अतिरिक्त 'रामकथा महायज्ञ के व्यापक प्रचार को देखते हुये ग्रामवासियों ने भी अपने स्नेही सम्बन्धियों हेतु अपने-अपने घरों में व्यवस्था की हुई थी।

भोजन सम्बन्धी सुविधा—

समिति की ओर से निम्बार्क-नगर में कूपन प्रणाली द्वारा अन्य प्रसाद सामग्री (देशी घी से निर्मित) के वितरण की व्यवस्था की गई थी। निम्बार्क-नगर के प्रांगण में विशेष भोजनालय व्यवस्था थी। कार्यकर्त्तागण एवं अन्य भक्त एवं सन्तजनों हेतु मन्दिर में प्रसाद प्राप्ति की व्यवस्था थी।

सूचना केन्द्र—

सभी प्रकार की जानकारी एवं सूचना हेतु "सूचना केन्द्र' पूछ-ताछ कार्यालय मन्दिर के सन्निकट धर्मशाला भवन में थी।

इसके अलावा मन्दिर में केन्द्रीय कार्यालय स्थापित किया गया था। सभी सूचनाओं एवं गतिविधियों की जानकारी हेतु निम्बार्क-नगर, आवास स्थलों एवं यमुनासागर स्थित पाण्डाल तक ध्वनि प्रसार व्यवस्था की गई थी।

जल व्यवस्था—

जल व्यवस्था हेतु साभ्रमती नदी के उस पार के कुये एवं निकटस्थ ग्राम तित्यारी के कुओं से विद्युत् मोटरें लगाकर निम्बार्क-नगर एवं पाण्डाल स्थल तक पाईप लाइन बिछाकर एवं टंकिया बनाकर जल संचय हेतु व्यवस्था की गई जिससे चौबीस घन्टे जल उपलब्ध रहे। इसके अलावा गंगासागर एवं निम्बार्कतीर्थ सरोवर के किनारे बोरिंग करवाकर ट्यूबवेल की व्यवस्था अलग से की गई। स्थान स्थान पर नल लगाये गये तथा विभिन्न स्थानों पर १६ प्याऊएँ लगाई गई थी।

यातायात सुविधा—

बस स्थल से अजमेर रूपनगढ़ व करकेड़ी, मदनगंज हेतु कार्यक्रम के निमित्त नित्य आने-जाने वाली बसों के अलावा विशेष बसों की व्यवस्था की गई। कार्यक्रम में नित्य प्रति आने-जाने वाले भक्तजनों हेतु ग्राम के तीनों ओर साइकिल, स्कूटर स्टेण्ड, एवं कार पार्किङ्ग की व्यवस्था अलग से की गई थी।

चिकित्सा सुविधा—

निम्बार्कनगर में तात्कालिक चिकित्सा सुविधा हेतु आचार्यपीठ द्वारा संचालित श्रीहरि-

अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ
के प्रवेश द्वार का
मनोरम दृश्य

युगसन्त श्रीमुरारी बापू का शुभागमन

श्रीमुरारीबापू के दि० २० अप्रेल को रात्रि अहमदाबाद से वायुयान द्वारा सांगानेर हवाई अड्डा पर पहुँचने पर श्रीरामकथा समिति के स्वागताध्यक्ष श्रीअश्विनीकुमारजी कानोड़िया आदित्य मिल्स किशनगढ़ एवं समिति के अध्यक्ष इचलकरंजी के प्रसिद्ध कपड़ा व्यवसायी श्रीभीमकरणजी छापरवाल सहित समिति के अनेक पदाधिकारी तथा अन्य भक्तों ने माल्यार्पण कर हार्दिक स्वागत किया। रात्रि विश्राम जयपुर में करने के पश्चात् दि० २१ अप्रेल को प्रात:काल आपका निम्बार्कतीर्थ हेतु जयपुर से कार द्वारा प्रस्थान हुआ।

जयपुर से निम्बार्कतीर्थ तक के मार्ग में सोढाला, निम्बार्कनगर हीरापुरा, भांकरोटा, बगरू, महलां, गिदानी, दूदू, दांतरी, बांदरसीन्दरी, पाटन, मदनगंज चौकी चुंगी नाका-जयपुर गोल्डन, चौराहा पेट्रोल पम्प, हनुमानजी की बगीची, रूपनगढ़ रोड़ काली डूंगरी, खातोली, नाकावाले बालाजी, तिलयारी आदि स्थानों पर स्थान-स्थान पर स्वागत द्वार बनाकर माल्यार्पण एवं पुष्प वर्षा कर श्रीमुरारी बापू का भव्य स्वागत किया गया।

निम्बार्कतीर्थ स्वागतद्वार में प्रवेश करते ही बस स्टेण्ड से लेकर मन्दिर के सिंहद्वार तक प्रतीक्षारत खड़े ग्रामवासी, बाहर से आये हजारों भक्तजन, श्रीसर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय, वेदविद्यालय के छात्रगण आचार्य, विद्वद्गण एवं सन्तों ने श्रीमुरारीबापू का माल्यार्पण एवं पुष्प-वृष्टि कर भव्य स्वागत किया।

श्रीमुरारीबापू ने सर्व प्रथम मन्दिर में भगवान् श्रीराधामाधवजी के दर्शन किये, तत्पश्चात् अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री "श्रीजी" महाराज के दर्शन करके आवास स्थल पर पधारे।

व्यास पारमार्थिक औषधालय एवं स्थानीय राजकीय आयुर्वेदिक औषधालय की सेवायें तो उपलब्ध थी ही, विशेष स्थिति में गहन चिकित्सकों की व्यवस्था हेतु चिकित्सा विभाग के सहयोग से एम्बूलेंस आदि की व्यवस्था भी की गई थी। ★

भव्य शोभायात्रा

दि० २१ अप्रेल को अपराह्न ३ बजे श्रीराधामाधव मन्दिर से शोभायात्रा का शुभारम्भ हुआ। शोभायात्रा में श्रीमुरारीबापू खुली जीप में श्रीरामायणजी लिये हुये विराजमान थे। साथ में विद्वत्समुदाय महात्मागण चल रहे थे। शोभायात्रा में सबसे आगे ध्वज, ढ़ोल, बांकिया नगारा शहनाई बैण्डबाजों के साथ मङ्गल कलश लिये हुये ५१ महिलायें, आगे पताकायें लिये हुये श्रीसर्वेश्वर संस्कृत-महाविद्यालय एवं राजकीय माध्यमिक विद्यालय के छात्रगण साथ में हजारों की संख्या में भक्तजन एवं महिलायें संकीर्तन करते हुये चल रहे थे।

यह विशाल शोभायात्रा जब यमुनासागर के प्रवचन स्थल में निर्मित विशाल पाण्डाल में मन्च पर पहुँची तो पूरा पाण्डाल "श्रीसर्वेश्वर भगवान् की जय, श्रीरामचन्द्र भगवान् की जय, श्री "श्रीजी" महाराज की जय, श्रीमुरारीबापू की जय" के उद्घोष से गूंज उठा। इस शोभायात्रा में राजस्थान विधान सभा के अध्यक्ष श्रीहरिशंकरजी भाभड़ा एवं राज्य ऊर्जा एवं शिक्षामन्त्री श्रीमती सुमित्रासिंह भी उपस्थित थे। ★★

* श्रीमुरारी बापू के स्वागत में *

भाव पुष्पाञ्जलि

[रचयिता – श्रीरामलोचनप्रसादजी, बिहार]

स्वागत युगसन्त मुरारी का। मानस के प्रेम-पुजारी का।।

पावन सौराष्ट्र के महुआ में, है जन्म आपका लोक विदित।
जीवन का पल-पल राम कथा में, लगा लोक-कल्याण निमित।।
स्वागत मानस अधिकारी का...... स्वागत युगसन्त......

गंगा है तेरे प्राणों में, धारण तुलसी का कंठ करें।
तुलसीदल सदा प्रसादों में, रघुवर का नितदिन ध्यान करें।।
स्वागत उस रसिक-विहारी का ...... स्वागत युगसन्त......

है कथा राम की गाने में, सर्वस्व आपने लुटा दिया।
रस-सुधा सदा सरसाने में, जीवन का क्षण-क्षण बिता दिया।।
स्वागत है उस व्रतधारी का... स्वागत युगसन्त ... मानस के...

रघुनाथ कथा रसधारा में, श्रोता अनवरत निखरते हैं।
रोचक नव ललित प्रसंगों में, उनके भ्रमजाल बिखरते हैं।।
स्वागत है उस मनहारी का...... स्वागत............

स्वागत प्रसूनभ्या हाथों में माला है केवल हृदय-कमल।
कृतार्थ करो लघु भेटों में, बापू उदार हो सदा विमल।।
स्वागत है भवदुखहारी का...... स्वागत............

तुलसी ने रामचरित मानस में अमृत स्रो बहाया।
उस प्रवाह में जन-जन को, तुमने पूरा नहलाया।।
स्वागत है रसविस्तारी का...... स्वागत............

है शास्त्र प्रमाणित रामकथा में, जीवन का सुखसार भरा।
कीर्तन-गायन के शब्दों में, कलिकाल सहज हो मोक्ष धरा।।
स्वागत मानव हितकारी का...... स्वागत............

है अनुपमता तेरे जादू में, युगपुरुष नाम श्रेयष्कर है।
तेरे सत्संग की महिमा में, हो बोध विश्व यह नश्वर है।।
स्वागत है तत्व-विचारी का...... स्वागत............

है सन्त-महन्त के चरणों में, लोचन की निसदिन लगी आस।
सर्वेश्वर, रघुवर कथा श्रवण में, कट जाये भव मोहपास।।
स्वागत ऐसे बलिहारी का... स्वागत युगसन्त... मानस के....

श्रीरामकथा महायज्ञ महोत्सव

का

❋ शुभारम्भ ❋

वैशाख कृष्ण एकादशी वि० सं० २०४७ शनिवार दिनांक २१ अप्रेल १९९० ई० को अपराह्न शोभायात्रा के यमुनासागर स्थित पण्डाल पर पहुँचते ही 'भगवान् श्रीराम की जय, श्रीसर्वेश्वर भगवान् की जय, युगसन्त श्रीमुरारी बापू की जय, श्री 'श्रीजी' महाराज की जय' से गगन गूञ्ज उठा। सहस्रों भक्त-जनों को इस जय जयकार के मध्य श्रीरामकथा के प्रवक्ता श्रीमुरारी बापू एवं जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी' श्रीराधासर्वेश्वर-शरणदेवाचार्यजी महाराज का सुसज्जित भव्य सभा मञ्च पर विराजना हुआ। सभा मञ्च में अपार जन समूह की उपस्थिति में आचार्य-पीठ की परम्परानुसार आचार्यश्री के कर कमलों द्वारा केसरिया ध्वजोत्तोलन किया गया। देव पूजन एवं श्रीरामायणजी की अर्चना की गई। पश्चात् श्रीमुरारी बापू ने पूज्य आचार्यश्री का माल्यार्पण कर अर्चन किया।

सभा मञ्च पर श्रीरामकथा समिति के स्वागताध्यक्ष श्रीअश्विनीकुमारजी कानोडिया, अध्यक्ष श्रीभीमकरणजी छापरवाल, कार्यवाहक अध्यक्ष श्रीरामेश्वरलालजी फतेपुरिया, महामन्त्री श्रीराधेश्यामजी ईनाणी, म० म० श्रीव्रजविहारीशरणजी 'राजीव' अहमदाबाद महामन्त्री अ० भा० श्रीनिम्बार्क महासभा, मेवाड मण्डलेश्वर श्रीमहन्त श्रीमुरलीमनोहर-शरणजी शास्त्री उदयपुर, विश्व हिन्दू परिषद् के राजस्थान शाखा के संयुक्त मन्त्री श्रीजय-बहादुरसिंहजी, श्रीरामेश्वरलालजी तोषनीवाल, बांसवाडा, श्रीभागीरथजी भराड़िया सेंधवा, श्रीरामकरणजी बाहेती बम्बई, श्रीरामनिवास-जी, राठी अहमदाबाद, श्रीसुखदेवजी मून्दड़ा सम्बलपुर, श्रीत्रिलोकचन्दजी मुसद्दी वृन्दावन, श्रीटीकमचन्दजी तोषनीवाल मकराना, श्री-कल्याणमलजी सूतवाले जयपुर, श्रीरतनलालजी बाल्दी रिड़ आदि ने युगसन्त श्रीमुरारी बापू का एवं जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज का माल्यार्पण कर स्वागत किया। तत्पश्चात् मंगलाचरण हुए।

वैदिक मंगलाचरण श्रीसर्वेश्वर वेद विद्यालय निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) के छात्र ओमप्रकाश शर्मा एवं अमरेशकुमार शर्मा ने सुमधुर सस्वरों में किया। पौराणिक मंगलाचरण श्रीयमुनाशरण सूरदासजी ने किया। श्रीविश्वामित्रजी व्यास ने श्रीमुरारी बापू के स्वागत में स्वरबद्ध गीत प्रस्तुत किया। इस उद्घाटन समारोह कार्यक्रम में जब संगीताचार्य श्रीशैलेन्द्रमुनिजी ने "तंत्र न जानू मंत्र न जानू रूप न जानू तेरा। सारे जगत का पालनहारा हे प्रभु राम है मेरा।" इन पंक्तियों से सरस भावपूर्ण गीत प्रारम्भ किया तब पाण्डाल में बैठे हजारों श्रोतागण भाव विभोर हो उठे एवं सारा वातावरण संगीत लहरी से राममय हो गया।

स्वागताध्यक्ष श्रीअश्विनीकुमारजी कानोडिया ने अपना स्वागत भाषण एवं अध्यक्ष

श्रीभीमकरणजी छापरवाल ने अपना अध्यक्षीय भाषण दिया । महामन्त्री श्रीराधेश्यामजी ईनाणी ने आभार व्यक्त किया ।

श्रीरामकथा समिति की ओर से मञ्च पर विशेष अतिथि राजस्थान विधानसभा के अध्यक्ष श्रीहरिशंकरजी भाभड़ा एवं राज्य की ऊर्जा एवं शिक्षामन्त्री श्रीमती सुमित्रासिंह का माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया गया ।

राज्य विधानसभाध्यक्ष श्रीभाभड़ाजी ने पं० श्रीगोविन्ददासजी 'सन्त' प्रचारमन्त्री अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ एवं प्रधान सम्पादक 'श्रीनिम्बार्क' पाक्षिक पत्र द्वारा रचित "व्याख्यान रत्नमाला" पुस्तक का विमोचन किया । अपने भाषण में श्रीभाभड़ाजी ने कहा श्रीतुलसीदासजी ने श्रीरामचरितमानस अपने अन्तःकरण के सुख के लिए लिखा "स्वान्तः सुखाय तुलसी रघुनाथ गाथा ।" जो भी साहित्य स्वान्त-सुख के लिये लिखा जाता है उसमें किसी प्रकार की न्यूनता नहीं हो सकती । श्रीरामकथा का यह आयोजन जन-जन के हृदय में भगवान् श्रीराम के चरित्र से प्रेरणा प्राप्ति में सहायक होगा । श्रीमती सुमित्रासिंह ने अपने भाषण में रामचरित का जन-जन में प्रचार आज के संदर्भ में आवश्यक बताया ।

उक्त उद्घाटन समारोह के समस्त कार्य-क्रम का सफल संचालन मेवाड़ मण्डलेश्वर श्री-मुरलीमनोहरशरणजी शास्त्री उदयपुर ने किया । ★

❋ युगसन्त श्रीमुरारी बापू स्वागत प्रसूनावलि ❋

[रचयिता – पं० गोविन्ददास 'सन्त', धर्मशास्त्री पुराणतीर्थ]

श्रीराधामाधवं ध्यात्वा श्रीमत्सर्वेश्वरं प्रभुम् ।
कामये मङ्गलं बापू-मुरारेः सादरं सदा ।।
स्वागत श्री युग संत महान ।
मुरारी बापू शुभ सम्मान ।।
श्रीनिम्बारक पथ अनुगामी,
हरिव्यासी गुणवान ।
है निवास सौराष्ट्र प्रान्त में,
मंजुल 'महुआ' स्थान ।।१।।
माघव मास कृष्ण एकादशी,
पावन पर्व महान ।
शुभारम्भ श्रीरामकथा का,
निम्बारक पीठ प्रधान ।।२।।
श्रीयुगसन्त मुरारी बापू,
हैं प्रसिद्ध जग जान ।
रामकथा होती अति सुन्दर,
अनुपम हरि आख्यान ।।३।।
सरस कथा कीर्तन की महिमा,
गावत वेद पुरान ।
कलियुग में है प्रभु प्राप्ति का,
साधन शास्त्र प्रमान ।।४।।
श्री गंगोदक अर्चन करते,
गंगोदक ही पान ।
प्रभु प्रसाद गंगोदक निर्मित,
करते सानुष्ठान ।।५।।
सीतापति श्री रामचन्द्र का,
नित करते गुण गान ।
श्रीमुख पावन कथा सुधा का,
श्रोता करते पान ।।६।।
यहाँ समागत विविध सन्तजन,
महंत भक्त विद्वान ।
स्वागत गान सहित करते,
हैं हम सबका सम्मान ।।७।।
जय जय जानकी बल्लभ राघव,
जय जय जय हनुमान ।
'सन्त' सदा भज राधामाधव,
सर्वेश्वर भगवान् ।।८।।

★★

श्रीरामकथा मञ्च पर भव्य सिंहासन पर सुशोभित श्रीनिम्बार्क भगवान् की मनोहर प्रतिमा के पुष्पहार समर्पण के बाद आचार्यश्रीचरण एवं श्रीमुरारी बापू दर्शन कर रहे हैं। मध्य में ब्र. म. श्रीव्रजविहारीशरणजी 'राजीव' एवं पुष्पहार के थाल लिए गुजरात के पण्डितजी खड़े हैं।

श्रीरामकथा प्रारम्भ से पूर्व विशाल पण्डाल के भव्य मञ्च पर सिंहासनासीन अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री 'श्रीजी' महाराज एवं व्यासपीठ पर समासीन परम पूज्य युगसन्त श्रीमुरारी बापू मध्य में सिंहासनासीन श्रीनिम्बार्क भगवान् का दर्शनीय अतिमनोहर श्रीविग्रह तथा आचार्यश्री की सान्निधि में मञ्च पर बैठे हुए राज्यविधान-सभाध्यक्ष श्रीहरिशंकरजी भाभड़ा तथा श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ के प्रचारमन्त्री पण्डित [illegible]

श्रीरामकथा समिति के स्वागताध्यक्ष—
श्रीअश्विनीकुमारजी कानोड़िया (किशनगढ़) का
स्वागत भाषण

प्रातः स्मरणीय जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री "श्रीजी" महाराज, परम वन्दनीय युगसन्त श्रीमुरारी बापू, सम्माननीय राजस्थान विधानसभाध्यक्ष, श्रद्धेय सन्त-महन्त महात्मावृन्द, विद्वत् समाज, कथारसरसिक भावक श्रद्धालुजन, भक्तिमती माताएँ !

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि अनन्त श्री विभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री "श्रीजी" महाराज के पावन संरक्षकत्व में आचार्यों की तपोभूमि सिद्धस्थली अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) में श्रीरामचरितमानस के विश्वविख्यात सरस प्रवक्ता युगसन्त श्रीमुरारी बापू के श्रीमुख से मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् श्रीराम की मङ्गलमयी कथा सरिता ९ दिन पर्यन्त प्रवाहित होगी। सन्तों का जीवन निरन्तर परोपकार में व्यतीत होता है, वे सदा जीवों के कल्याण हेतु यत्र-तत्र अबाध रूप से विचरण करते हैं।

जिस प्रकार गंगा-यमुना-सरस्वती के त्रिवेणी संगम प्रयाग में प्रति १२ वर्ष में महान् कुम्भ पर्व आयोजित होता है। जहां समवेत रूप से धर्माचार्य, श्रीमहान्त, महामण्डलेश्वर, सन्त-महात्मा, विद्वान् तथा करोड़ों की संख्या में भक्तजन सम्मिलित होते हैं। उसी प्रकार आज यहां पर भी गंगासागर, यमुनासागर एवं सरस्वती स्वरूप आचार्यों की वाणी का त्रिवेणी संगम बना है। सहज में अपने अनुग्रह से हम सब को अनुगृहीत करने के लिये ही उक्त विभूतियों का पादार्पण हुआ है। यह परम हर्ष का विषय है।

आप सभी भक्त महानुभाव इनके दर्शन एवं श्रीरामकथा श्रवण कर अपने जीवन को धन्य धन्य बनावें। यहां पर एक अपूर्व लाभ यह रहेगा कि श्रीसनकादि संसेव्य आचार्य परम्परा प्राप्त शालग्राम स्वरूप श्रीसर्वेश्वर प्रभु तथा गीतगोविन्दकार महाकवि श्रीजयदेव समाराधित श्रीराधामाधव प्रभु के दैनिक अभिषेक आरती, स्तुति-संकीर्तन, यज्ञ एवं श्रीरासलीलानुकरण आदि विविध मङ्गलमय कार्यक्रम के दर्शन होंगे। यहां मन्दिर परिसर में ही श्री निम्बार्काचार्यपीठ के संस्थापक अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज एवं आचार्य परम्परा के भी भव्य दर्शन होंगे। आचार्यपीठ द्वारा संचालित श्रीराधामाधव गोशाला, श्रीनिम्बार्कमुद्रणालय, श्रीसर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय, श्रीसर्वेश्वर वेद विद्यालय, श्रीसर्वेश्वर छात्रावास, श्रीहरिव्यास औषधालय, श्रीनिम्बार्क पुस्तकालय, श्रीहंस वाचनालय आदि विविध पारमार्थिक संस्थायें आचार्यपीठ की गरिमा को बढ़ा रही हैं।

यहां पर सन् १९७८ में जब अ० भा० विराट् सनातन धर्म सम्मेलन आयोजित हुआ था उस समय चतुः सम्प्रदाय वैष्णवाचार्य, शंकराचार्य, ब्रह्मलीन धर्म सम्राट् श्रीकरपात्रीजी महाराज, तीनों अनी के महान्त, महामण्डलेश्वर,

मण्डलेश्वर, सन्त-महात्मा, विद्वद्‌जनों का एक मन्च पर दर्शन पाकर और उनकी उपदेशात्मक अमृत वाणी श्रवण कर जनता कृतकृत्य हुई थी। वह दृश्य कुम्भ सदृश था। आज उसी की पुनरावृत्ति के रूप में यह आयोजन श्रीरामकथा का प्रवाह लेकर उपस्थित है। उस समय राजस्थान के तत्कालीन मुख्यमन्त्री श्रीहरिदेवजी जोशी ने सम्मेलन का उद्‌घाटन किया था। सौभाग्य है कि आज भी हमारे बीच राजस्थान के विधानसभाध्यक्ष श्रीहरिशंकरजी भाभड़ा द्वारा समर्चना के साथ इस ज्ञान महायज्ञ का शुभारम्भ हो रहा है। यह सब हमारे आराध्य प्रातःस्मरणीय पूज्य आचार्यचरणों का भक्तों पर अहेतुक अनुग्रह है। जिन्होंने ऐसे विशिष्ट विभूतियों का समवेत रूप में दर्शन कराकर हमारे जीवन को पावन बना दिया। हम समिति की ओर से आचार्यश्री, श्रीमुरारी बापू, श्रीभाभड़ाजी, श्रीमहान्त, महामण्डलेश्वर, सन्त-महात्मा एवं समस्त विद्वद्‌जनों का व आप सबका हार्दिक स्वागत करते हैं।

हम उन समस्त प्रशासनिक एवं राजकीय अधिकारियों के अतिशय आभारी हैं जिन्होंने सड़क, यातायात, विद्युत्, जल, सुरक्षा, स्वच्छता, चिकित्सा आदि के क्षेत्र में अपना अनुपम सामयिक सहयोग प्रदान किया है एवं कर भी रहे हैं।

आपने अपनी सहज कृपा से नागरिक सुख सुविधाओं से सर्वथा दूर इस पुष्करारण्य क्षेत्र के परम पावन निम्बार्कतीर्थ में पधारने की जो कृपा की है, एतदर्थ हम आपके कृतज्ञ हैं, यहाँ आपके पधारने में जो असुविधा हुई है एवं अन्य व्यवस्थाओं में जो त्रुटियां रही हैं या रहेंगी उनके लिये हम आपके चरणों में पुनः पुनः नत मस्तक होकर क्षमा प्रार्थना करते हैं।

इस आयोजन में स्वागताध्यक्ष का दायित्व मेरे कन्धों पर डालकर परम पूज्य श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री "श्रीजी" महाराज ने मुझ पर बड़ी अनुकम्पा की है।

यह महत्वपूर्ण आयोजन तो श्रीसर्वेश्वर प्रभु के अनुग्रह से एवं आप सभी के सत्प्रयासों से ही सम्पन्न होगा।

मैं अनन्त श्रीविभूषित जगद्‌गुरु निम्बार्काचार्य श्री "श्रीजी" महाराज, परम श्रद्धेय श्रीमुरारी बापू, मान्यवर भाभड़ाजी, सन्त-महात्मावृन्द एवं समस्त धर्मप्रेमी भावुकजनों का स्वागत करता हूँ और अन्त में पुनः भगवान् श्रीराधासर्वेश्वर के श्रीचरणकमलों में कोटि-कोटि नमन करते हुये आप सभी की मङ्गल-कामना करता हूँ।

जय श्रीसर्वेश्वर, जय भारत।

卐

राम कृपा के बिना सन्त नहीं मिलते और सन्त कृपा के बिना राम भी नहीं मिलते। हमारे लिये यदि कोई सच्चा स्वर्ग है तो वह सन्तों का संग है।

★★

श्रीरामकथा समिति के अध्यक्ष—
श्रीभीमकरणजी छापरवाल (इचलकरंजी) का
अध्यक्षीय भाषण

अनन्त श्रीविभूषित परमाराध्य प्रातः-स्मरणीय जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री "श्रीजी" महाराज, परम श्रद्धेय श्रीरामकथा के सरस प्रवक्ता अभिनव गोस्वामी श्रीतुलसीदासजी स्वरूप 'युगसन्त' पूज्य श्रीमुरारी बापू, समस्त सन्त, महन्त, विद्वद्वृन्द, राजस्थान विधान सभाध्यक्ष महोदय, कथा पियूषपान परायण परम भावुक भक्तजन एवं भक्तिमती माताएँ!

हमारे देशवासियों का सौभाग्य है कि युगसन्त पूज्य श्रीमुरारी बापू जैसे महामनीषी श्रीरामकथा के माध्यम से भारतीय संस्कृति और सभ्यता का बड़े ही प्रभावी ढंग से प्रचार-प्रसार करते हुये जनमानस को ज्ञान गंगा से आप्लावित कर रहे हैं। जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज की तपःस्थली पुष्करारण्य क्षेत्र की धार्मिक जनता के लिये यह एक स्वर्णिम अवसर है कि—वह आज निम्बार्कतीर्थ में परम पूज्य आचार्यश्री के अनुग्रह से श्रीमुरारी बापू की सरस कथा से परम लाभान्वित हो रही है।

आज हमारा देश स्वतन्त्र है, किन्तु सांस्कृतिक दृष्टि से वर्तमान दशा चिन्तनीय है। हम स्वतन्त्रता के इस स्वर्णिम युग में भी राजनैतिक एवं भौतिक व्यामोह में पड़कर अपनी संस्कृति और सभ्यता को भूलते जा रहे हैं। यही कारण है कि स्वतन्त्रता के पश्चात् हमारी संस्कृति, सभ्यता और मानव मूल्यों का जितना ह्रास हुआ है, उतना कभी नहीं हुआ। देश स्वतन्त्र होने पर भी गो-वध जैसा कलंक भारत भूमि से हटाना तो दूर रहा, पूर्वापेक्षया भारी संख्या में गो-हत्या हो रही है, यह एक चिन्ता का विषय है। इसका एक मात्र कारण भगवान् श्रीरामकृष्ण के देश में भारतीय वैदिक सनातन संस्कृति पर विभिन्न प्रकार से आघात हो रहे हैं और राष्ट्रीय अखण्डता और एकता को भी विघटनकारी तत्वों द्वारा नष्ट करने के षड्यन्त्र रचे जा रहे हैं।

शिक्षा में आमूल चूल परिवर्तन करने की दिशा में राष्ट्रीय स्तर पर लम्बे समय से शिक्षा नीति निर्धारण सम्बन्धी प्रयास होते रहे हैं किन्तु चार दशक समाप्त होने पर भी वे मेकाले की दूषित शिक्षा नीति यथावत चल रही है। जब तक हमारी शिक्षा नीति भारतीय संस्कृति के अनुरूप नहीं होगी तब तक देश का सांस्कृतिक उत्थान सम्भव नहीं है।

अनेक देशों की संस्कृतियाँ उत्पन्न और विलीन होती रही है किन्तु इस देश की संस्कृति एवं सार्वभौम धर्म ईश्वरीय होने से उसकी जड़ें बहुत बहुत गहरी हैं अतः वह "यावत चन्द्र दिवाकरौ" कभी लुप्त नहीं हो सकती है। आज भी हमारी संस्कृति और धर्म का जो स्वरूप विद्यमान है उसका श्रेय हमारे धर्माचार्यों और सच्चे धर्मोपदेशकों को है।

हमें इस बात का गौरव है कि हमारे श्रद्धेय अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर जगद्गुरु श्री "श्रीजी" महाराज के

तत्त्वावधान में आचार्यपीठ द्वारा विभिन्न धार्मिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के सम्यक् संचालन से रचनात्मक अनुकरणीय सेवायें हो रही हैं। भगवान् श्रीसर्वेश्वर प्रभु तथा श्रीराधामाधवजी के भव्य दर्शन, वेद विद्यालय में छात्रों का सस्वर वेदाध्ययन, श्रीसर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय में भारतीय संस्कृत के प्रतिरूप छात्र एवं अध्यापकों का अध्ययन-अध्यापन, दैनिक सामयिक स्तुति संकीर्तन, गो-शाला में कामधेनु स्वरूप गौ माताओं के दर्शन, यज्ञशाला में याज्ञिक विद्वानों के वेद मन्त्रों द्वारा सुरम्य वातावरण में प्रदूषण निवारक स्वाहाकार के घोष सहित यज्ञीय धूम आदि-आदि निम्बार्क-तीर्थ परिसर में भारतीयता के स्वरूप का प्रत्यक्ष दर्शन करते हुये जब हम परम पूज्य आचार्यश्री के चरणों में बैठकर उनके श्रीमुख से स्वाभाविक सुधा वर्षिणी सरस वाणी से उपदेशामृत पान का सौभाग्य प्राप्त करते हैं तो अपने को धन्य-धन्य मानते हुये अनुभव करते हैं कि यही तो भारत है, यही हमारी संस्कृति है जिसका हम दर्शन कर रहे हैं।

यह हर्ष का विषय है कि देश के दूषित वातावरण के निवारण की दिशा में श्रद्धेय श्रीमुरारी बापू का आध्यात्मिक कथा ज्ञान यज्ञ धार्मिक जनता के लिये अत्यन्त महत्वपूर्ण है जो आज के अशान्त मानव के हृदय में शान्ति-मय प्रकाश तथा हमारी संस्कृति के मूल्यों की पुन: स्थापना करने में निश्चित रूप से सार्थक सिद्ध हो रही है।

इस आयोजन में अध्यक्ष की जिम्मेदारी मेरे कन्धों पर डालकर परम पूज्य श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री "श्रीजी" महाराज ने मुझ पर बड़ी अनुकम्पा की है।

यह महत्वपूर्ण आयोजन तो श्रीसर्वेश्वर भगवान् की कृपा तथा श्री "श्रीजी" महाराज के आशीर्वाद एवं कार्यकर्ताओं के सहयोग से ही सफलता पूर्वक सम्पन्न होगा।

इस आयोजन की व्यवस्था हेतु सभी कार्यकर्ताओं द्वारा अथक प्रयत्न किये गये हैं फिर भी इतने बड़े आयोजन में कुछ त्रुटियां रहना स्वाभाविक है। मेरा आप सभी से विशेष अनुरोध है कि आप उन त्रुटियों की तरफ ध्यान नहीं देते हुये सभी कार्यकर्ताओं को अधिकाधिक सहयोग देकर इस ज्ञान महायज्ञ को सफल बनावें।

परम पूज्य श्रीमुरारी बापू, राजस्थान के विधान सभाध्यक्ष सुदूर देशों से पधारे हुये सन्त-महात्मा, विद्वान्, राजकीय अधिकारियों एवं समस्त सज्जनों का हार्दिक स्वागत एवं अभिनन्दन करता हूँ और अन्त में पुन: भगवान् श्रीराधासर्वेश्वर के श्रीचरणकमलों में कोटि-कोटि प्रणाम करते हुये आप सभी की मङ्गल कामना करता हूँ।

जय श्रीसर्वेश्वर, जय भारत।

सनातन धर्म की जय हो।

-एक भक्त

प्रथम दिवसीय श्रीरामकथा प्रवचन

(कथा सार दिनांक २१ अप्रेल १९९० ई० शनिवार)

संकलनकर्ता–श्रीसत्यनारायण 'पथिक'

श्रीरामकथा शुभारम्भ के पूर्व अनन्त श्री विभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री "श्रीजी" महाराज ने इस पूरे आयोजन की सम्पूर्ण सफलता के लिये श्रीराधासर्वेश्वर प्रभु से मंगल कामना की। श्री "श्रीजी" महाराज ने रामकथा महायज्ञ के शुभारम्भ महोत्सव पर प्रवचन का प्रारम्भ "राम राजी होवे जद मेह बरसावे" की राजस्थानी लोकोक्ति से प्रारम्भ किया।

श्री "श्रीजी" महाराज ने कहा कि–जिस प्रकार भगवत्कृपा होने पर जब सुवृष्टि होता है तो निश्चित रूप से सुभिक्ष होता है, और जनमानस भावी सुख सम्पत्ति की परिकल्पना करता है। इसी प्रकार महापुरुषों के सदुपदेश से मानव जीवन का सन्मार्ग दर्शन प्राप्त होता है। आज इस परम पावन निम्बार्कतीर्थ में, उपस्थित भावुक रामभक्तों के समक्ष श्रीमुरारी बापू की सरस रामकथा प्रारम्भ हो रही है, निश्चित रूप से यह इस क्षेत्र के अभ्युदय का लक्षण है। आचार्यश्री ने मुरारी बापू के सरस प्रभावी प्रवचन शैली की हार्दिक प्रशंसा करते हुये कहा-हमारे शब्दकोष में ऐसी शब्दावली नहीं है जिससे मुरारी बापू के कथा वैशिष्ट्य को व्यक्त कर सके। रामकथा का महत्व प्रतिपादित करते हुये आचार्य श्री ने कहा कि जिस प्रकार रामरस (लवण) के बिना सब व्यञ्जन फीके होते हैं, उसी प्रकार जीवन में सब कुछ होते हुये भी रामरस (रामभक्ति) के बिना जीवन निरर्थक है।

श्रीरामकथा के प्रारम्भ में युग सन्त श्रीमुरारी बापू ने मधुर स्वरों से जैसे ही "श्रीराम जय राम, जय जय राम" की धुन प्रारम्भ की पूरा वातावरण भक्ति से ओतप्रोत राममय हो गया। श्रीमुरारी बापू ने ओजस्वी वाणी में कहा कि श्रीरामचरितमानस मानव के व्यक्तित्व का वास्तविक दर्पण है। काँच के दर्पण पर धूल जम सकती है पर रामचरितमानस तो जन्म-जन्मान्तर से जमी धूल को साफ कर देता है।

श्रीमुरारी बापू ने कबीर के दोहे "कबीरा कूप एक है पनिहारी अनेक। बर्तन न्यारे-न्यारे पर पानी एक।" की अर्थ अभिव्यक्ति करते हुये राष्ट्र, ईश्वर, धर्म आदि के सन्दर्भ में कहा कि—कुआ (राष्ट्र) —पनिहारी (धर्म) और बर्तन (अनुयायी) भिन्न-भिन्न हैं परन्तु जल (ईश्वर) का स्वरूप एक होता है, उसी प्रकार सभी सन्तों की वाणियाँ एवं भगवत् भजन के विविध स्वरूप हैं परन्तु अर्थ एक ही है, जिनमें कोई भेद नहीं है।

इससे पूर्व श्री बापू ने प्रभावी एवं रसमय वाणी द्वारा अपने वक्तव्य के आरम्भ में विशेष रूप से हनुमत वन्दना करते हुए कहा कि यह संयोग की बात है हम कुछ ही दिन पूर्व एक निम्बार्की सन्त की समाधि स्थल पर कथा करके आरहे हैं। आज इस अखिलभारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ के परम पावन स्थल पर कथा का शुभारम्भ करते हुये अपने को धन्य-धन्य मानते हैं। यह भी एक सुखद संयोग ही है कि आज वल्लभाचार्य भगवान् का प्राकट्य दिवस है और इस कथा का समापन आदि शंकराचार्य भगवान् की जयन्ती के दिन

होगा, और भगवान् निम्बार्काचार्यपीठ की परम पावन स्थली पर कथा का होना त्रिवेणी संगम है। आपने श्रीनिम्बार्कीय वैष्णव परम्परा का उल्लेख करते हुये सनकादि कुमारों के स्वरूप और गुणों का वर्णन रामचरित मानस द्वारा किया।

"जान समय सनकादिक आये"

आगे मुरारी बापू ने भारतीयता का महत्व प्रतिपादन करते हुये कहा कि आज राष्ट्र को अनुष्ठान व अनुष्ठानी नागरिकों की आवश्यकता है। हमारे लाखों पूर्वजों ने अनुष्ठान-चरित्र से ही भारत की महिमा को बढाया है। यह रामचरित मानस की कथा एक अनुष्ठान है। इसे कोई मेला आयोजन नहीं समझे। आज की पढ़ाई ने लोगों को चतुर तो बना दिया किन्तु समझदारी कम हो गई। आज देश में चतुराई चालाकी की आवश्यकता नहीं है, बुद्धिमानी की आवश्यकता है। आज बालक माँ-बाप से छल कपट में चतुर तो अधिक हो गये हैं, लेकिन उनमें सात्विक बुद्धि नहीं है। अतः रामचरित मानस जैसे अनुष्ठानों से राष्ट्र के चरित्र का निर्माण करना आवश्यक है।

रामचरित मानस मनुष्य के चरित्र ज्ञान के लिए एक दर्पण है। रामचरित मानस व्यक्ति के असली स्वरूप के दर्शन करवाता है कि हम राम जैसे हैं या रावण जैसे।

इस रामकथा दर्पण में आप सभी अपने मुख को देखो, कैसे हो तुम ? इन नौ दिनों में अपने चरित निर्माण का एक अलभ्य अवसर मिला है आपको। यह एक सत्य है कि रामायण की कथा बार बार श्रवण करने पर भी गंगा की धारा के समान एक ताजगी प्रदान करती हुई नित्य नवीन ही रहती है।

साधारण मानव यह समझता है कि मैं ही कर्ताधर्ता हूं। इस सम्बन्ध में आपने अपना उदाहरण देते हुए कहा कि लोग मुझसे सवाल करते हैं कि आप बार-बार कथा करते हैं, क्या थकते नहीं ? हम कथा करते तो, अवश्य ही थक जाते, किन्तु हम कथा नहीं करते हैं। कोई और ही करता है। वाद्य नहीं थकता, बजाने वाला थकता है। हम वाद्य की तरह हैं।

भगवान् की कथा करना अहोभाग्य है लेकिन उसे श्रवण करना तो और भी बड़ा भाग्य है। कथा तो वो ही सुन सकते हैं जिनको कृष्ण स्वयं आमन्त्रित करते हैं। इतिहास पुराना होता है लेकिन कथा उससे पुरानी होते हुए भी सनातन है।

★★

द्वितीय दिवसीय श्रीरामकथा प्रवचन

(कथासार दिनांक २२ अप्रेल १९९० ई० रविवार)

युगसन्त श्रीमुरारी बापू ने श्रीरामकथा प्रारम्भ करने से पूर्व कहा कि जहाँ रामकथा महोत्सव हो रहा है यह स्थान सुदर्शन चक्रावतार श्रीनिम्बार्काचार्य की परम्परा के जगद्गुरु आचार्यों की तप स्थली है। यह भी एक शुभ संयोग है कि इस नवदिवसीय महायज्ञ के दिनों में ही श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती एवं आद्य शंकराचार्य के जन्म दिवस की तिथी भी आती है। इसलिये रामकथा के इन नौ दिनों के प्रातः कालीन रामकथा प्रसंग में कथा से पूर्व नित्य एक घण्टा इन परम पूज्य तीनों आचार्यों के दर्शन परम्परा के सम्बन्ध में प्रवचन किया जायेगा। तत्पश्चात् प्रातःकालीन निश्चित समयावधि के शेष समय एवं सायंकाल रामकथा होगी।

श्रीमुरारी बापू ने श्रीरामकथा का प्रारम्भ सरस्वती की वन्दना करते हुये तुलसीदासजी की विशेषताओं और नारीवर्ग के लिये आदर सम्मान की अनुपमता का सुन्दर चित्रण कर भवानीशंकर-सीताराम के सुमिरन पश्चात् गुरु की वन्दना की, जिनकी चरणधूलि से आखों में प्रकाश का संचार होता है।

वन्दउ गुरुपद पदुमपरागा-
सुरुचि सुवास सरस अनुरागा।
बूझहि रामचरित मनिमानिक,
गुपुत प्रगट जँह जो जेहि खानिक

गुरु महिमा के साथ-साथ साधु एवं सन्तों के गुणों पर आपने सुन्दर विवेचन उपस्थित किया।

युगसन्त श्रीमुरारी बापू ने मंगलाचरण के पश्चात् कहा कि भारत की संस्कृति कितनी महान् है। यहाँ भक्ति भी की जाती है तो वह भी मंगलाचरण से शुरू होती है, और शास्त्र में प्रवेश भी करना हो तो वह भी मंगलाचरण से होना है। उन्होंने कहा कि मंगलाचरण का अर्थ आचरण में मंगलता से है। यानि जिसका आचरण अमंगल हो वह शास्त्र रूपी गलीचे पर पैर नहीं रख सकता।

गोस्वामी तुलसीदासजी पर कुछ समालोचकों द्वारा लगाये गये आरोप कि गोस्वामी जी के मन में नारी के प्रति समान भाव नहीं था, को निर्मूल बनाते हुए मुरारी बापू ने कहा कि उन्होंने अपनी आराधना में सर्व प्रथम स्त्री पूजा को ही प्रधानता दी है। मुरारी बापू ने कहा कि शक्ति, बुद्धि और सम्पत्ति इन तीनों क्षेत्रों में क्रमशः दुर्गा, सरस्वती व भगवती को प्रधान माना गया है।

युगसन्त श्रीमुरारी बापू ने कहा कि लज्जा छोड़ना बहुत मुश्किल है लेकिन राजस्थान को मीरां ने जीवन से लज्जा का परित्याग कर इतिहास में एक उदाहरण प्रस्तुत किया है। उन्होंने कहा कि ऐसे कई काम हैं जिनसे हमें लज्जित होना पड़ता है, उसे तो हम नहीं छोड़ सकते लेकिन भक्ति भाव में हमें लज्जा आती है। उन्होने कहा कि भक्ति लज्जा है लज्जा भक्ति नही हो सकती। भक्ति स्वतः मर्यादा का स्वरूप है। भक्ति में अगर आपको लज्जा आती है तो इसका अर्थ है भगवान् की

आप पर पूरी कृपा नहीं हुई ।

मुरारी बापू ने कहा कि यदि लज्जा नहीं छोड़ सको तो एकाकी हो जाओ और हरि का जीभर कर स्मरण करो ।इसके बावजूद भी यदि विकार व वासनाएँ सताती है तो स्वभाव से शान्त हो जाओ, इससे भी यदि उबर नहीं पा रहे हो तो (पर्यटन) तीर्थयात्रा पर चले जाओ क्योंकि तीर्थयात्रा का फल यज्ञ के बराबर होता है ।

दया करना अच्छी बात है । लेकिन उससे भी बड़ी बात है प्रेम करना । दया धर्म का मूल होने के बावजूद भी दया के साथ प्रेम की प्रधानता है । गुरु की व्याख्या करते हुए आपने कहा कि विद्या यद्यपि बुद्धि से प्राप्त होती है लेकिन फलित गुरु से होती है क्योंकि माया के पर्दे को गुरु ही हटाता है । गुरु चरण धूलि से दृष्टि पावन हो जाती है । और जब तक दृष्टि पावन नहीं होती हमें सब निन्दनीय दिखाई देते हैं । जब सब वन्दन योग्य दिखाई देने लगे तो समझिये कि आपकी दृष्टि पावन हो गई है ।

रामचरित जे सुनत अघाहीं,
रस विशेष जाना तिन्ह नाहीं ।
जीवन मुक्त महामुनि जेऊ
हरिगुन सुनहिं निरंतर तेऊ ।।

पूज्य मुरारी बापू ने उपर्युक्त चौपाई को अनेकों बार सरसता से गाकर जनमानस के हृदय में भक्तिभावना तथा राम कथा की ओर उन्मुखता का स्रोत बड़ी सरलता से प्रवाहित किया, रामायण कथा के प्रारम्भ के पूर्व आपके विविध सुन्दर विचार जो सन्तों की वाणी पर आधारित है अत्यन्त सुखद हृदयग्राह्य और ज्ञान-वर्द्धक होते हैं, यात्रा-पर्यटन की आवश्यकता में आपने स्पष्ट किया कि तीर्थ-यात्रा में भटकना नहीं है वरन् अपने विचार एवं क्रियाओं को इस प्रकार सुसंस्कृत करना है कि जीवन मङ्गलमय हो जाय, चरित्र का मांगलिक स्वरूप होने पर ही शास्त्रों का ज्ञान, भक्ति का आनन्द और देवमुनियों का प्रसाद प्राप्य होता है । जीवन की ५ बाधायें तीर्थस्थल की ओर इंगित करती है । चित्त में उच्चाटपन, संसार की आसक्ति से निवृत्ति, अशक्ति-असमर्थता प्रतिबन्ध-बाधायें, परपीड़ा द्वंद तथा भगवत भजन में बाधा । भरतजी ने इसी का अनुभव कर चित्रकूट की यात्रा की, मीराजी ने भी इन कठिनाईयों से विक्षुब्ध हो वृन्दावन एवं द्वारका की यात्रा अच्छी समझी । भगवत भजन में लज्जा का त्याग, एकाकीपन, निस्पृहता शान्ति ये ही क्रमशः मार्ग हैं जिन पर चलकर तीर्थाटन का आनन्द प्राप्त हो सकता है । भगवत चरणों में प्रेम तथा तत्परता आ सकती है । प्रवृत्ति मार्ग में अनेकों बाधायें हैं निवृत्ति मार्ग में मात्सर्य । अतएव सावधानी अत्यावश्यक, इन्द्रियों पर अंकुश अनिवार्य, दूसरे के स्वभाव का आदर करना ही विनम्रता का द्योतक है, रामायण इस उद्देश्य की पूर्ति में अक्षय भण्डार का स्वरूप है ।

"सतसंगत मुद मङ्गल मूला"

सन्त सरलचित्त जगतहित, जानि सुभाउ सनेह, आदि पदों के गान से तीर्थराज की उपमा का अत्यन्त ही रोचक और हृदयग्राह्य शब्द-चित्र उपस्थित हुआ ।

रामभगति जँह सुरसरिधारा ।
सरसइ ब्रह्म विचार प्रचारा ।

एवं करम कथा रविनन्दनि वरनी आदि सरस पदों का संगीत लहरी में गाना तथा गवाना श्रीबापू के अति सुन्दर ढग है जो सदैव भक्तों श्रोताओं को आह्लादित करते रहते हैं ।

साधु और सन्त की व्याख्या करते हुए आपने बताया कि साधुता पाने के बाद संतत्व

श्रीश्यामजी कामदार मदनगंज (किशनगढ़) श्रीरामायणजी की शोभायात्रा के लिए रथारूढ़ करने हेतु श्रीमुरारी बापू के साथ आचार्यश्री महल से प्रस्थान करते हुए।

श्रीरामकथा सभा मञ्च पर समासीन श्रीनिम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज, आपश्री के दाहिनी ओर श्रीरामानुजाचार्य स्वामी श्रीअनन्ताचार्यजी महाराज चांदोद- बड़ौदा (गुजरात), श्रीरामानुजाचार्य स्वामी श्रीकेशवाचार्यजी महाराज डीडवाना (राज०), दादूसम्प्रदायाचार्य श्रीहरिरामजी महाराज नरेना (राज०) तथा आप सबों के पिछले भाग में खड़े व्यवस्था निर्देश करते हुए म० म० श्रीव्रजविहारीशरणजी 'राजीव'।

युगसन्त श्रीमुरारी बापू लाखों भावुक श्रोताओं को श्रीरामकथामृतरस की वृष्टि से उल्लसित करते हुए ।

श्रीमुरारी बापू सायं समय को श्रीरामकथा को विश्राम देते हुए। सन्मुख श्रीसर्वेश्वर रामकथा समिति के अध्यक्ष श्रीभीमकरणजी छापरवाल, उपाध्यक्ष श्रीरामेश्वरलालजी फतेहपुरिया, स्वागताध्यक्ष श्रीअश्विनीकुमारजी कानोडिया, उक्त समिति के मन्त्री-श्रीराधेश्यामजी ईनाणी, श्रीरामायणजी की आरती उतारते हुए ।

आता है। जिसके वेश से परिचय मिलता है वह साधु होता है क्योंकि सन्त का कोई वेश नहीं होता। सन्त तो साधु कुल का तिलक होता है। साधु वह है जो भगवान् से प्रेम करता है लेकिन सन्त वह है जिससे नित्य, प्रति दिन परमात्मा प्रेम करता है। साधु जो बोलता है वह करता है जब कि सन्त जो करता है वह बोलता है। जिसका चित्त सरल व समान हो वह सन्त होता है। आपने भक्तों को सचेत किया कि सांसारिक समृद्धि तो प्रारब्ध से मनुष्य को मिलती है अतः सन्तों से यदि कभी कुछ मांगने का मौका मिले तो श्रीराम के चरणों में प्रीति बढ़े ऐसा वर मांगो। समझो कि तुम्हारा उद्धार हो जायेगा।

श्रीरामकथा पारायण में कथा-शिरोमणि मुरारी बापू ने कहा कि राम का नाम चिन्तामणि के समान है। कलियुग में राम नाम से अज्ञान दूर होता है, मन को शान्ति मिलती है और तीनों ही प्रकार के दुःख आधिभौतिक, आधिदैविक और आध्यात्मिक नष्ट हो जाते हैं। इसलिये राम की भक्ति करो।

उन्होंने राम नाम को भक्ति का राजमार्ग बतलाते हुये कहा कि प्रतिदिन इक्कीस हजार छह सौ बार राम नाम का जप करो। मुरारी बापू ने राम नाम को सूरज, चन्द्रमा और अग्नि का हेतु, वेदों का प्राण, ओंकार का मूल तत्व, ब्रह्माण्ड का प्रतिरूप और सर्व सुखदायी मन्त्र बताया।

श्रीराम कथा प्रसंग में आपने भरत और हनुमान के माध्यम से यह व्यक्त किया कि सन्त भगवान् से बड़ा होता है। इसलिये तुलसीदासजी ने 'मानस" में राम से पहले भरत की वन्दना करके एक नई मर्यादा स्थापित की। भरत सन्त हैं, हनुमान सन्त हैं। अतः राम को प्रसन्न करने के लिये भरत और हनुमान के आश्रय में रहो। उन्होंने बताया कि भगवान चारों युगों सत्य, त्रेता, द्वापर, कलि में अवतार लेते है लेकिन भरत जैसा भक्त किसी एक युग में ही जन्म लेता है।

आपने वन्दना गायन के दौरान माता कौशल्या को भारतीय संस्कृति का प्रतीक, उर्मिला को नींव का पत्थर और सीताजी को सद्बुद्धि देने वाली बताया। आपने कहा भरत धर्म के प्रतिरूप हैं, शत्रुघ्न शूरवीर और सुशील हैं, लक्ष्मण रामचरित की श्वेत पताका के "यश-दण्ड" हैं और हनुमान महावीर हैं। महावीर वह जिसने मद मर्दन और मत्सर ईर्ष्या-द्वेष पर विजय पा ली हो। हनुमान ऐसे ही महावीर हैं। वे चारों युग, चारों आश्रम और चारों वर्ण में व्याप्त हैं। इसलिये प्रतिदिन ग्यारह बार हनुमान चालीसा का पाठ कलियुग में सर्वश्रेष्ठ है।

राम भक्ति में सफलता का यह सटीक और अचूक मार्ग है। राम का नाम हर अवस्था में फलदायी होता है। मन नहीं लगे तो उसकी चिन्ता मत करो। जैसे रोज नौकरी करते हो वैसे ही राम का नाम भी लो। जब नौकरी का फल मिलता है तो राम नाम का फल भी अवश्य मिलेगा। कलियुग में भवसागर से तरने का एक ही उपाय है।

श्रीराम महिमा पर—

आचार्यश्री के भाव

मुरारी बापू की रसमयी राम कथा पर भावविभोर होते हुये आचार्यश्री ने अपने प्रवचन में राम महिमा पर अपने भाव व्यक्त करते हुये कहा कि प्रह्लाद को जब हिरण्यकश्यपु द्वारा अनेक यातना देते हुये अग्नि में डाल देने पर भी प्रह्लाद का कुछ नहीं बिगड़ा वह पिता से कहता है कि—

तृतीय दिवसीय श्रीरामकथा प्रवचन

(कथासार दिनांक २३ अप्रेल १९९० ई० सोमवार)

प्रभु वन्दना के पश्चात् कथा प्रवचन में आज युगसन्त श्रीमुरारी बापू ने बताया कि वैष्णव को जितना हो सके अधिक से अधिक समय भगवत्सेवा में लगाना चाहिये। जीवन मृत्यु के बीच जो यात्रा है जिसे जीवन कहते हैं इस जीवन में हमें जो चाहिये, जितनी आवश्यकता है उसकी पूर्ति के अलावा सारा समय भगवत् सेवा में लगाना चाहिये। इच्छायें, चाहना मिटती नहीं हैं, वैसे मनुष्य दो रोटी का ग्राहक है—'अन्नतणां कोठार भरया सुख साधना सारू, पर सेर लोटणीनो तू अधिकारी।'

भगवान् सभी मनुष्यों की पूर्ति करता है, इस हेतु प्रतिबद्ध है बन्धन में है पर मनुष्य अपनी इच्छाओं को, चाहना को इतना बढ़ा लेता है कि भगवान् के स्थान पर उनकी लक्ष्मी को प्राप्त करने की कामना करता है।

श्रीमुरारी बापू ने इसी प्रसंग में कहा कि भक्त को अपने साथ-साथ अपने परिवार-जनों को भी भगवद् सेवा में लगाना चाहिये। वैष्णव के लिये हर स्थिति में भगवत्सेवा की प्रमुखता है।

श्रीमुरारी बापू ने कहा कि वास्तव में सभी वैष्णव हैं—जो सम्पूर्ण विश्व को विष्णु रूप समझता है वही—वैष्णव है। भेद तो हमने खड़े किये हैं।

भगवान् शंकराचार्य ने भी—"भज-गोविन्दं-भजगोविन्दं,, के साथ गीता का पाठ करने को कहा है।

सम्प्रदाय तो व्यवस्था है। गंगा का उदाहरण देते हुए श्रीमुरारी बापू ने बताया कि सनातन धर्म तो गंगा का स्वरूप है—गंगा तट के अलग-अलग घाट एवं सीढ़ियां तो व्यवस्थित रूप से गंगा स्नान हेतु है। मुख्य उद्देश्य तो गंगा के प्रवाह में स्नान करने का है।

जीवन यापन हेतु व्यवसाय में समय लगाना है तो कुल परम्परा के धन्धे में ही समय लगाये 'पाप और चोरी के कार्य को छोड़कर।' आज हम कर्म की व्यवस्था, परम्परा से हट गए हैं, चूक गए हैं। हमारी वर्ण व्यवस्था-भेद नहीं-एक वैज्ञानिक व्यवस्था है। जो केवल स्वयं और परिवार तक का विचार रखे वह शूद्र है। जो परिवार एवं अन्य जनों तक सोचे वह वैश्य है। जो पूरे राष्ट्र के लिये है वह क्षत्रिय है और जो पूरे विश्व के लिए है वह ब्राह्मण है।

रामनाम जपतां कुताभयं
सर्वतापशमनैकभेषजम् ।
पश्य तात मम गात्रसन्निधौ
पावकोऽपि सलिलायतेऽधुना ।

अर्थात् श्रीराम नाम का जो निरन्तर भजन करता है उस व्यक्ति के लिये लौकिक अग्नि भी कुछ अहित नहीं कर सकती है। प्रह्लाद कहते हैं, हे पिताश्री मेरी ओर देखिये, मैं इस धधकती आग में भी शीतल गंगाजल में स्नान करने के समान शीतलता का अनुभव कर रहा हूँ। ★

परन्तु यदि परिवार का वातावरण अनुकूल हो तो परिवार को छोड़ देने का तात्पर्य यह है कि घर को प्रभु का मन्दिर मानकर स्मरण करे। भोगों का विनियोग करदे। सबको ठाकुर की सेवार्पित समझे। उदासीन होने का तात्पर्य यह है कि हृदय को मन्दिर समझ कर प्रभु को स्थापित करले, परिवार व प्रभु के अलावा हृदय में किसी को स्थान न दे। परिवारजनों को प्रभु सेवा में लगाने की जबर्दस्ती न करे इससे क्लेश होगा। भगवान् को अशुद्ध भाव, क्लेश स्वीकार नहीं। प्रारब्ध वश जिस परिवार से वंधे हो उनके लिए स्वयं सेवा करे।

वैष्णवी विचार भावना प्रधान है। भगवान् को शुद्ध, सुन्दरतम दिव्य से दिव्य समर्पण करे। वैष्णव परदोष नहीं देखे। समझे सब मेरे पापों का परिणाम है। भगवान् बल्लभाचार्य का उदाहरण देते हुए कहा कि आचार्य स्वयं गृहस्थ थे। घर परिवार में रहते हुए सब प्रभु अर्पण करके प्रभु सेवा में रहे। परन्तु फिर भी कभी ऐसी स्थिति आ जाये कि आवश्यक ही हो जाय तो सब कुछ त्यागने में दोष नहीं "जाके प्रिय न राम वैदेही, तजिए ताहि कोटि वैरि सम जदपि परम स्नेही" जैसे कोई भी पुष्प परमात्मा के विमुख नहीं पर जब पुष्प मुरझा जाता है तो प्रभु के अर्पण योग्य, पूजा योग्य नहीं रहता। 'सर्वषां कृष्ण भावना' को जीवन में उतारे। किसी के कठोर वचनों को श्रीकृष्ण की वाणी समझकर सुने। 'हर आवाज में मुरली की ध्वनि जिसे सुनाई नहीं दी वह वैष्णव नहीं। कृष्ण के सब राग को अनुराग से सुनो।" सभी जीवन को "अनुष्ठानो जीवन बनावे।" मिथ्या वार्ता न करे, न सुने, न वहां उपस्थित रहे। मिथ्या क्रिया, मिथ्या उद्वेग न करे। "अन्नक्षेत्र का कण नहीं बिगाड़ना–सन्त साधुओं का क्षण नहीं बिगाड़ना।" सेवा करे पर सेवा का अहंकार न करे। स्वयं प्रभु तो हमारी साधन शुद्धि हेतु सेवा स्वीकार करते हैं।

भगवान् राम की कथा एवं नाम की महिमा बताते हुए श्रीमुरारी बापू ने कहा कि "हरि अनन्त हरिकथा अनन्ता" "कहौ कहां लग नाम बड़ाई। राम न सकहि राम गुण गाई।" नाम और नामी भिन्न नहीं। नाम का जप-प्रीत से, रीत से और विश्वास से जपना चाहिये। जप का फल तो निश्चित मिलता ही है, परन्तु नाम-जप के सम्बन्ध में दस अपराधों से बचना चाहिये। दूसरे स्वरूप की निन्दा, जबरदस्ती, कुभाव परनिन्दा, गुरु संस्था का तिरस्कार, निषिद्ध कर्म करना, नामों की तुलना करना आदि दस अपराधों के रहते नाम जप का फल प्रायश्चित में ही चला जाता है।

नाम का जप दृढ़ भाव से करना चाहिये इष्ट के प्रति एकाग्र भाव चाहिये—"वित्त सबको दो, चित्त एक को दो।" प्रीति-रीति प्रतीति से नाम जप करे। "नाम जपत मंगल दिशि दशहूँ"

श्रीमुरारी बापू ने कथा में रामकथा की भगवान् शिव से लेकर काकभुशुण्ड, याज्ञवल्क्य, भारद्वाज आदि से तुलसीदास तक की परम्परा का वर्णन करते हुए "रामचरितमानस" का अर्थ बताते हुए कहा कि "मानस-चरित-राम" तीन सीढ़ियां हैं।

कथा-श्रवण से पहिले मन शुद्ध हो जाता है फिर चरित्र शुद्ध होने पर भगवान् राम की प्राप्ति हो जाती है। श्रवण से सुख मिलता है तो फल के रूप में विश्राम की प्राप्ति होती है।

रामायण की कथा, राम की कथा की अपनी विशिष्टता है। हिमालय पर पवित्र मानसरोवर है। रामायण की कथा में "मानस-सर" है। मानसरोवर के पवित्र पानी को पीने राजहंस आते हैं। मानस सर का पवित्र जल पीने "परमहंस" आते हैं। मन रूपी हाथी जब उद्वेग में हो तो उसे मानस-सर में डुबोने से जीवन कृतकृत्य हो जाता है।

रामायण के प्रसङ्ग में सुख दुःख का कंचन कामिनी से जो सम्बन्ध माना जाता है वह कितना अस्थाई तथा अशान्ति का प्रतीक है, दुःख में नम्रता आती है, दुःख में प्रभु याद रहते हैं। अतः प्रभुता में प्रभु का और पद में पादुका का स्मरण रखना अति आवश्यक है अन्यथा अहंकार में मनुष्य खो जाता है। सती की कथा से सम्बन्धित प्रसंग में आपने स्पष्ट किया कि सती ने प्रभु कथा की और पति की अवहेलना की. फलस्वरूप मिथ्यावादिता का ही दोष नहीं लगा वरन् शरीर नष्ट करना पड़ा। शिव से विमुख जीव कभी सुख नहीं पा सकना, स्वर्ण में सौन्दर्य है परन्तु सुख और शान्ति नहीं है, दक्ष गर्व में चूर थे. यज्ञ में त्याग नहीं था, प्रतिशोध की भावना थी, नारायण नहीं थे अतएव यज्ञ का विध्वंस होना अवश्यम्भावी था। राम में अनुराग नहीं होने से जीवन में सभी दुर्दशायें उत्पन्न होती हैं। भजन समर्थ बनाता है, समर्थता उसी के पास है जिसके आगे उस क्षेत्र में कोई दूसरा नहीं है जैसे सूर्य अग्नि और गङ्गा। जीव अपने को समर्थ मानकर दुःख भोगता है। भगवान् राम की मर्यादा एवं कृष्ण की लीला को समझने की चेष्टा करनी चाहिये, वही कृष्ण गोपियों के मध्य नृत्य करने पर समर्थ हो सकता है जो कालीय नाग के सिर पर नाच सकता है। वही शिव समर्थ है जो गरल पी सकता है और भुजंग का आभूषण बना सकता है और शीतलता में गंगा की धार भी बहा सकता है।

सती दूसरे जन्म में पार्वती हुई, नारद सरीखे गुरु के मन्त्र का प्रतिपालन किया, शिव हेतु तपस्या की और अपनी शिव प्राप्ति की हठधर्मिता को नहीं त्यागा, यह उनकी उत्कृष्टता का द्योतक और पावन चरित्र तथा भारतीय संस्कृति का ज्वलन्त स्वरूप है।

भगवान् शिव ने यद्यपि कामदेव को जला दिया, सांसारिकता का क्षय और अलौकिकता का प्रादुर्भाव शिव के चरित्र की उत्कृष्टता थी तथापि परब्रह्म परमेश्वर की गुरु याचना के शब्दों में पार्वती से परिणय सूत्र की स्वीकृति दी, फल स्वरूप बड़ा ही मनोरंजक और ऐतिहासिक गठबन्धन हुआ, आदि शक्ति भवानी और कल्याण महासागर महादेव एक हुये, संसार को आदर्श देने, त्याग तपस्या और भगवान् के अनुकूलता प्रति-कूलता की अमर कहानी कहते हुये।

भगवान् राम की कहानी में शंकर के प्रसंग की सर्वमान्यता विचित्र है परन्तु यह भक्ति भावना की कसौटी भी है जो शिव का भक्त नहीं वह राम का क्या भक्त होगा।

शंकर प्रिय मम द्रोही, शिव द्रोही मम दास।
ते नर करहि कलप भरि घोर नरक महुँ वास।

अखण्ड भारत के सभी स्थान भारत में रहने चाहिये

रामकथा करते हुए श्रीमुरारी बापू ने कहा कि अखण्ड भारत के सभी स्थान भारत में ही रहने चाहिये। पुराणों में वर्णित सभी पवित्र स्थान भारत के हैं। सभी तीर्थ,

हिन्दू धर्म की

जय

जयकार हो।

—एक भक्त

कैलाश, मानसरोवर काशी विश्वनाथ, राम-कृष्ण जन्म भूमि आदि सभी स्थान हमारे हैं। रामकथा के क्रम में २० हजार श्रोताओं की उपस्थिति में मुरारी बापू ने जब यह उद्घोषणा की तो सारा राम-भक्ति पूर्ण वातावरण देश भक्ति की भावना से ओत-प्रोत हो गया। श्रीमुरारी बापू ने जब मधुर एवं ओजस्वी स्वर में "जहां डाल-डाल पर सोने की चिड़िया करती बसेरा, यह भारत देश है मेरा" गीत सुनाया तो सारे श्रोता मंत्र मुग्ध होकर झूम उठे।

रामकथा का प्रभाव

'युगसन्त' श्रीमुरारी बापू ने कहा कि किसी भी ऐसे व्यक्ति को जो धार्मिक भावना से कोसों दूर है, धार्मिक वातावरण में लाने के लिये उस पर बलात् दबाव नहीं डाल करके उसको इस तरह से प्रेरित करें कि वह स्वयं ही उसके महत्व को समझे व अनुभव कर उस ओर अग्रसर हो जाये। इस सम्बन्ध में श्रीमुरारी बापू ने भक्तों को अपने विदेश प्रवास (ब्रिटेन) का प्रसङ्ग सुनाते हुए कहा कि मैं लन्दन में रामकथा कर रहा था, तो एक माता अपने पुत्र को सत्संग में लाने को प्रेरित कर रही थी, परन्तु पुत्र की इच्छा नहीं थी, वह पुत्र माता से कहता था कि वहां आपको क्या मिलता है, इस तरह से छः दिन व्यतीत हो गये, सातवें दिन माता ने उसे कहा कि मुझको कथा स्थल तक छोड़ देना फिर चले आना। पुत्र ने सोचा चलो छोड़ आते हैं। रास्ते में माता ने कहा कि सिर्फ एक मिनिट तुम वहां जूते पहने ही खड़े रहना। माता को छोड़ने के पश्चात् पुत्र वहां पांच मिनिट खड़ा रहा, तो उसे कुछ अच्छा लगा, दूसरे दिन पुत्र ने स्वयं माता से कहा "चलो मैं तुम्हें छोड़ आऊँ" दूसरे दिन आधा घन्टा कथा का श्रवण किया, कथा समाप्ति के दिन वह तृप्त नहीं हो सका, आज वही विदेशी युवक रामकथा का श्रवण करने के लिये हर साल भारत आता रहता है। "यह है कथा का महत्व" अतः अपने आत्मीय जनों को धार्मिक वातावरण में लाने के लिये उपरोक्त साधारण एवं सहज युक्ति को अपनाना श्रेयस्कर है।

निम्बार्कतीर्थ सरोवर हेतु
श्रीमुरारी बापू का आह्वान

रामकथा सुनाते समय श्रीमुरारी बापू ने सभी श्रोतागण एवं जनता से कहा कि मैं व्यासगद्दी से यह प्रार्थना करता हूं कि "निम्बार्कतीर्थ सरोवर" के जीर्णोद्धार हेतु अधिकाधिक धन राशि समर्पित करें।

श्रीमुरारी बापू ने कहा कि इस तीर्थ स्थान का पुराणों में भी वर्णन है-यह महान् तीर्थ स्थल है। ज्ञातव्य है कि "रामकथा समिति" की ओर से दिनांक २१-४-९० से २९-४-९० तक ९ दिवसीय यह रामकथा का आयोजन निम्बार्कतीर्थ सरोवर के जीर्णोद्धार हेतु ही किया गया है। इस कार्यक्रम से प्राप्त राशि से पवित्र निम्बार्कतीर्थ सरोवर का जीर्णोद्धार किया जायेगा। जिससे सरोवर में जल स्थायी रूप से भरा रह सके।

साथ ही श्रीमुरारी बापू ने कहा कि यह स्थान पवित्र तीर्थ है यहां जगद्गुरु-चक्रावतार विराजमान हैं। इस स्थान का नाम ऐसा होना चाहिये कि युगों-युगों तक इस स्थान का नाम भगवान् श्रीनिम्बार्क से जुड़ा रहे। श्रीमुरारी बापू ने करतल ध्वनि के बीच कहा कि इस जन अदालत, लोक अदा-

लत में प्रस्ताव पास कर सरकार को भी भेजना चाहिये। इस कथा स्थल पर भगवान् राघवेन्द्र की सरकार में तो यह प्रस्ताव पेश हो ही चुका है।

श्रीमुरारी बापू ने रामकथा को महा-मोह विनाशक बताया। आपने कहा कि राम ने तो मोह रूपी रावण को मारा लेकिन रामकथा महामोह रूपी महिषासुर को मारने वाली कालिका के समान है। राम तो चन्द्रमा हैं जो हमसे बहुत दूर हैं किन्तु रामकथा घर-घर पहुँचने वाली चन्द्र किरणें हैं। यदि हमारा मन रूपी द्वार एवं इन्द्रियाँ रूपी खिड़कियां खुली हुई हैं तो उनके माध्यम से रामकथा की चन्द्र किरणें हमारे अन्तर्मन में अवश्य ज्ञान की चांदनी फैलाएगी। आपने शिवजी व भवानी की कथा के जरिये यह समझाया कि रामकथा की उपेक्षा करना महापाप है। अगस्त्य ऋषि के आश्रम में "जगज्जननी" "भवानी" ने रामकथा की अपने मन से अवहेलना की जिसके परिणाम स्वरूप वहां से लौटते वक्त वह केवल दक्षराज की कन्या, सती रह गई, जग जननी के गौरव से उसे वंचित होना पड़ा। मानस के रामकथा प्रसंग का उल्लेख करते हुए मुरारी बापू ने स्पष्ट किया कि राम के स्वरूप सम्बन्धी भारद्वाज मुनि की प्रश्नाकुल जिज्ञासा शांत करने के लिए ऋषि याज्ञवल्क्य ने पहले शिव कथा सुनाई। शिव कथा, राम भक्ति का प्रवेश द्वार है। रामकथा के अमृत को भरने के लिए शिव कथा सर्वोत्तम पात्र है। शिव कथा में ही मुरारी बापू ने भक्तिरस से सराबोर वह वृत्तान्त सुनाया जिसमें अपने पति अविनाशी शिव के समझाने पर भी भवानी रामकथा को अनसुनी करती है, राम के परब्रह्म रूप पर शंका करती है, राम की परीक्षा लेने के लिए स्वयं सीता का रूप धारण करती है और अन्ततः विश्वनाथ (शिव) द्वारा त्याग दी जाने पर पुनः शिव को प्राप्त करने के लिए ८७ हजार वर्षों तक तपस्या करती है।

भगवान् के अवतार का लक्ष्य केवल दुष्टों को मारने तक ही सीमित नहीं है, प्रत्युत् वे भक्तों-सन्तों को सुख देने के लिए ही इतनी लीलाएँ करते हैं। इसीलिए तो "रामचरित्र मानस" को उन्होंने शंका से समाधान की यात्रा का महाकाव्य माना है। वे राम कौन हैं जिनकी वन्दना अविनाशी शिव भी करते हैं। राम का ब्रह्म रूप क्या है। आखिर परमात्मा अवतार क्यों लेते हैं? प्रभु को माया क्यों नहीं व्यापती? आदि जिज्ञासाओं एवं जीवात्मा परमात्मा सम्बन्धी विविध शंकाओं का समाधान इस महाग्रन्थ में उपलब्ध है।

भगवान भी सन्त के वश में क्यों रहते हैं, इसे स्पष्ट करते हुए उन्होंने बताया कि सन्त कभी किसी से कुछ नहीं मांगते। समुद्र को देखिये, वह नदियों का याचक नहीं है, वह तो आश्रय-दाता है। नदियाँ स्वयं उमड़ती हुई सागर में समाहित होती हैं। ऋषि और साधक भी नहीं मांगते। वे तो अपने आपको इतना सक्षम बना लेते हैं कि सब कुछ उनके चरणों में उपलब्ध रहता है। अतः किसी से मांगो मत, खुद को सक्षम बनाओ। यदि कुछ मांगना ही पड़े तो प्रभु की भक्ति मांगो। भक्ति ही संसार-सागर से तारने में सक्षम है।

"गोरा धोरा" की धरती राजस्थान में ऐसे ही सन्तों व भक्तों की पुण्य चेतना आप्लावित है। उन्होंने "धरती गोरा धोरां री" "सारे जहां से अच्छा" और "पग

चतुर्थ दिवसीय श्रीरामकथा प्रवचन

(कथासार दिनांक २४ अप्रेल १९९० ई० मंगलवार)

प्रात:कालीन प्रवचन में मंगलाचरण के पश्चात् भक्तिरस का विवेचन करते हुये श्रीबापू ने कहा निम्बार्क विचारधारा के आदि प्रवर्त्तक श्रीसनकादि ऋषि, जीवन मुक्त होने पर भी निरन्तर भक्तिरस का पान करते रहते हैं, निम्बार्कीय परम्परा बहुत पुरानी एवं सनातन है। इस परम्परा का सनकादि परम्परा, हंस परम्परा और नारद परम्परा के नाम से भी सम्बद्ध शास्त्रों में प्रसिद्धि है। आगे चलकर चक्रराज सुदर्शन के अवतार भगवान् श्रीनिम्बार्क के धराधाम पर पधारने पर यह निम्बार्कीय परम्परा नाम से विख्यात हुई। प्राचीन सभी भक्ति परम्पराओं में निम्बार्कीय परम्परा अति प्राचीन है।

श्रीबापू ने बड़े गौरव के साथ व्यक्त किया कि हम स्वयं इसी निम्बार्कीय परम्परा से सम्बन्धित हैं। निम्बार्कीय परम्परा में यह एक विशेष आदर्श है कि भगवान् निम्बार्क ने किसी भक्ति परम्परा का खण्डन नहीं किया। द्वापर के अन्त में भगवान् निम्बार्क का प्राकट्य हुआ। सरस एवं सरल युगल सेवा भगवान् निम्बार्क की देन है। यह तपस्वी भक्तों की अनूठी परम्परा है। हजारों वर्षों से इस युगल उपासना के माध्यम से जीव अपना कल्याण करते आ रहे हैं. 'अंगेतु-वामे वृषभानुजां मुदा" इस वेदान्त कामधेनु के श्लोक की भाव पूर्ण व्याख्या करते हुये ऐसा लगा कि युगल छवि का साक्षात् स्वरूप सामने समुपस्थित है। युगल सेवा सनातन सेवा है, ब्रह्मवैवर्तपुराण, राधिकोपनिषद् आदि प्रामाणिक ग्रन्थ इस विचारधारा को प्रमाणित करते हैं।

श्रीबापू ने कहा कि—श्रीनिम्बार्कीय परम्परा की परम पावन इस धरा पर हमें भी श्रीरामकथा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। इस परम्परा में संकुचित भाव कहीं भी नहीं दिखाई देता। हमारे वर्तमान पूज्य आचार्य चरण भी प्रसङ्गवश कहते हैं श्रीसर्वेश्वर भगवान् राम ही हैं। इस परम्परा में यही एक गौरव की बात है। हंस, नारद, सनकादि किसके नहीं हैं सब के

घुंघरू बांध मीरा नाची रे" गीतों से रस माधुर्य बरसाते हुए कहा कि इस तपोभूमि पर "निम्बार्कतीर्थ" जैसा अलौकिक तीर्थ भी है। भारत को सांस्कृतिक अस्मिता के प्रतीक इस पौराणिक तीर्थ का नाम अब सलेमाबाद से बदल कर "निम्बार्कगढ़" रख दिया जाना चाहिये।

रामकथा मर्मज्ञ मुरारी बापू ने रूप और स्वरूप के बीच अन्तर समझाते हुए बताया कि रूप अनेक होते हैं किन्तु स्वरूप एक ही होता है। रूप बदलता रहता है, स्वरूप एक सा रहता है। रूप नश्वर है, स्वरूप शाश्वत। रूप अंहकार उत्पन्न करता है, स्वरूप ज्ञान का आलोक जगाता है। अत: रूप के आकर्षण में मत भटको। स्वरूप को पहचानो। इसके लिए सत्संग करो, भक्ति करो।

★

हैं। इसी प्रकार भगवान् निम्बार्क, आचार्य परशुराम, पूज्य श्री "श्रीजी" महाराज भी सब के हैं। यह इस परम्परा के औदार्य के कारण है।

युगल उपासना के अन्तर्गत श्रीराधा विरह भक्ति का विग्रह है। ऊपर से नीचे आवे उसको धारा कहते हैं और नीचे से ऊपर ले जावे उसे राधा कहते हैं। 'श्रीराधे-राधे' कहना ही ऊपर उठाने का भाव है। यहां विरह भक्ति का विशेष महत्व है। राधा नहीं होती तो कृष्ण भक्ति का इतना उजागर स्वरूप हमारे सामने नहीं होता। संयोग का सुख नश्वर होता है, किन्तु विरह का सुख चिरस्थाई होता है। प्रियतम के विरह में आंख का आँसू टूटता नहीं और योगियों से भी अधिक तन्मयता की स्थिति विरह में होती है। विरह भक्ति के सन्दर्भ में आचार्य परशुराम कहते हैं—

परसा कौन पठाइए,
सन्मुख सन्देश।
परसा प्रीतम राम बिनु,
निश दिन मन में छोभ।

इस परम्परा में राम और कृष्ण में कहीं भेद नहीं है। विरही की अवस्था योगी से भी बढ़कर कही गई है। योग में मन के निरोध करने के अनेक कठिन साधन हैं किन्तु यहां मन के निरोध के लिये भक्ति एक स्वाभाविक और सरल उपाय है। इस भक्ति की प्रक्रिया में मन स्वत: एकाग्र हो जाता है यहां योग शास्त्र आदि की आवश्यकता नहीं केवल भाव की आवश्यकता होती है। गोकुल की गवार गोपियों के मन की एकाग्रता की स्थिति को बड़े-बड़े योगी भी प्राप्त नहीं कर सकते। मन की एकाग्रता के लिये यह भक्ति सर्वोत्तम उपाय कहा गया है।

गोकुल के ग्वाल बाल दिन भर भगवान् कृष्ण के साथ रहते हैं जब घर पर आये तो कन्हैया ने सब को अपने-अपने घर जाने को कहा-एक बालक रो पड़ा कन्हैया मैं तेरे विरह में रह नहीं सकूंगा। वह बालक मन को कृष्ण के साथ छोड़कर जब घर गया, खाना पीना अच्छा नहीं लगा, रात में उसको नींद नहीं आयी। मैया से कहता है मुझे कृष्ण कथा सुनाओ तो ही नींद आयेगी। लौकिक दृष्टि से भी अनुभव में आता है विरह में जितना मन एकाग्र होता है अन्य उपायों से नहीं होता। मथुरा में कन्हैया के लिये एक बार देवकी ने भोजन परोसा तो कन्हैया भोजन नहीं करके अटारी में बैठकर मन्द-मन्द रोने लगा, देवकी भी रोने लगी। उद्धवजी स्थिति को देखकर कन्हैया के पास पहुँचे तो कन्हैया पीताम्बर से अपने आँसू पोंछ रहे थे, इसका कारण पूछने पर कृष्ण कहते हैं "ऊधो ब्रज विसरत नाहीं" भोजन के दिव्य पदार्थों में गोरस को देखते ही मुझे ब्रज, यशोदा और नन्द की याद आ जाती है, मथुरा में श्रीकृष्ण व्रज के विरह में तन्मय हैं। विरह भक्ति में मन की एकाग्रता का यह कितना उत्तम उदाहरण है।

श्रीरामकथा मर्मज्ञ युगसन्त श्रीमुरारी बापू ने संध्याकालीन कथा पारायण में शिव तत्व शिव शृङ्गार और शिव कथा के उपदेशात्मक पक्ष का व्यवहारिक विश्लेषण किया। आपने बताया कि शिव का रूप अनासक्ति का प्रतीक है। शिव का स्वरूप कालजयी मङ्गल चेतना का उद्बोधक है। शिव कथा मनुष्य के मन रूपी पात्र का प्रक्षालन कर उसे पवित्र बनाती है। शिव कथा काम पर विजय पाने, वासना को जलाने तथा शरीर की उर्जा को सृजन में लगाने की प्रेरणा है।

कामदेव को शिवजी द्वारा भस्म किये जाने के प्रसङ्ग का रोमांचकारी पारायण करते हुये आपने समझाया कि काम के भस्म होने पर देवता खुश होते हैं, भोगी शोक करते हैं, देवता उत्सव मनाते हैं, भोगी गम में डूब जाते हैं। मनुष्य जीवन की सार्थकता इसी में है कि हम काम के अधीन न रहें, काम हमारे वश में रहे।

आपने बताया कि शिवजी के शरीर पर लगी राख इस सच्चाई को व्यक्त करती है कि शरीर नश्वर है, वह अन्ततः जलकर राख होना है। इसलिये शरीर में आसक्ति मत रखो। उनके गले में लिपटा सर्प काल (मौत) पर विजय पाने का द्योतक है। शिव इसीलिये कालजयी, अविनाशी है। भाल पर चन्द्रमा अन्तः करण की निष्कलुषता का तथा जटाओं से निकली गङ्गा विवेक की प्रतिरूप है। कानों में सर्प कुण्डल का तात्पर्य है निन्दा मत सुनो अन्यथा पाप लगेगा। शिव का वाहन "नन्दी" धर्म का स्वरूप है और प्रेरणा देता है कि धर्मानुसार आचरण करो। शिव के गण भूत-प्रेत अच्छे-बुरे विचारों के प्रतीक हैं। ये गण शिव को घेरे रहते हैं, इसका प्रतीकार्थ यह है कि हमारे कुविचार ही हमें शिव तत्व आत्मा ज्ञान तक नहीं पहुँचने देते हैं। इसलिये अपने विचारों की शुद्धि के लिये सचेष्ट रहो।

आपने बताया कि शिव और शक्ति तत्व प्रत्येक मनुष्य में व्याप्त है किन्तु उन्हें विकसित करना केवल सद्गुरु की कृपा से ही सम्भव है। स्वयं शिव के अनुग्रह से उनकी सास मैना के ज्ञान चक्षु खुले उसी भांति सद्-गुरु की कृपा से मनुष्य के अन्तःचक्षु खुल जाते हैं। श्रीमुरारी बापू ने इसी क्रम में नशा-निषेध पर जोर दिया। नशा नाश करता है, शरीर को नष्ट करता है और मन को कमजोर बनाता है। नशा इच्छा शक्ति जिजीविषा का भी क्षरण करता है। इस-लिये नशा मत करो। अपने देश की सनातन संस्कृति का दुग्ध पान करो। तभी राष्ट्र के लिये उपयोगी बन सकोगे। देश को नशेड़ियों और भंगेड़ियों की जरूरत नहीं है। स्वयं को स्वस्थ रखकर देश की भाषा-संस्कृति का विकास करो, राष्ट्रीय अस्मिता को पुष्ट करो।

मुरारी बापू ने शिव-शैलजा विवाह के कथा प्रसङ्ग में बताया कि पिता और पुत्र का सम्बन्ध दिव्य होता है। संसार में ऐसे तो अनेक पिता मिल जायेंगे जो अपने पुत्र की मृत्यु पर भी नहीं रोये हैं, किन्तु पूरी धरती पर एक भी ऐसा पिता नहीं मिलेगा जो अपनी बेटी को विदा करते वक्त न रोया हो। शकुन्तला की विदाई में ऋषि कण्व, सीता को विदा करते समय जनक और गौरी की विदा-वेला में हिमालय, कालजयी यश के स्वामी ये लोग भी रोये थे।

★★

प्रत्येक भारतवासी को स्वाध्याय करना चाहिये, स्तोत्र कण्ठस्थ करने चाहिये। इस देश का गौरव बढ़े, ऐसा आचरण करना चाहिये।

पंचम दिवसीय श्रीरामकथा प्रवचन

(कथासार दिनांक २५ अप्रेल १९९० ई० बुधवार)

श्रीमुरारी बापू ने रामकथा के भक्ति क्रम में कहा कि जिस स्थान पर यह रामकथा हो रही है वह पवित्र भूमि है यहाँ सर्वेश्वर प्रभु विराजते है। सनकादिकसेवित चने की दाल के बराबर श्रीसर्वेश्वर प्रभु का श्रीविग्रह पुरातन है, शायद ही कोई विग्रह इतना पुराना हो।

इस निम्बार्क परम्परा में ३५ वें आचार्य श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज हुए। श्री मुरारी बापू (हरिव्यासी) ने स्वयं के लिए कहा कि हम इन्हीं श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी की परम्परा से आते हैं। स्वयं श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज ने कहा है —

आचारज हरिव्यास के शिष्य सपूत अनंत।
परसा मुखिया एक है गादी अति महंत॥

श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज जिस काल के महापुरुष रहे उस काल खण्ड में भारतवर्ष में हिंसा का बोलबाला था। धर्म के नाम पर भी हिंसा होती थीं। शाक्तों के बलि के अपवित्र विधि विधान थे। देवी के नाम पर बलि दी जाती थी। श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज ने बहुत बड़ी क्रांति पैदा की। समाज को दिव्य विचारधारा प्रदान की। उन्होंने प्रसङ्ग सुनाकर कहा कि एक बार जहाँ आचार्यश्री अपने शिष्य वृन्द के साथ ठहरे हुए थे। पास ही देवी के सामने लोगों को बकरे को बलिदान करते देखा। यह देखकर आचार्यश्री के हृदय को बहुत ठेस पहुँची। सन्त हृदय हिंसा नहीं सह सकता। "वह हिंसा चाहे शस्त्र से हो या किसी को परास्त करने हेतु शास्त्र से। श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज ने अन्न-जल का त्याग कर दिया। देवी प्रकट हो गई। देवी ने कहा लोग मेरे नाम पर जीवों की बलि चढ़ाते हैं। "मेरे को वैष्णव दीक्षा दे दो" मेरे सभी भक्त वैष्णव हो जायेंगे।" देवी ने, शक्ति ने स्वयं वैष्णवी दीक्षा ग्रहण की। आचार्यश्री ने कहा—बलि चढ़ानी है तो कामवासना, कुविचार, कुदृष्टि, कुभावना क्रिया की बलि करो-ऐसी बलि से इतना रक्त बहे कि 'विरक्त' हो जाओ।

श्रीनिम्बार्क परम्परा में आगे आचार्यों ने क्या नहीं किया? इस पीठ के समस्त आचार्यों के 'विश्व कल्याण' में पूर्ण योगदान किया है। शेरशाह सूरी श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी के चरणों में बैठा। आचार्यश्री की कृपा आशीर्वाद से शेरशाह के सलीमशाह सूर पुत्र प्राप्त हुआ।

श्रीनिम्बार्क परम्परा महान् आचार्यों, विरक्त आचार्यों की परम्परा है। श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज एक व्यवस्था के प्रतीक थे। जिन्होंने उस काल खण्ड के समस्त कलुषित वातावरण को परम पावन पुनीत बनाया। ये आचार्य भक्त थे कवि थे। सचमुच जो भक्त होता है वह कवि हो जाता है। ऐसे महान् ऋषियों की बोली ऋचा बन जाती है।

श्रीमुरारी बापू ने कहा कि इस पवित्र निम्बार्कतीर्थ में यह कथा हो रही है।

निम्बार्क परम्परा दिव्य, पुरानी सनकादिक सेवित युगल की भक्ती की उपासना, भक्ति की परम्परा है। श्रीमुरारी बापू ने कहा कि भक्ति अच्छी लगती है। 'युगल विग्रह' अति सुन्दर है। राधा तो अतिसुन्दर है। राधाजी कितनी सुन्दर है प्रसङ्ग बताते हुए कहा कि स्वयं कृष्ण राधा को देखकर मुरली बजाना भूल गए।

जब देखी वृषभानुजा,
हिद बिच उठिहे हूक।
तब बंशी होठन पर रही,
फेर न लागी फूक ॥

भक्ति के बारे में बताते हुए आपने कहा कि भक्ति में कुछ बातें विरोध डालती है— बाधक है। देह को आत्मा मान लेना, भक्ति में बाधक है। देह तो आत्मा का वस्त्र है। देह तो वासना का बिम्ब है, आत्मा परमात्मा का विशुद्ध प्रतिबिम्ब। गीता में भी कहा है— "वासांसि जीर्णानि यथा विहाय" देह को आत्मा से भिन्न समझे।

भक्त को अपने जीवन में इष्ट और गुरु के अलावा किसी अन्य का आश्रय नहीं लेना चाहिये। रामायण में गुरु के लिए 'सद्गुरु' शब्द प्रयुक्त हुआ है। सद्गुरु ही है। भेद नहीं है। संसार में गुरु ही सद् है। जब गुरु शिष्य पर करुणा करके बहता है, बरसता है तब सद्गुरु हो जाता है। गुरु सहानुभुति है सद्गुरु समानानुभूति करता है। गुरु शिष्य के दुःख को सहानुभूति देकर शान्त करता है। शिष्य का दुःख सद्गुरु का दुःख बन जाता है। भक्त की भक्ति अव्यभिचारी हो। पवित्रता नारी की तरह। भक्त की माँग क्या है—मेरी मांग भरो आप मेरे मालिक हो जाओ। मन्दिर के परिक्रमा करते हैं। भगवान् की मूर्ति केन्द्र में है—परिक्रमा देना भांवर है— भगवान् को प्रति मान लेते है। इष्ट और गुरु के प्रति एकनिष्ठ हो मीरा की तरह "मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई" मन्त्र का परिवर्तन नहीं करना चाहिये।

रामचरित अति अमित मुनीशा।
कहि न सकहि सत कोटि अहीशा ॥
प्रणवऊ सोई कृपाल रघुनाथा।
बरनहु तासु विमल यश गाथा ॥

श्रीमुरारी बापू ने भगवान् श्रीराम के जन्म से कथा प्रसंग में कहा कि मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की कथा भगवान् शिव ने पार्वतीजी को सुनाई तो वह भी मर्यादा से। दिगम्बर भगवान् शंकर ने कैलाश शिखर पर एकान्त में भी वस्त्र पहिनकर सुनाई। रामकथा एक करताली है जिससे संशय के सभी पक्षी उड़ जाते है।

पूर्व के प्रासंगिक 'जय-विजय', 'प्रतापभानु' आदि प्रसंगों का वर्णन करते हुए कहा कि भगवान् राम की कथा के पूर्व रावण, राक्षसों के प्रादुर्भाव की कथा का वर्णन आवश्यक हुआ क्योंकि रात्रि के पश्चात् ही सूर्योदय होता है इसलिये निशिचर वंश की कथा पहिले और सूर्यवंश की कथा उसके पश्चात् सुनाई गई।

रघुकुलमणि दशरथ ने गुरु वशिष्ठ के घर जाकर चरण छूकर पुत्र कामना प्रकट की। गुरु वशिष्ठ द्वारा शृंगी ऋषि को बुलाकर यज्ञ करवाने, अग्नि द्वारा प्रकट होकर चरू प्रदान करने, कौशल्यादि को बुलाकर हवि को बांटकर कोशल्या, सुमित्रा, केकयी को देने, रानियों के गर्भवती होने आदि के प्रसंग में मुरारी बापू ने गुरु की महत्ता बताते हुए कहा कि सद्गुरु शिष्य के सभी कार्य

सम्पन्न करवा देते है। "जो वशिष्ठ कछु हृदय-विचारा। सकल काजू भा सिद्ध तुम्हारा ।।" भगवान् साधारण मनुष्य की तरह जन्मे या अवतार के रूप में प्रकट हुए आदि प्रश्नों एवं गोस्वामीजी द्वारा वर्णित "जा दिन ते हरि गर्भहि आये" एवं "जेहि प्रभु प्रगट सो अवसर भयऊ" का सुन्दर सरस विश्लेषण करते हुए बताया कि प्रभु तो 'कर्तुं मकर्तुं मन्यथा कर्तुं सर्वसमर्थ' है। प्रभु चाहे तो जन्म भी ले सकते है और चाहे तो प्रकट हो सकते है। जब ईश्वर निराकार से नराकार होते हैं तो उदर में भी रह सकते हैं और उर में भी रह सकते हैं।

जोग लगन ग्रह बार तिथि
सकल भए अनुकूल।
चर अरु अचर हर्ष जुत,
राम जनम सुख मूल ।।
नौमो तिथि मधुमास पुनीता।
सुकल पच्छ अभिजित हरि प्रीता ।।

उन क्षणों में शीतल मन्द सुगन्ध समीर बहने लगी जंगल कुसुमित हो उठे सभी नदियाँ अमृतमयी हो गई। सरयू में बाढ़ आ गई, सरयू जैसे बोल उठी यह बाढ़ नहीं है, सदा मुझे दौड़कर समुद्र के पास जाना पड़ता हैं। आज सौभाग्य से समुद्र-स्वयं उतर आया है। सरयू भरने लगी, गागर में सागर भर आया स्वयं ब्रह्म कौशल्या के घर आया है।

सो अवसर विरंचि जब जाना,
चले सकल सुर साजि विमाना।

देवता विनती करने लगे—

भये प्रकट कृपाला दीन दयाला कौशल्या हितकारी।

सारे अवध में प्रसन्नता छा गई !

दशरथ पुत्र जन्म सुनि काना।
मानहुं ब्रह्मानन्द समाना ।।

श्रीमुरारी बापू ने राम जन्म की कथा का मधुर स्वरों में गाकर ओजस्वी वाणी में यह वर्णन किया तो ३० हजार श्रोता जैसे आज ही इसी क्षण भगवान् श्रीराम ने जन्म लिया है—खुशी से भक्ति भाव से ओत-प्रोत होकर झूम उठे। सुगन्धित पुष्प, गुलाल उछालने लगे सभी समवेत स्वर में गाने लगे—
'विप्र धेनु सुरसंत हित लीन मनुज अवतार।'

इस उत्सव का वातावरण के स्रष्टा श्री मुरारी बापू ऐसे लग रहे थे जैसे रामभक्त तुलसीदासजी स्वयं कथा गान कर रहे हों। यह उक्ति चरितार्थ हो गई कि जो कथा सुनाते हैं उसे वाचक कहते हैं और जो रामकथा गाते है उसे मुनि कहते हैं।

मंत्र जाप मम प्रकटि सुवासा।
पंचम भजन सो वेद प्रकाशा।

अहंकार और ममता से मुक्ति— "निर्ममता निरहंकार" की भावना। ममता केवल भगवान् से—तुलसी ममता राम सो, समता सब संसार, ममता नहीं छूटे तो ममता को बदल दो भगवान् के प्रति। झूठ बोलना नहीं छूटे तो ठाकुर के दरबार के भाट बन जाओ। भगवान् को अर्पित करने से वृत्ति का उर्ध्वीकरण हो जाता है।

अस अभिमान जाई नहीं मोरे।
मैं सेवक रघुपति पति मोरे ।।

परमात्मा के स्वरूप में मानवी भाव का आरोपित नहीं करना चाहिये। और अपने को सदा वैष्णव समझो अपने आपको अवैष्णव नहीं समझना। दैत्य के बेटे प्रह्लाद ने भी अपने को वैष्णव माना हम तो मानव है। सभी वैष्णव है—

एक पिता के विपुल कुमारा।
होहि पृथक गुण शील अचारा ।।

अपने आपको देखने से नहीं सर्वशक्तिमान् भावना को स्वरूप में भावना से देखने से भक्ति अमिट होती है सभी बाधायें दूर हो जाती है भगवान् भक्त की कभी पत्नी कभी बालक किसी भी रूप को प्रेरित कर रक्षा करते है।

श्रीमुरारी बापू ने कहा कि कथा में आनन्द है। कथा में श्रोता और वक्ता को आनन्द आने का कारण बताते हुए कहा कि शास्त्र एवं सन्तों के प्रति श्रद्धा अनुभूति, स्थान प्रभाव, सन्तों का सामीप्य इसका प्रमुख कारण है श्रद्धा का सम्बन्ध भावना से है कभी-कभी श्रद्धा अदृश्यमय से भी उत्पन्न होती है। श्रद्धा भाव के लिये उत्तम स्थिति यह है कि भाव-दीक्षित हो।

अनुभूति का विश्लेषण करते हुए श्री मुरारी बापू ने कहा कि व्याख्या पराई होती है, अनुभव अनुभूति स्वयं की। हृदय में जो दृढ़ हो जाय विस्मरण न हो अन्तर से अन्दर से हाँ कहनी पड़े जाय काच के सामने मस्तक झुकाने पर छाया अपने आपका मस्तक झुकाते हुए दिखाई देगी। श्रीमुरारी बापू ने कहा कि रामायण में अनुभव की प्रधानता है-

निज अनुभव अब कहहु खगेशा।
बिनु हरि भजन न जाई कलि क्लेशा।।
उमा कहहु मैं अनुभव अपना।
सत हरि भजन जमात सब सपना।।

स्थान का प्रभाव मन पर होता है तीर्थ स्थान, गंगा, केदार मान सरोवर, प्रयाग आदि स्थानों पर कथा का विशेष आनन्द होता है। श्रीवल्लभाचार्य ने कहा है—"तीर्थ पर्यटन श्रेष्ठ"।

सन्त सभा समागम, सामीप्य भी आनन्द का कारण बनता है। सबकी अपनी-अपनी चेतना का विस्तार होता है। गोस्वामीजी ने कहा है—

संत सभा चहुँ दिशि अमराई।
श्रद्धा ऋतु बसन्त संग आई।।

श्रीमुरारी बापू ने कहा कि जहाँ कथा होती है वहाँ अशरीरी देवताओं और ऋषियों का तीर्थों का गंगा, यमुना, सरस्वती जैसी पवित्र नदियों का अदृश्य शरीर रूप में आगमन होता है। मुरारी बापू ने भाव विभोर होकर कहा कि "हमारे संग—संग चले गंगा को लहरे।"

भक्ति मार्ग में देह भाव को भूलना पड़ता है नरसी मेहता ने भगवान् भूत भावन गोपनाथ की कृपा होने पर 'रास रासेश्वर के महारास दर्शन' का वर भोगा। स्वयं शिव ने पार्वती से 'महारास' में ले चलने को कहा। भगवान् शिव को भी गोपी का वेश बनाना पड़ा। नरसी–मेहता गोपी वेश में रास में गए पूर्णिमा का पूर्व चन्द्रछिटक रहा था फिर भी मशाल जलाली। मशाल के साथ-साथ हाथ जल गए। पर नरसी को देह का मान ही नहीं था। यह है भक्तिमार्ग की उत्कृष्टता।

आज हम युगों-युगों के बाद रामकथा गाते हैं—सबको स्वाभाविक रूप से लगता है यह हमारी कथा है तो उस समय जब स्वयं रघुनायक प्रकट हुए तो कैसा रहा होगा—

ग्रह-ग्रह बाज बधाव
सुभ प्रगटे सुषमाकंद।
हरषवंत सब जहँ तहँ
नगर नारि तर बृंद।।

श्रीमुरारी बापू ने रामजन्म के समय के प्रसंग आदि के क्रम में कहा कि सब प्रसन्न थे पर चन्द्रमा दुःखी था। प्रभु ने चन्द्रमा से पूछा मेरे प्राकट्य पर सब सुखी हैं अकेले

तुम दुःखी क्यों हो ? तो चन्द्रमा ने कहा आप दिन के समय प्रकट हुए, इस कारण मैं आपके दर्शन नहीं कर सका इसलिए दुःखी हूँ । प्रभु ने कहा अब अगली बार द्वापर में जब कृष्ण अवतार लूंगा तो रात्रि का समय होगा—सारा संसार सोया होगा तुम अकेले जगते रहना । और अब मेरे नाम के आगे सूर्यवंशी होते हुए भी तुम्हारा नाम जुड़ जायगा ।

राम जन्म के दिन एक मास का दिन हो गया रात आई ही नहीं ।

"जब जीव के हृदय में राम का प्राकट्य हो जाता है तो जन्म-जन्म का अन्धेरा मिट जाता है । ज्ञान का प्रकाश हो जाता है । मोह नष्ट हो जाता है । ईश्वर को न भूतकाल लगता है न भविष्यकाल, वहां वर्तमान ही रहा है । सूर्य प्रभु के दर्शन की प्रतीक्षा में स्थिर से हो गए । एक माह बाद विदा ली ।

श्रीमुरारी बापू ने ऋषि मुनि देवता, बालरूप प्रभु राम के दर्शनों को उत्सुक भगवान् शंकर, काकभुशुण्डजी के अवध में आगमन एवं वेश बदल कर दर्शन करने गोद में लेने आदि के प्रसंग सुनाये ।

सुनाते हुए कहा—"युग बीत गए पर राम नाम कितना नूतन लगता है"

कितना दिव्य नाम है ? महामन्त्र, परम विश्राम स्थल । जब वशिष्ठजी को नामकरण संस्कार हेतु बुलाया तो यही नाम रखा ।

जो आनन्द सिंधु सुखरासी ।
सीकर तें त्रैलोक सुपासी ।।
सो सुखधाम राम अस नामा ।
अखिल लोक दायक विश्रामा ।।

भरत-विश्व का भरण पोषण जो करे तृप्ति प्रदान करे । भरत त्याग का प्रतीक है । त्याग ही तृप्ति प्रदान करता है ।

बिस्व भरत पोषन कर जोई ।
ताकर नाम भरत अस होई ।।
जाके सुमिरत ते रिपु नासा ।
नाम शत्रुहन वेद प्रकासा ।।

शत्रुघ्नजी रामायण के मौन पात्र हैं, शत्रुघ्न मौन रहते हैं । शब्द ब्रह्म का रूप है हमें किसी को परशु बचन-कठोर वचन नहीं बोलना चाहिये । मौन रहने पर किसी से शत्रुता ही नहीं होगी । बाहर के शत्रुओं से लड़ना सरल है पर अन्दर के शत्रु से दुष्कर है ।

वशिष्ठजी ने लक्ष्मण का नामकरण सबके अन्त में किया जबकि उनका तीसरा क्रम था । लक्ष्मण का क्रम अन्त में आया । श्रीमुरारी बापू ने इस प्रकार नामकरण संस्कार का बड़ा सरस मार्मिक विवेचन करते हुए भगवान् राम की बाल लीलाओं का कथा में वर्णन किया । "घुटरन चलत रामचन्द्र बाजत पैजनिया" । बाल रूप प्रभु राम द्वारा कौशल्या को अखिल ब्रह्माण्ड का दर्शन करवाया तो कौशल्या को लगा कि जिसे वह अपना पुत्र समझती है वह तो सम्पूर्ण विश्व का पिता है ।

राजा दशरथ भोजन के समय राम को बुलाते है राम नहीं आते-माता कौशल्या जब बुलाती है तो 'ठुमुकु ठुमुकु प्रभु चलहि पराई' तो आ जाते हैं दशरथ ज्ञान है कौशल्या भक्ति है । कई उदाहरण बिभीषणादि के सम्बन्ध में देकर भक्ति की महत्ता का प्रतिपादन श्री मुरारी बापू ने किया ?

बिना भक्ति के ज्ञान लेकर प्रभु को देख तो लेंगे पर पकड़ नहीं सकते । संसार को साधन और प्रभु को साध्य बनाकर प्रभु को

षष्ठ दिवसीय श्रीरामकथा प्रवचन

(कथा सार दिनांक २६ अप्रेल १६६० ई० गुरुवार)

भगवत् वन्दना एवं मंगलाचरण के पश्चात् श्रीमुरारी बापू ने कहा कि "मन के समस्त विचारों को निर्मल करके और समस्त उपाधियों को छोड़कर इनसे मुक्त होकर, केवल भगवान् हृषीकेश श्रीकृष्ण का ही निष्काम तत्परता से सेवन करना ही सच्ची भक्ति है।"

हम भक्ति करते हैं कई बार कोई न कोई उपाधि कारण होती है। कई प्रकार के कारणों से हम भक्ति की ओर मुड़ जाते हैं। हम ही नहीं ध्रुव भरत जैसे कई पौराणिक कालीन महान् भक्त भी उपाधियों के कारण भक्ति की ओर प्रवृत हुए। निम्बार्क परम्परा कहती है-सच्ची भक्ति उसे कहते हैं जो सर्वोपाधियों से मुक्त हो। उपाधियों को छोड़ना बड़ा कठिन है, अत: जीवन को ऐसा बनाया जाय कि उपाधियां हमको छोड़ दे। तत्परता भक्ति का प्रथम लक्षण है भोगों के प्रति धन के प्रति भी तत्परता होती है, तड़फ होती है पर इस प्रकार की तत्परता सकाम है। तत्परता निष्काम और निर्मल होनी चाहिये केवल प्रभु श्रीकृष्ण के प्रति, युगल सरकार के प्रति ही होनी चाहिये।

भक्ति के सम्बन्ध में आचार्यों ने अपने अनुभवों से अनुभूतियों से शास्त्रों के माध्यम से व्यवस्था प्रदान की है हमें तो उससे लाभान्वित होना है।

नितान्त एकान्त में निर्विकल्प दशा में जो चेतना प्रकट होती है, वेदान्त जिसे चिदाकाश कहता है ऐसे निर्विकल्प चित्त में प्रेरणा प्रकट होती है भारतीय आध्यात्म में उसे शास्त्र कहा गया है। और भारतीय ऋषियों के ऐसे निर्विकल्प चित्त से ही भगवत्प्रेरणा से शास्त्रों का सृजन होता है।

श्रीमुरारी बापू ने उदाहरण देते हुए कहा कि भगवान् के प्रति तत्परता चैतन्य महाप्रभु और मीरा की तरह होनी चाहिये।

मीरा-व्रज में गई। लोगों ने कहा कृष्ण को पांच हजार वर्ष हो गए अब कृष्ण कहां मिलेगा। कृष्ण यहां से चला गया। वह तो

प्राप्त किया जा सकता है। पीठ पर दृष्टि रखने से नहीं सन्मुख जाने से ही राम मिलेंगे।

सुनहु विभीषण प्रभु के रीति।
करहिं सदा सेवक पर प्रीति॥

श्रीरामजन्म महोत्सव

श्रीरामकथा के अन्तर्गत श्रीराम जन्मोत्सव बड़ी धूमधाम से जन समूह की हार्दिक उमंग से मनाया गया। इस महोत्सव को विशेष रूप से सम्पन्न करने लिये आर्थिक सेवा श्रीमरोजकुमारजी खेमका जयपुर वालों की ओर से की गई। श्रीखेमकाजी केसरिया साफा बांध कर सपत्नीक इस महोत्सव को मनाते हुए भाव विभोर होकर परमानन्द का अनुभव कर रहे थे। श्रीबापू ने जन्म महोत्सव की ऐसे प्रभावी ढंग से भूमिका प्रस्तुत की कि सभी श्रोता मन्त्रमुग्ध होकर आनन्द सागर (मान सरोवर) में मग्न हो रहे थे। आज का यह दृश्य वर्णनातीत रहा। ★

पहिले दूसरों को पकड़ लेता है, फिर छोड़ देता है, बड़ा निर्मोही है क्यों उसके पीछे दौड़ रहो हो ? मीरा ने कहा, यह गलत है कि मैं कृष्ण के पीछे उसे पाने के लिए दौड़ रही हूँ मैं तो इसलिये दौड़ रही हूँ कि मुझे इसी में आनन्द आता है। कितनी निष्काम, निर्मल तत्परता।

चैतन्य कृष्ण का नाम सुनते ही दौड़ पड़ते थे—शरीर का भान नहीं रहता था कई बार वृक्षों से टकरा जाते थे-चोट लग जाती थी, रक्त बहने लगता था। ऐसी सच्ची तत्परता कृष्ण के प्रति चाहिये। केवल कृष्ण सेवन की ही अभीप्सा चाहिये।

भक्ति के कई प्रकार है।

श्रवणं कीर्तनं विष्णो, स्मरणं: पादसेवनम्।
अर्चनं वन्दनं दास्यं सख्यमात्मनिवेदनम्।।

श्रवण, कीर्तन, स्मरण शब्द प्रधान, पादसेवन, अर्चन, वन्दन देहप्रधान एवं दास्य सख्य, आत्म निवेदन भाव प्रधान भक्ति है। सर्वाङ्ग रूप से भक्ति करना है तो नवधा भक्ति शब्द प्रधान, देहप्रधान, मन प्रधान तीनों प्रकार की भक्ति में रत हो जायें। अगर हम चाहे प्रामाणिकता से इच्छा करें तो इस कलिकाल में भी भक्ति की उच्च स्थिति को प्राप्त कर सकते है। शरीर शब्द और मन तीनों हमारे पास है। शरीर, मन, शब्द को हर प्रकार से ठाकुर को समर्पित कर दो।

भक्ति में भी शुद्धि आवश्यक है। उपासक उपास्य, पूजाविधि, पूजा द्रव्य मंत्र जप शुद्ध होने अत्यन्त आवश्यक है।

पात्र में जमे हुए घृत को अग्नि के पास रखने से घृत पिघल जाता है पात्र खाली हो जाता है। जीवन रूपी पात्र में घृत रूपी विकारो का जमाव है। प्रभु के चरणों में बैठकर उपासना की अग्नि से तपाकर जीवन रूपी पात्र को विकारों से मुक्त करना चाहिये।

ठाकुर के श्रीविग्रह के आस-पास गन्दगी बिखरी है मक्खियां भिनभिना रही है, यह ठीक नहीं स्वच्छता रहनी चाहिये। उत्तमोत्तम दिव्योत्तम वस्त्रालंकार ठाकुर को समर्पित करना चाहिये। यदि घर शुद्ध नहीं तो अन्तःकरण शुद्ध नहीं रह सकता। ठाकुर का श्रीविग्रह इतना सुन्दर दिव्य हो कि उसके दर्शन से दृष्टि हटे ही नहीं उस पर मोहित हो जाय। पूजा विधि शुद्ध हो, पूजा द्रव्य शुद्ध हो, ताजा तुलसी दल, सुवासित पुष्प, प्रसाद आदि शुद्ध हो। मंत्र शुद्ध हो। मंत्र का प्रभाव चित्त पर पड़ता है। ऐसा मन्त्र ठीक नहीं जो चित्त को आक्रामक बना दे, भयानक बना दे।

सब कामनाओं, वासनाओं को प्रभु के समर्पित कर देना चाहिये। श्रीकृष्ण के युगल सरकार के शरणागत हो जाओ, प्रपन्न हो जाओ ताकि भक्ति से इसी जीवन में प्रभु की निकटता प्राप्त हो जाये। यह जीवन धन्य हो जावे।

महामुनि ज्ञानी विश्वामित्रजी जहाँ यज्ञ जप-तप करते हैं वहाँ मारीच और सुबाहु विघ्न डालकर परेशान करते हैं। तब विश्वामित्र चिन्ता करने लगे कि ये राक्षस कैसे मरें।

गाधितनय मन चिन्ताव्यापी।
हरि बिनु मरहि न निशिचर पापी।।

विश्वामित्रजी ने विचार किया कि प्रभु ने अवतार लिया है। राम लक्ष्मण को लाने का निश्चय कर विश्वामित्रजी राजा दशरथ के दरबार में पहुँचे। दशरथ ने विश्वामित्रजी

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ –

☎ दुकान : ३०२४
घर : ३०७७

रामेश्वरदास किशनगोपाल कामदार

कमीशन एजेन्ट

मदनगंज–किशनगढ़

☎ दुकान : २१८२, २८१६

श्यामसुन्दर अनिलकुमार

सूत के व्यापारी

कटला बाजार, मदनगंज–किशनगढ़

☎ : २७७७

श्रीवृन्दावन साईजर्स प्रा० लि०

साईज्ड भीम के निर्माता

ग्राम–परासिया, मदनगंज––किशनगढ़

विनीत–

–किशनगोपाल कामदार

को सम्मान सहित आसन पर बिठाया। चरण धोकर पूजन किया। विश्वामित्रजी को भोजन करवाया अपने चारों पुत्रों को सेवा में उपस्थित किया।

राजा दशरथ ने विश्वामित्रजी से आने का कारण पूछा तो ऋषि ने कहा कि राक्षस यज्ञ में विघ्न उपस्थित करते हैं, सताते हैं अतः यज्ञ रक्षार्थ राम-लक्ष्मण को मुझे दे दो।

अनुज समेत देहु रघुनाथा।
निसिचर वध मैं होव सनाथा।।

यह सुनकर राजा दशरथ ने कहा कि आपने यह बात विचार पूर्वक नहीं कही है।

चौथेपन पायऊ सुतचारी।
विप्रबचन नहीं कहेहु विचारी।।

मुझे सभी पुत्र प्राण प्रिय है - किशोर राम को तो मैं दे ही नहीं सकता। वशिष्ठजी के समझाने पर राजा दशरथ ने राम लक्ष्मण को विश्वामित्रजी को सौंप दिया।

पुरुष सिंह दोऊ वीर हरषि।
चले मुनि भय हरन।
कृपासिंधु मति धीर।
अखिल विश्व कारन करन।।

दोनों श्याम-गौर वर्ण भाई जिनके अरुण-अरुण नैन है, विशाल भुजाए है, कमर में पीत-पट कसे है, दोनों हाथों में जिनके सुन्दर धनुष है, सिंह के समान सुशोभित हो रहे है ऐसे राम-लक्ष्मण को लेकर विश्वामित्र ने मानो महानिधि प्राप्त करली।

चले जात मुनि दीन्हि देखाई।
सुनि ताड़का क्रोध करिधाई।।
एकहि बाण प्राण हर लीन्हा।
दीन जानि तेहि निज पद दीन्हा।।

मार्ग में राक्षसी ताड़का ने आक्रमण किया तो एक ही बाण में भगवान् राम ने ताड़का के प्राण हर लिये। फिर दीनदयालु प्रभु राम ने ताड़का को दीन समझकर मोक्ष प्रदान किया।

श्रीमुरारी बापू ने रामकथा प्रसंग में बताया कि विश्वामित्र को जब विश्वास हो गया कि भगवान् राम अवतार है। राम मार भी सकते है तार भी सकते हैं तब विश्वामित्र ने भगवान् राम को सभी दिव्य शस्त्र प्रदान किये। सभी संसाधन, विद्या, अनुष्ठान साधन फल, भगवान् राम के चरणों में अर्पित कर दिये।

बला अतिबला विद्या दे दी, जिससे भूख-प्यास नहीं लगे, भगवान् राम का शरीर तेज से प्रकाशित अतुलित बल सम्पन्न हो गया।

इसके पश्चात् राम-लक्ष्मण को अपने आश्रम पर लाकर कन्दमूल फलादि का भोजन करवाया और रात्रि विश्राम की आज्ञा प्रदान की।

प्रात कहा मुनि सन रघुराई।
निर्भय यज्ञ करहु तुम जाई।

प्रातःकाल भगवान् राम ने विश्वामित्र से कहा कि आप अब निर्भय होकर यज्ञ करिये। विश्वामित्र यज्ञ करने लगे और राम-लक्ष्मण रखवाली करने लगे। मारीचि और सुबाहु यज्ञ विध्वंस करने के लिये सेना सहित आये। भगवान् राम ने एक बाण मारीचि को मारा जिससे मारीच सौ योजन दूर समुद्र के पार जा पड़ा। फिर एक अग्नि-बाण से सुबाहु को मार गिराया। लक्ष्मण ने सारी निशाचर सेना को समाप्त कर दिया।

आकाश से जय - जयकार करके देवता स्तुति करने लगे।

श्रीमुरारी बापू ने कथा का तात्विक अर्थ बताते हुए कहा कि विश्वामित्र के पास सूत्र-मन्त्र, शस्त्र-शास्त्र, साधन-साधना सभी है पर स्वयं यज्ञ पूरा नहीं कर पाये। हमारे पास सब कुछ हो लेकिन राम आश्रय नहीं हो तो जीवन यज्ञ सफल नहीं हो सकता।

यज्ञ-साधन में मारीच-सुबाहु राक्षस बाधा डालते हैं। राम सत्य है और लक्ष्मण समर्पण। जीवन में सत्य और समर्पण नहीं तो साध्य की प्राप्ति संभव नहीं। जहाँ राम हैं वहाँ लक्ष्मण है। सत्य आयेगा तो समर्पण पीछे-पीछे आयेगा।

धनुष जग्य सुनि रघुकुल गाथा।
हरषि चले मुनिवर के साथा॥

मुनि विश्वामित्र से जनकपुरी में धनुष यज्ञ होने वाला है यह सुनकर हर्षित होकर भगवान् राम मुनिवर के साथ चले। मार्ग में एक आश्रम देखा जहाँ कोई मनुष्य, पशु-पक्षी, जीव-जन्तु नहीं था। मार्ग में एक शिला देह नारी देखी। विश्वामित्र ने राम-लक्ष्मण को अहिल्या के सम्बन्धित सारी कथा सुनाई।

विश्वामित्र ने प्रभु राम से कहा कि श्राप वश अहिल्या का पत्थर शरीर है। हे रघुवीर इस पर कृपा करो—

गौतम नारि श्राप बस,
उपल देह धरि धीर।
चरन कमल रज चाहति,
कृपा करहु रघुवीर॥

भगवान् श्रीराम के चरण का स्पर्श होते ही श्रापित शिला देह हाथ जोड़कर प्रभु के सम्मुख खड़ी हो गई अहिल्या का उद्धार हो गया।

रामकथा क्रम में इस प्रसंग का मार्मिक वर्णन करते हुए श्रीमुरारी बापू ने कहा कि भारतीय ऋषियों ने सन्तों ने किसी को पतित-पापी नहीं माना है। विश्वामित्र ने भारत के ऋषि ने साधु ने एक तिरस्कृत, नैराश्य में गिरी अहिल्या के उद्धार का प्रस्ताव रखा।

"पाप वश"—शब्द प्रयुक्त नहीं किया 'श्राप वश' कहा गोस्वामीजी ने रामायण में सुग्रीवादि के लिए भी बड़भागी कहा, किन्तु अहिल्या को अतिशय बड़भागी कहा है।

राम स्वयं विश्वामित्र के साथ चलकर उद्धार हेतु पहुँचे प्रभु की चरणरज धूलि का स्पर्श प्राप्त हो गया, अहिल्या काम को देखने गई तो आँखे बन्द हो गई पर जब आँखे खुली तो परमात्मा को पा गई बिना साधन अनुग्रह रघुपति कृपा भक्ति पा गई।

श्रीमुरारी बापू ने कहा कि यह कथा धैर्य कथा है—

अहिल्या भागी नहीं, जागी। छिपी नहीं, जो हरि रास्ते पर आ पड़ी इसलिये लोगों की ठोकरे खाते-खाते एक दिन प्रभु की ठोकर लग गई उद्धार हो गया। कोई धैर्य से प्रतीक्षा करे तो कोई न कोई सन्त आकर उसके लिये भगवान् से प्रार्थना करेगा स्वयं भगवान् उसके पास कृपा करने पहुंच जायेंगे।

विश्वामित्र के साथ राम लक्ष्मण गंगा स्नान करने के पश्चात् जनकपुरी पहुचे। जनकपुरी की शोभा को देखकर दोनों भाई हर्षित हुये विश्वामित्र राम लक्ष्मण सहित सुन्दर वाटिका में ठहरे। मिथिलापति जनक को अब यह समाचार मिले तो अपने मन्त्रियों के साथ विश्वामित्र से मिलने पहुंचे।

विश्वामित्र ने राम लक्ष्मण को बाग में जाने को कहा श्री मुरारी बापू ने राम-कथा प्रसङ्ग में कहा कि बाद में जाने को इस लिये कहा कि जनक के आने पर राम लक्ष्मण को सम्मान में खड़ा होना पड़ेगा। विश्वामित्र चाहते थे किसी भाँति पहले जनक, अयोध्या कुमारों के सम्मान में खड़े हों, जिससे अयोध्या का सम्मान बढ़े।

जनक विश्वामित्र के पास पहुँचे और इसी समय दोनों भाई वहाँ आ गये। रघुपति राम के आने पर सभी उनके सम्मान में उठे। जनक ने कहा कि इनको देखकर ब्रह्म-सुख से भी अधिक अनुराग हो गया है। मुनि ने हँस कर कहा राजन् तुम्हारे वचन से सही है, ये सभी के प्राण प्रिय हैं।

जनक विश्वामित्र राम लक्ष्मण को नगर में ले आए और सुन्दर महल में ठह राया।

लक्ष्मण की इच्छा देखकर भगवान् ने नगर देखने की आज्ञा मांगी और नगर भ्रमण हेतु चल पड़े। नगर वासियों को समाचार मिलते ही सभी नर नारी अपना काम छोड़कर राम लक्ष्मण को देखने इक-त्रित होने लगे आपस में चर्चा करने लगे।

नगर के पूव दिशा में जहाँ धनुष यज्ञ के लिए सुन्दर वेदिका बनाई थी। वहाँ राम लक्ष्मण पहुँचे। धनुष यज्ञ शाला देखकर वापस लौटे। प्रातः काल गुरु की आज्ञा पाकर राम लक्ष्मण पुष्प लाने राजा के बगीचे में गए।

इसी समय सीता सखियों के साथ गौरी पूजन के लिए आई। गौरी का विशेष अनु-राग से पूजन किया। अपने अनुरूप वर मांगा।

सीता के साथ सखियों में से एक सखी ने बगीचे में दोनों भाइयों को देख प्रेमवश सीता के पास आकार कहा कि दो सुन्दर राजकुमार बाग देखने आये हैं।

सीता मन में दर्शन की उत्कण्ठा जान-कर सभी सखियां प्रसन्न हुई। एक सखी ने कहा कि ये दोनों राजकुमार कल एक मुनि के साथ आए हैं। इन्होंने अपने रूप से नगर के सारे नर-नारियों को मोहित कर लिया है। जहाँ-तहाँ लोग इनके रूप का वर्णन कर रहे हैं। इन्हें अवश्य देखना चाहिए। उस सखी की यह बातें सुनकर सीता के नेत्र दर्शन को आकुल हो गए। सीता को नारद के वचनों का स्मरण होते ही हृदय में प्रेम उमड़ पड़ा। सीता सखियों के साथ चली।

श्री मुरारी बापू ने कथा क्रम में पुष्प वाटिका प्रसङ्ग का बड़े सुन्दर ढ़ंग से वर्णन करते हुए कहा कि पुष्प वाटिका संयोग वाटिक है। सीता के हाथ के कंकन, कटि की करधनी, चरण के नूपुर की ध्वनि को सुन-कर राम के हृदय में आकर्षण उत्पन्न हुआ। हाथ समर्पण है, सदाचरण है, कटि संयम है। समर्पण, सदाचरण और संयम रूपी गहनों की ध्वनि परमात्मा को भी साधक की ओर देखने को मजबूर कर देती है।

राम ने आती हुई सीता के चन्द्र मुख को चकोर रूपी नेत्रों से देखा। राम ने हृदय में विचार किया मानो ब्रह्मा ने अपनी सारी निपुणता से रचकर सीता को प्रकट किया है। सीता की उपमातीत सुन्दरता दीप शिखा के समान सुन्दरता को भी सुन्दर कर रही है।

राम ने लक्ष्मण को कहा कि जिसके कारण धनुष यज्ञ हो रहा है, यह वही जनक

कुमारी है। अपनी सखियों के साथ गौरी पूजन के लिए आई हुई है। राम बोले रघुवंशीयों के सहज स्वभावानुकूल मैने कभी स्वप्न में भी परनारी का चिन्तन नहीं किया है पर सीता की अलौकिक शोभा को देखकर मेरे स्वाभाविक पवित्र मन में अत्यधिक प्रेम उत्पन्न हो गया हैं, मेरे शुभ अंग फड़क रहे हैं इसका कारण विधाता ही जानता हैं।

सखियों ने सीता को राम-लक्ष्मण को दिखाया। सीता इस प्रकार राम को देखने लगी मानो शरद चन्द्र को चकोरी देखती हो। नेत्र के मार्ग से सीता ने राम को अपने हृदय में धारण कर नेत्र रूपी कपाट बन्द कर लिए।

पिता के प्रण का स्मरण कर सीता का मन दुःखी हो गया। फिर सीता गौरी के मन्दिर में गई और गौरी के चरण पकड़कर मनोरथ पूर्ण करने की याचना की।

भवानी ने प्रेमवश मुस्कराकर आशीर्वाद दिया कि तुम्हारी कामना पूर्ण होगी। मन चाहे वर की प्राप्ति होगी।

"मनु जाहिं राचेउ मिलिहि सो वरु
सहज सुन्दर सांवरो।"

उधर राम लक्ष्मण पुष्प लेकर गुरु विश्वामित्र के पास पहुँचे। पुष्प लेकर मुनि विश्वामित्र ने पूजन किया और दोनों भाइयों का 'मनोरथ' सफल हो आशीर्वाद दिया।

सुफल मनोरथ होऊ तुम्हारे।
राम लखन सुनि भए सुखारे॥

निम्बार्कतीर्थ में आचार्यश्री का
जन्म दिवस महोत्सव

शुभ संयोग की बात है कि यहाँ युगसन्त श्रीमुरारी बापू द्वारा श्रीरामकथा महोत्सव के अन्तर्गत आज अनन्त श्रीविभूषित जगदगुरु निम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी" महाराज का शुभ जन्म दिवस आज होने से अपार जन समूह ने आचार्यश्री का जन्म महोत्सव विविध प्रकार से बड़ी धूमधाम से मनाया।

आचार्यश्री महल में मध्याह्न २ बजे आचार्यपीठस्थ विद्वद् परिषद् के विद्वानों की ओर से वैदिक विधि से आचार्यश्री का जन्म महोत्सव मनाया गया। तदनन्तर नव निर्मित रास मण्डल में भारी संख्या में उपस्थित भावुक भक्तों ने आचार्यश्री के मांगलिक जन्म दिवस पर बड़े उमंग और उत्साह के साथ आचार्यश्री का चरण अर्चन वन्दन करते हुए दीर्घायुष्य की सर्वेश्वर प्रभु से मंगल कामना की।

कथा मण्डप में सायं ६ बजे युगसन्त श्रीमुरारी बापू ने भी इस अवसर पर आचार्य चरणों का अभिनन्दन करते हुए अपार हार्दिक हर्ष का अनुभव किया। श्रीसर्वेश्वर रामकथा समिति के कार्यवाहक अध्यक्ष श्रीरामेश्वरलालजी फतेहपुरिया ने भी आचार्यश्रीचरणों में शाल एवं पत्र, पुष्प समर्पित करते हुए श्रीचरणों का अभिनन्दन किया।

आचार्यश्रीचरणों के जन्म दिवस महोत्सव पर श्रीसर्वेश्वर रामकथा समिति के अध्यक्ष श्रीभीमकरणजी छापरवाल ने आचार्य चरणों के प्रति अपने भक्तिभाव भरे श्रद्धा सुमन समर्पित करते हुए श्रीसर्वेश्वर प्रभु से दीर्घायुष्य की मंगल कामना की।

आचार्य चरणों के जन्म दिवस महोत्सव के क्रम में जब आचार्यश्री का नव निर्मित यज्ञ शाला में चल रहे श्रीरामयज्ञ के दर्शनार्थ पधारे तो सभी यज्ञ के आचार्य-उपाचार्य एवं सभी विद्वानों ने वैदिक मन्त्रों के घोष के साथ आचार्यचरणों में श्रद्धा सुमन समर्पित करते

हुए श्रीचरणों के भावी जीवन में सर्वतोमुखी अभ्युदय के लिए भगवान् श्रीराधामाधव से मंगलकामना की। इस अवसर पर आचार्यश्री ने सभी विद्वानों को दक्षिणा सहित शाल प्रदान करते हुए विद्वानों का सम्मान किया।

आचार्यश्री का उद्बोधन

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री "श्रीजी" महाराज ने अपने जन्म दिवस महोत्सव पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि वैसे हमारे यहाँ सन्त समाज में जन्मदिवस मनाने की परिपाटी नहीं है। दीक्षा दिवस अथवा पाटोत्सव का ही विशेष महत्व है। पर सभी सन्त-महन्त एवं इस रामकथा महोत्सव में हजारों की संख्या में आये हुए भक्तों एवं विशेष रूप से श्रीमुरारी बापू के मनोभाव को देखते हुए हमने इस कार्यक्रम की स्वीकृति दी है। यह संयोग की बात है कि इस "रामकथा" कार्यक्रम के क्रम में ही इस शरीर का जन्म दिवस आ गया।

आचार्यश्री ने आशीर्वचन में कहा कि यह मनुष्य शरीर भगवत्सेवा, श्री युगल सरकार राधाकृष्ण श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सेवा हेतु ही प्राप्त हुआ है। यावन्मात्र प्राणी संसार के स्वाभाविक कार्य सम्पादित करते है लेकिन अपने जीवन को भगवत्कार्य में जो लगा देते हैं वे धन्य हो जाते हैं।

जिस प्रकार मृण्मयी प्रतिमा में मन्त्रों के माध्यम से देवत्व की प्राणप्रतिष्ठा की जाती है और वह प्रतिमा देवस्वरूप हो जाती है, इसी प्रकार हमारे अन्दर जो कुछ भी है वह सब पूर्वाचार्यों की कृपा प्रसाद एवं सन्त-महात्माओं तथा विद्वज्जनों की ही महिमा है। हमारी मान्यता है कि इस शरीर द्वारा वैदिक धर्म के प्रचार-प्रचार में जिस विधा से भी उत्कृष्ट रचनात्मक सेवा हो सके और अपना परम लक्ष्य युगल सरकार के चरणारविन्द की अधिकाधिक सेवा हो सके इसी में जीवन की सफलता है।

●

दो ही वस्तुएँ हमें ईश्वर की अनुभूति से दूर कर देती है। मन की मलिनता और आँखों की विकृति। मन की मलिनता दूर हो जाने पर और आँखों की विशुद्धि आने पर ईश्वर हमारे सामने ही खड़ा है।

सप्त दिवसीय श्रीरामकथा प्रवचन

(कथासार दिनांक २७ अप्रेल १९९० ई० शुक्रवार)

भगवत् वन्दना एवं मंगलाचरण के पश्चात् कथा प्रारम्भ करते हुए श्रीमुरारी बापू ने कहा -आचार्य शंकर कहते है कि 'जीव को चाहिये-वेद का नित्य अध्ययन करें। वेद पूर्ण हैं, अपौरुषेय एवं अनादि हैं। वेद मन्त्र, ऋचाओं का संगीत अहर्निश गूँज रहा है। यह सिद्धान्त सिद्ध है। हमारी अक्षम श्रवणेन्द्रियां उसे सुन नहीं पाती। ऋषियों ने अपनी दिव्य श्रवण शक्ति से वेद मन्त्रों को सुना।

मनुष्य द्वारा निर्मित वस्तु सदेव अधूरी रहती है। मनुष्य द्वारा सृजित कोई वस्तु पूर्ण नहीं है। ईश्वर का अंश होने से जीव भी ज्ञानी है पर जीव का ज्ञान अखण्ड नहीं रहता, एक रस नहीं रहता है जैसे अग्नि पर राख रहती है वैसे ही जीव का ज्ञान अज्ञान से आवृत रहता है। ईश्वर और जीव का सत्व-तत्व समान है पर मात्रा और स्थायित्व का अत्यन्त अन्तर रहा है। बर्तन में रखा गंगा जल और गंगा का जल एक ही है पर बर्तन में रखे गंगा जल की मात्रा सीमित है स्थायी नहीं है, बर्तन की बनावट के अनुसार बदलता रहता है जबकी गंगा नदी का जल स्थायी है, अक्षय है अखण्ड बहता रहता है यही मौलिक भेद है।

वेद शब्द विद् धातु से बना है विद् का अर्थ है जानना। वेद में जो सोमरस बलि, अभोग्य वस्तु का वर्णन आता है उसके कई अर्थ हैं जिसको समझना कठिन है फिर भी इष्ट को स्वीकार कर जो अनिष्ट लगे उसे छोड़ देना चाहिये।

गीता, रामायण, महाभारत, वेदान्त, श्रीमद्भागवत आदि ग्रन्थ वेद की ही व्याख्या करते हैं। वेद घृत हैं ये ग्रन्थ दूध है। घृत को सब नहीं पचा पाते, दूध को बच्चा भी पचा लेता है।

वेद के अध्ययन से जो प्राप्त होता है, उदित होता है उसे कर्म में अधिष्ठित अनुष्ठित करे। जोवन में जो फलित हो जाय कर्म में अनुष्ठित करें। सत्य-सत्य हैं। आचरण में कठिन है। सत्य सदा पूजनीय, सेवनीय, आचरणीय है।

वेद तो शाश्वत हैं बह रहे हैं हम ग्रहण करने में असमर्थ। ऋषियों ने उसे ग्रहण किया। उनके माध्यम से हमें वेद प्राप्त हुए। चेतना, निर्विकल्प चित्त की स्थिति में ऋषियों ने वेद एकत्रित किये उसके संगीत स्वरों को पकड़ा और जन-जन के लिये प्रवाहित कर दिये। वेद के ज्ञान से ही सृष्टि का निर्माण हुआ।' सृष्टि के आरभ वे वेद प्रकट हुए। ब्रह्मा ने उन्हें ग्रहण किया। ब्रह्मा ने ऋषियों को प्रदान किया। ऋषियों के माध्यम से जन-जन तक पहुँचे। वेद सत्य है, शाश्वत है। "वेद सम्पूर्ण ज्ञान है।" वेद निन्दा नहीं करनी चाहिये।

जो भी कर्म हैं जो भी कार्य करें उसे भगवद् पूजा, अर्चा समझकर उन्हीं के लिए

कर रहे है, ऐसा समझकर प्रभु अर्पित कर दो। 'कर्त्तव्य मात्र समझकर कर्म करें।'

बुद्धि पूर्वक कामना का परित्याग करें। कामना से कर्म का रंग बदल जाता है। कर्म शुद्धि आवश्यक है। पाप पुण्य दृश्य नहीं है, अदृश्य हैं। पाप पुण्य का फल अदृश्य रूप से तुरन्त मिलता है दृश्य स्थूल रूप में विलम्ब से। पाप कामनाओं से होता है। जिस कर्म के बाद विषाद हो शान्ति अपहारित हो जाय, जो कर्म तेजहीन कर दे वह पाप है। 'पाप सन्त दर्शन और भगवद् स्मरण से मिटता है।'

संसार के सुखों में दोष दर्शन करना ही अनुसंधान है। सोच समझकर जो दोषपूर्ण है उसका त्याग कर देना चाहिये। 'आत्मेच्छा को प्रबल बनायें' ब्रह्म जिज्ञासा से, ईश्वर को प्राप्त करना है। ऐसा दृढ़ निश्चय करने, संकल्प करने से आत्मेच्छा प्रबल होती है।

आत्मेच्छा प्रबल होने पर ईश्वर की निकटता प्राप्त हो जाय तो घर छोड़ दें। घर छोड़ देने का अर्थ भागना नहीं है जागना है। बीज बो दिये, जल सिंचन के बाद जब बीज अंकुरित होने लगे तब उन्हें बढ़ाने के लिए उचित वातावरण परिस्थिति निर्माण करना आवश्यक है। जो वातावरण परिस्थिति में बाधक बने उसका त्याग कर देना चाहिये, छोड़ देना चाहिये। जब वैराग्य उत्पन्न हो जाय, दृष्टि का निर्माण हो जाय, तब शरीर रूपी घर से भिन्न हो जायें।

आचार्यों द्वारा बताये गये सूत्रों को ग्रहण कर, ठीक से समझकर यथार्थ समझकर अनुरक्षण कर आचरण में लाने से जीवन कृत्य-कृत्य हो जाता है मानव जीवन सफल हो जाता है।

जनक ने शतानन्द को विश्वामित्र के पास भेजा। शतानन्द ने विश्वामित्र को धनुष यज्ञ शाला में पधारने हेतु कहा। विश्वामित्र के संग राम-लक्ष्मण ने यज्ञ शाला में प्रवेश किया। राम एक है, देखने वाले अनेक 'जाकी रही भावना जैसी, प्रभुमूरत तिन देखी तैसी।'

सखियों के साथ सीताजी ने रंग भूमि में प्रवेश किया। शंकर का पिनाक रख दिया गया। सेवक ने घोषणा की - हे राजन्! आप सभी जनकजी की प्रतिज्ञा सुनकर यहाँ आये है। जो इस शिव धनुष को तोड़ेगा, सीता उसी का वरण करेगी।

प्रसन्न होकर एक-एक कई राजा उठे। कोई अपने-अपने इष्ट देवों का स्मरण कर, कोई बाहें चढ़ाकर उठा। धनुष को चढ़ाना तो दूर, पर कोई हिला भी नहीं सका। "भूप सहस दस एकहि बारा, लगे उठावन टरइन टारा" सब राजाओं की यह दशा देखकर आकुल होकर रोष में जनक ने कहा कि धरती वीरों से शून्य हो गई है - अब आशा छोड़कर अपने-अपने घर जाओ

जनक के कठोर वचनों को सब राजा सह लेते है - पर लक्ष्मण आवेश में आ गए। भगवान् राम को प्रणाम करके कहा कि मैं अहंकार से नहीं, रघुवंश की परम्परा, स्वभाव से बोल रहा हूँ, रघुकुलमणि के यहाँ होते हुए जनक ने यह अनुचित वाणी कही है। आपकी आज्ञा हो तो गेंद के समान ब्रह्माण्ड को उठा लूँ, कच्चे घड़े के समान फोड़ दूँ, इस पुराने पिनाकि धनुष की तो बात ही क्या है? मेरू पर्वत को मूली के समान तोड़ सकता हूँ।

"कमलनाल जिमि चाप चढ़ावों।
जो जन सहस प्रमान ले धावों ।।"

लक्ष्मण जब क्रोध से बोले तो धरती डोलने लगी।

हुए श्रीचरणों के भावी जीवन में सर्वतोमुखी अभ्युदव के लिए भगवान् श्रीराधामाधव से मंगलकामना की। इस अवसर पर आचार्यश्री ने सभी विद्वानों को दक्षिणा सहित शाल प्रदान करते हुए विद्वानों का सम्मान किया।

आचार्यश्री का उद्‌बोधन

अनन्त श्रीविभूषित जगद्‌गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री "श्रीजी" महाराज ने अपने जन्म दिवस महोत्सव पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि वैसे हमारे यहाँ सन्त समाज में जन्मदिवस मनाने की परिपाटी नहीं है। दीक्षा दिवस अथवा पाटोत्सव का ही विशेष महत्व है। पर सभी सन्त-महन्त एवं इस रामकथा महोत्सव में हजारों की संख्या में आये हुए भक्तों एवं विशेष रूप से श्रीमुरारी बापू के मनोभाव को देखते हुए हमने इस कार्यक्रम की स्वीकृति दी है। यह संयोग की बात है कि इस "रामकथा" कार्यक्रम के क्रम में ही इस शरीर का जन्म दिवस आ गया।

आचार्यश्री ने आशीर्वचन में कहा कि यह मनुष्य शरीर भगवत्सेवा, श्री युगल सरकार राधाकृष्ण श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सेवा हेतु ही प्राप्त हुआ है। यावन्मात्र प्राणी संसार के स्वाभाविक कार्य सम्पादित करते है लेकिन अपने जीवन को भगवत्कार्य में जो लगा देते हैं वे धन्य हो जाते हैं।

जिस प्रकार मृण्मयी प्रतिमा में मन्त्रों के माध्यम से देवत्व की प्राणप्रतिष्ठा की जाती है और वह प्रतिमा देवस्वरूप हो जाती है, इसी प्रकार हमारे अन्दर जो कुछ भी है वह सब पूर्वाचार्यों की कृपा प्रसाद एवं सन्त-महात्माओं तथा विद्वज्जनों की ही महिमा है। हमारी मान्यता है कि इस शरीर द्वारा वैदिक धर्म के प्रचार-प्रचार में जिस विधा से भी उत्कृष्ट रचनात्मक सेवा हो सके और अपना परम लक्ष्य युगल सरकार के चरणारविन्द की अधिकाधिक सेवा हो सके इसी में जीवन की सफलता है।

●

दो ही वस्तुएँ हमें ईश्वर की अनुभूति से दूर कर देती है। मन की मलिनता और आँखों की विकृति। मन की मलिनता दूर हो जाने पर और आँखों की विशुद्धि आने पर ईश्वर हमारे सामने ही खड़ा है।

सप्त दिवसीय श्रीरामकथा प्रवचन

(कथासार दिनांक २७ अप्रेल १९९० ई० शुक्रवार)

भगवत् वन्दना एवं मंगलाचरण के पश्चात् कथा प्रारम्भ करते हुए श्रीमुरारी बापू ने कहा –आचार्य शंकर कहते है कि 'जीव को चाहिये-वेद का नित्य अध्ययन करें। वेद पूर्ण हैं, अपौरुषेय एवं अनादि हैं। वेद मन्त्र, ऋचाओं का संगीत अहर्निश गूँज रहा है। यह सिद्धान्त सिद्ध है। हमारी अक्षम श्रवणेन्द्रियां उसे सुन नहीं पाती। ऋषियों ने अपनी दिव्य श्रवण शक्ति से वेद मन्त्रों को सुना।

मनुष्य द्वारा निर्मित वस्तु सदैव अधूरी रहती है। मनुष्य द्वारा सृजित कोई वस्तु पूर्ण नहीं है। ईश्वर का अंश होने से जीव भी ज्ञानी है पर जीव का ज्ञान अखण्ड नहीं रहता, एक रस नहीं रहता है जैसे अग्नि पर राख रहती है वैसे ही जीव का ज्ञान अज्ञान से आवृत रहता है। ईश्वर और जीव का सत्व-तत्व समान है पर मात्रा और स्थायित्व का अत्यन्त अन्तर रहा है। बर्तन में रखा गंगा जल और गंगा का जल एक ही है पर बर्तन में रखे गंगा जल की मात्रा सीमित है स्थायी नहीं है, बर्तन की बनावट के अनुसार बदलता रहता है जबकी गंगा नदी का जल स्थायी है, अक्षय है अखण्ड बहता रहता है यही मौलिक भेद है।

वेद शब्द विद् धातु से बना है विद् का अर्थ है जानना। वेद में जो सोमरस बलि, अभोग्य वस्तु का वर्णन आता है उसके कई अर्थ हैं जिसको समझना कठिन है फिर भी इष्ट को स्वीकार कर जो अनिष्ट लगे उसे छोड़ देना चाहिये।

गीता, रामायण, महाभारत, वेदान्त, श्रीमद्भागवत आदि ग्रन्थ वेद की ही व्याख्या करते हैं। वेद घृत हैं ये ग्रन्थ दूध है। घृत को सब नहीं पचा पाते, दूध को बच्चा भी पचा लेता है।

वेद के अध्ययन से जो प्राप्त होता है, उदित होता है उसे कर्म में अधिष्ठित अनुष्ठित करे। जीवन में जो फलित हो जाय कर्म में अनुष्ठित करें। सत्य-सत्य हैं। आचरण में कठिन है। सत्य सदा पूजनीय, सेवनीय, आचरणीय है।

वेद तो शाश्वत हैं बह रहे हैं हम ग्रहण करने में असमर्थ। ऋषियों ने उसे ग्रहण किया। उनके माध्यम से हमें वेद प्राप्त हुए। चेतना, निर्विकल्प चित्त की स्थिति में ऋषियों ने वेद एकत्रित किये उसके संगीत स्वरों को पकड़ा और जन-जन के लिये प्रवाहित कर दिये। वेद के ज्ञान से ही सृष्टि का निर्माण हुआ।' सृष्टि के आरभ वे वेद प्रकट हुए। ब्रह्मा ने उन्हें ग्रहण किया। ब्रह्मा ने ऋषियों को प्रदान किया। ऋषियों के माध्यम से जन-जन तक पहुँचे। वेद सत्य है, शाश्वत है। "वेद सम्पूर्ण ज्ञान है।" वेद निन्दा नहीं करनी चाहिये।

जो भी कर्म हैं जो भी कार्य करें उसे भगवद् पूजा, अर्चा समझकर उन्हीं के लिए

कर रहे है. ऐसा समझकर प्रभु अर्पित कर दो। 'कर्त्तव्य मात्र समझकर कर्म करें।'

बुद्धि पूर्वक कामना का परित्याग करें। कामना से कर्म का रंग बदल जाता है। कर्म शुद्धि आवश्यक है। पाप पुण्य दृश्य नहीं है, अदृश्य हैं। पाप पुण्य का फल अदृश्य रूप से तुरन्त मिलता है दृश्य स्थूल रूप में विलम्ब से। पाप कामनाओं से होता है। जिस कर्म के बाद विषाद हो शान्ति अपहारित हो जाय, जो कर्म तेजहीन कर दे वह पाप है। 'पाप सन्त दर्शन और भगवद् स्मरण से मिटता है।'

संसार के सुखों में दोष दर्शन करना ही अनुसंधान है। सोच समझकर जो दोषपूर्ण है उसका त्याग कर देना चाहिये। 'आत्मेच्छा को प्रबल बनायें' ब्रह्म जिज्ञासा से, ईश्वर को प्राप्त करना है। ऐसा दृढ़ निश्चय करने, संकल्प करने से आत्मेच्छा प्रबल होती है।

आत्मेच्छा प्रबल होने पर ईश्वर की निकटता प्राप्त हो जाय तो घर छोड़ दें। घर छोड़ देने का अर्थ भागना नहीं है जागना है। बीज बो दिये, जल सिंचन के बाद जब बीज अंकुरित होने लगे तब उन्हें बढ़ाने के लिए उचित वातावरण परिस्थिति निर्माण करना आवश्यक है। जो वातावरण परिस्थिति में बाधक बने उसका त्याग कर देना चाहिये, छोड़ देना चाहिये। जब वैराग्य उत्पन्न हो जाय, दृष्टि का निर्माण हो जाय, तब शरीर रूपी घर से भिन्न हो जायें।

आचार्यों द्वारा बताये गये सूत्रों को ग्रहण कर, ठीक से समझकर यथार्थ समझकर अनुरक्षण कर आचरण में लाने से जीवन कृत्य-कृत्य हो जाता है मानव जीवन सफल हो जाता है।

जनक ने शतानन्द को विश्वामित्र के पास भेजा। शतानन्द ने विश्वामित्र को धनुष यज्ञ शाला में पधारने हेतु कहा। विश्वामित्र के संग राम-लक्ष्मण ने यज्ञ शाला में प्रवेश किया। राम एक है, देखने वाले अनेक 'जाकी रही भावना जैसी, प्रभुमूरत तिन देखी तैसी।'

सखियों के साथ सीताजी ने रंग भूमि में प्रवेश किया। शंकर का पिनाक रख दिया गया। सेवक ने घोषणा की - हे राजन्! आप सभी जनकजी की प्रतिज्ञा सुनकर यहाँ आये है। जो इस शिव धनुष को तोड़ेगा, सीता उसी का वरण करेगी।

प्रसन्न होकर एक-एक कई राजा उठे। कोई अपने-अपने इष्ट देवों का स्मरण कर, कोई बाहें चढ़ाकर उठा। धनुष को चढ़ाना तो दूर, पर कोई हिला भी नहीं सका। "भूप सहस दस एकहि बारा, लगे उठावन टरइन टारा" सब राजाओं की यह दशा देखकर आकुल होकर रोष में जनक ने कहा कि धरती वीरों से शून्य हो गई है - अब आशा छोड़कर अपने-अपने घर जाओ

जनक के कठोर वचनों को सब राजा सह लेते है - पर लक्ष्मण आवेश में आ गए। भगवान् राम को प्रणाम करके कहा कि मैं अहंकार से नहीं, रघुवंश की परम्परा, स्वभाव से बोल रहा हूँ, रघुकुलमणि के यहाँ होते हुए जनक ने यह अनुचित वाणी कही है। आपकी आज्ञा हो तो गेंद के समान ब्रह्माण्ड को उठा लूँ, कच्चे घड़े के समान फोड़ दूँ, इस पुराने पिनाकि धनुष की तो बात ही क्या है? मेरू पर्वत को मूली के समान तोड़ सकता हूँ।

"कमलनाल जिमि चाप चढ़ावों।
जो जन सहस प्रमान ले धावों॥"

लक्ष्मण जब क्रोध से बोले तो धरती डोलने लगी।

श्रीमुरारी बापू ने मार्मिक विश्लेषण करते हुए बताया कि लक्ष्मण शेषावतार थे, स्वयं क्रोध में बोले तो वे स्वयं भी डोले होंगे, इसलिये धरती का डोलना स्वाभाविक है। जब धरा डोल रही थी राम ने लक्ष्मण को इशारा किया जिसका तात्पर्य यह बताया कि सीता धरती की बेटी है और सीता की माँ को कुछ हो गया तो विवाह रुक जायेगा। गुरु ने आज्ञा नहीं दी है।

विश्वामित्र ने उचित समय जानकर राम को आज्ञा दी।

"उठहु राम भंजकहु भव चापा।
मेटऊ तात जनक परितापा।।"
"सुनि गुरु वचन चरन सिरू नावा।
हरषु विषाद न कछु उर आवा।"

राम सहज स्वभाव से उठे। युवा मृग-राज लजाए, इस ढ़ंग से उठे।

"ठवनि जुबा मृगराज लजाए"

यह चौपाई सुनाकर वर्णन करते समय श्रीमुरारी बापू ने वीर रस का संचरण कर दिया।

गुरु की आज्ञा पाकर धनुष उठाने तक के प्रसंग का विवरण करते हुए श्रीमुरारी बापू ने कहा कि राम सी सौम्यता जिसमें हो वही धनुष रूपी अहंकार को तोड़ सकता है।

राम ने धनुष उठा लिया, चढ़ाया, खेंचा और क्षण के मध्य में ही तोड़ दिया। "तेहि छिन राम मध्य धनु तोरा" चौपाई में मध्य शब्द के भाव को कई सन्तों की परिभाषायें बताकर चकित कर दिया।

धनुष के टूटने पर इतनी भयंकर आवाज हुई कि त्रिभुवन गूंज उठा, सूर्य, चन्द्रमा ने मार्ग बदल लिये, दिग्पाल डोल उठे, शेषनाग, कच्छप कंपित हो गए। देवता असुर मुनि सुनकर विकल हो गए शिव, ब्रह्मा के आसन डोल उठे। राम ने धनुष तोड़कर दोनों टुकड़े जमीन पर डाल दिए।

सीता वरमाला लिये राम के सामने खड़ी है, पर राम बड़े हैं, सीता वरमाला नहीं डाल पा रही है क्योंकि सीता के हाथ राम के गले तक नहीं पहुँच पा रहे है।

इस प्रसग का श्रीमुरारी बापू ने बड़ा मार्मिक विश्लेषण किया–राम मर्यादा पुरु-षोत्तम है झुकने को तैयार नहीं। तब लक्ष्मण उठे और अचानक आकर राम के चरणों में प्रणाम किया। राम लक्ष्मण को उठाने झुके सीता ने वरमाला राम के गले में डाल दी। सीता भक्ति हैं. राम ब्रह्म है, ब्रह्म को भक्ति के सामने झुकना पड़ा।

शिव धनुष टूटने के समाचार सुनकर परशुरामजी स्वयंवर स्थल पर पहुँच गए। जनक से पूछा मूढ़ जनक ! इस शिवजी के धनुष को किसने तोड़ा हैं।

नाथ शंभु धनु भंजनि हारा।
होइहि कोउ एक दास तुम्हारा।।

राम ने कहा शिव धनुष तोड़ने वाला यह आपका दास है। परशुराम ने कहा कि सुनो ! शिव धनुष को तोड़ने वाला सहस्र-बाहु के समान मेरा शत्रु हैं।

यह सुनकर लक्ष्मण ने हँसकर कहा हमने बचपन में बहुत से धनुष तोड़ दिये तब आपने कभी भी क्रोध ·हीं किया। आपका हथियार उठाना ठीक नहीं है आपकी तो वाणी ही शस्त्र है। अगर यह धनुष इतना महान् है तो तोड़ने वाला कितना महान् होगा ? लक्ष्मण की बातों से परशुरामजी का क्रोध बढ़ता गया। तब राम ने शील का

सभी लोग नित्यकर्म करो। तुम सनातन धर्म के हो, वैदिक परम्परानुसार चाहे थोड़ा ही करो, ज्यादा नहीं तो पाँच मिनट ही प्रभु की प्रार्थना करो। परन्तु प्रार्थना के लिए कुछ समय अवश्य निकालो।

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ—

माहेश्वरी सेल्स कार्पोरेशन

ब्लीच पावरलूम धोती के होलसेल व्यापारी

मैनरोड़, पोस्ट बॉक्स नं० ११६
इचलकरंजी
जि० कोल्हापुर (महाराष्ट्र) ४१६११५

श्रीचरणरजकिंकर—
रामविलास मून्दड़ा
सर्वेश्वरप्रसाद मून्दड़ा
(मोरेड़ निवासी)

प्रदर्शन किया। और अन्त में बल दिखाया परशुरामजी ने विष्णु धनुष राम को अर्पित किया और विष्णु धनुष अपने आप धारण हो गया।

राम के प्रभाव को जानकर परशुराम जी ने हाथ जोड़कर कहा —

जय रघुवंश वनज बन भानु।
गहन दनुज कुल दहन कृशानु।।
जय सुर विप्र धेनु हितकारी।
जय मद मोह कोह भ्रमहारी।।

भगवान् राम की जय-जयकार करते हुए परशुराम वन में तपस्या हेतु चले गए। 'देवन दीन्हीं दुन्दुभि प्रभु पर बरसहि फूल।'

देवता दुन्दुभि बजाकर फूल बरसाने लगे। बाजे बजने लगे। कोकिल स्वर से महिलायें मंगल गीत गाने लगी।

अयोध्या में दूतों द्वारा लग्न पत्र भेजा गया। दशरथजी बारात सजाकर जनकपुरी पहुँच गए। राजा जनक ने नगरवासियों के साथ अगवानी की।

श्रीमुरारी बापू ने कथा क्रम में कहा कि रामायण में गोस्वामीजी ने "राम विवाह" का बड़े आनन्द व विस्तार से चित्रण किया।

राम को दूल्हे के वेष में सजाया गया। घोड़े पर बिठाया गया। बरात महलों तक पहुँची। वैदिक रीति से सभी कार्यक्रम सम्पन्न होकर एक ही विवाह मण्डप में वशिष्ठजी के आदेश से चारों भाइयों का विवाह सम्पन्न हुआ। माण्डवी, श्रुतकीर्ति, उर्मिला का विवाह भरत, शत्रुघ्न और लक्ष्मण के साथ हुआ।

दशरथजी के साथ भगवान् राम ने जनक को प्रणाम कर विदा मांगी।

श्रीमुरारी बापू ने कथा क्रम में कहा कि सीता को विदा करते समय जनक जैसे परम वैरागी, ज्ञानी विदेहराज का ज्ञान और धैर्य भी भाग गए। प्रेम वियोग में आँसू बहने लगे।

विदा लेकर बारात सहित सीता राम अयोध्या पहुँचे। माता कौशल्या, कैकयी, सुमित्रा सहित अयोध्या नगर वासियों में प्रसन्नता की लहर छा गई।

कुछ समय पश्चात् ऋषि विश्वामित्र ने दशरथजी से विदा मांगी।

श्रीमुरारी बापू ने बड़े सरस ढंग से वर्णन करते हुए बताया कि एक साथ दो घटना घटित हुई। परिवार को सन्त वियोग और सन्त को भगवत् वियोग।

अष्ट दिवसीय श्रीरामकथा प्रवचन

(कथासार दिनांक २८ अप्रेल १९९० ई० शनिवार)

भगवत् वन्दना एवं मंगलाचरण के पश्चात् श्रीमुरारी बापू ने कहा कि भक्ति का आरम्भ सन्त के संग से होता है अतः सन्तों का संग करो। रामचरित मानस का उद्धरण देते हुए उन्होंने कहा कि—

प्रथम भगति संतन कर संगा।
दूसरी गति मम कथा प्रसंगा।।

संग करने से संगी का गुण कभी न कभी व्यक्ति में आता ही है। वह मन के कई जन्मों के संस्कार भुला देता है। मन के संस्कार आदमी को विचलित कर देते हैं। मन के सूक्ष्म संस्कार के कारण हम भूल कर बैठते हैं। इस सन्दर्भ में सूर्पनखा का उदाहरण देते हुए श्रीमुरारी बापू ने कहा कि सूर्पनखा जब राम को देखती है तो उसमें कामना जाग्रत होती है, कामना के कारण क्रोध और क्रोध में वह विवेक हीन हो जाती है जिसका अन्त सर्वनाश के रूप में होता है। सूर्पनखा की तरह सभी के मन में संस्कार सूक्ष्म रूप में होते हैं लेकिन जैसी संगति होगी वैसे ही हमारे अन्दर के संस्कार भाव जाग्रत होंगे।

अपने कथा प्रसंग को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने कहा कि कोरा संग करोगे तो काम भाव जागेगा। अतः सत्संग करो। सत्संग करने से सन्तों के कार्यों का प्रभाव साधक में आ जाता है। जीवन कितना दिव्य है यह तो सत्संग करने पर ही पता चलेगा। जिसका संग करने से शान्ति मिले, चित्त गद्‌गद हो जाये, परम चेतना जागृत हो, जो हमारे विचारों को बदल दे उसी सद् विद्वान् की शरण में रहो, उनकी पादुका की सेवा-पूजा करो।

भक्ति में दृढ़ता का होना आवश्यक है। भक्ति सभी में है लेकिन वह दृश्य नहीं है। भक्ति के बिना हम अपने सामर्थ्य को प्राप्त नहीं कर सकते। भक्ति के लिए प्रेम जरूरी है क्योंकि प्रेम से आसक्ति जागृत होती है और जिसकी प्रभु में आसक्ति होगी वो भक्त हो जायेगा। दृढ़ भक्ति के कारण ही हनुमान् राम को लक्ष्मण से अधिक प्रिय थे।

सम-दम की व्याख्या करते हुए उन्होंने कहा कि आन्तरिक विचारों, संकल्प व निर्णय पर प्रभुत्व स्थापित करना सम है जबकि क्रिया पर काबू दम है। इन्द्रियों की क्रिया पर काबू करना दम है। साधक के लिए सम-दम को आवश्यक बताया है। प्रमाण भान नहीं रखने से गलतियाँ हो जाती हैं। अहिल्या से गलती भी प्रमाण भान न होने के कारण ही हुई। इसलिए कर्म में काम्य बुद्धि का त्याग जरुरी है।

श्रीमुरारी बापू ने कहा कि जितनी निष्ठा भगवान् में हो उतनी यदि गुरु में हो तो, उपनिषद् कहते हैं जीवन दिव्य बन जायेगा। भारत में भरत के मन्दिर नहीं है, इसे स्पष्ट करते हुए श्रीबापू ने कहा कि वे तो राम के अनन्य भक्त है। जिनकी आँखों में आँसू हो उनकी मूर्ति कैसे बनाई जा सकती

है। श्रीमुरारी बापू ने कहा कि—शान्ति तो भगवान् विष्णु के श्रीचरणों तले है हमें कहाँ से मिलेगी। आपने कहा कि बिना हरिशरण के आदमी हर वस्तु से उब जाता है क्योंकि सब अपने अस्तित्व से परेशान है और यह अज्ञान व मूढ़ता के कारण होता है। श्रीबापू ने कहा कि अति भोजन, अति नींद व अति वासना से साधक को बचना चाहिये। उन्होंने यह भी कहा कि दाम्पत्य जीवन को सुखमय चाहते हो तो सत्संग करो।

श्रीमुरारी बापू ने उक्त उद्गार शनिवार की प्रातः रामकथा प्रवचन के दौरान व्यक्त किये। कल रविवार को प्रातः कथा प्रवचन के साथ नौ दिवसीय रामकथा सम्पन्न हो जायेगी। कथा का आयोजन श्रीसर्वेश्वर रामकथा समिति निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) ने किया है। रामकथा के साथ-साथ इसका आयोजन सलेमाबाद स्थित निम्बार्कतीर्थ सरोवर के जीर्णोद्धार के लिए किया जा रहा है। श्रीमुरारी बापू ने आज कथा के बीच में धर्मानुरागियों से कहा कि वे पुनः रामकथा सुनाने आयेंगे लेकिन जब सरोवर का जीर्णोद्धार हो जायेगा।

अयोध्याकाण्ड निष्पक्ष, निर्णायक, कलह विहीन, निर्लोभी जीवन का प्रतीक है, अयोध्याकाण्ड यौवन-काण्ड है। अयोध्याकाण्ड की कथा से युवकों को प्रेरणा लेनी चाहिये कि अपना यौवन राष्ट्र, समाज को अर्पित कर दें, यौवन में जब सभी प्रकार की उर्जा अपने मूल रूप में आये उसे सही दिशा दे दी जाय तो क्रांति आ सकती है।

गोस्वामीजी ने अयोध्याकाण्ड की कथा का प्रारम्भ भगवान् शिव की स्तुति करके किया है। भगवान् शिव पार्वती कलाश पर्वत शिखर पर एकान्त में विराजमान है शिव मस्तक पर ज्ञान की गंगा है, भाल पर चन्द्रमा का तेज है शरीर पर भस्म जीवन के प्रति जागरुकता का प्रतीक है। दाम्पत्य जीवन शिव पार्वती की तरह दिव्य होना चाहिये। आज गृहस्थ जीवन कलह पूर्ण, दुःख पूर्ण हो रहा है। भगवान् अवतार लेने के लिये प्रतीक्षा कर रहा है घूम रहा है। प्रभु को अवतार लेने के लिये कौशल्या-दशरथ जैसे माता-पिता चाहिये।

"श्रीगुरु चरण सरोज रज-
निज मन मुकुर सुधार"

पंक्ति का विश्लेषण करते हुए श्री मुरारी बापू ने कहा कि यौवन में गुरु की विशेष आवश्यकता है। "मन मुकुर सुधार" यौवन में मन शुद्ध होना चाहिये। बाल्यकाल में नयन शुद्ध होने चाहिये।

जब तें रामु ब्याहि घर आए।
नित नव मंगल मोद बधाए॥
रिधि सिधि संपति नदी सुहाई।
उमगि अवध अंम्बुधि कहुँ आई॥

जब से भगवान् राम विवाह करके अयोध्या आये हैं चारों ओर मंगल ही मंगल है। रिद्धि सिद्धि का सागर जैसे उमड़ आया है। नगर की समृद्धि वर्णनातीत है। पुण्य के बादल छा गए है।

श्रीरामचन्द्र का चन्द्र मुख देख-देखकर सब प्रसन्न हैं। सबके मन की यही अभिलाषा है कि राम को युवराज पद मिले।

एक बार दशरथ राज सभा में बैठे थे। सबके मुँह से प्रशंसा सुनकर अत्यन्त प्रसन्न हो रहे थे। उसी समय दर्पण देखा—मुकुट को सम स्थिति में किया।

श्रवन समीप भए सित केसा ।
मनहु जरठ पनु अस उपदेसा ।।
नृप जुबराजु राम कहुँ देहू ।
जीवन जनम लहु किन लेहू ।।

राजा दशरथ ने देखा कि कानों के समीप के केस सफेद हो गए हैं और मन में विचार कर लिया कि राम को युवराज बना देना चाहिये ।

"राम सुभायँ मुरु कर लीन्हा"

मन ही मुकुर है । समाज के लोग जब तुम्हारी वाह-वाह करे तब मन के दर्पण में देखो । दशरथ ने सोचा सभा में सबकी आँखे मेरी ओर देख रही है । "मुकुट सम कीन्हा" बुद्धि दर्शन हुआ । श्रीमुरारी बापू ने कहा कि दशरथ का मुकुट थोड़ा सा झुका और मुकुट उतार कर राम को दे दिया और दूसरी ओर रावण-दशानन कि बार-बार मस्तक कट-कट कर गिरते रहे, मुकुट गिरते रहे परन्तु मुकुट पुनः सिर पर रख लेता था ।

सब बिध गुरु प्रसन्न जियं जानी ।
बोलेऊ राउ रहँसि मृदु बानी ।।
नाथ रामु करि अहिं जुबराजू ।।
कहिअ कृपा करि करिअ समाजू ।।

राजा दशरथ ने गुरु वशिष्ठ से निवेदन किया कि राम को युवराज पद प्रदान करे । मुनि वशिष्ठ ने प्रसन्नता पूर्वक आज्ञा दे दी । राजा को कोई समय नहीं बताया ? जब सर्मापत करना है, देना है तो मुहूर्त क्या देखना ?

बेगि विलम्ब न करिअ
नृप साजिअ सबुइ समाजू ।
सुदिन सुमंगलु तबहिं
जब रामु होहिं जुबराजु ।।

श्रीमुरारी बापू ने कहा कि रामराज्य में भी लोकमत था । पर केवल लोकमत ही आधार नहीं, लोकमत तो कैसे भी लिया जा सकता है, जनता के लोकमत के साथ-साथ साधु--सन्त एवं नोति शास्त्रों के ज्ञाता गुरु वशिष्ठ जैसे ऋषि की आज्ञा भी आवश्यक थी ।

राम के राजतिलक की सब तैयारियाँ प्रारम्भ हो गई । सब नर-नारी, अवध-वासियों में, रनिवास में प्रसन्नता छा गई ।

दशरथ ने वशिष्ठजी को राम के पास भेजा । गुरु वशिष्ठ ने राम को राजतिलक की सूचना दी राघव ! कल आपका राज-तिलक हाने वाला है । आज ही भूमिशयन, उपवासादि संयम करो ।

रामु करहू सब संजय आजू ।
जौं विधि कुशल निबाहै काजू ।।

राम के मन में विस्मय हुआ । सोचा सब भाई एक साथ जन्में । सब संस्कार एक साथ हुए । एक साथ सब कार्य किये । फिर सब छोटे भाइयों को छोड़कर बड़े को ही राजतिलक क्यों ? भरत को राजतिलक क्यों न मिल जाय । रघुकुल में यह कैसी प्रथा है । श्रीबापू ने कहा राम की तरह अगर बड़ा यह सोच ले, मुझसे जो छोटा है उसे ज्यादा मिले । लेने वाला देने वाला बन जाय तो रामराज्य आ जायेगा ।

राम भरत की याद में हैं । अयोध्या झूम रही है । वाद्य बज रहे है । नगरवासी कल कब हो ? राजतिलक का शुभ मुहूर्त कब आ जाय । इस प्रतीक्षा में हैं । सीता-राम कब स्वर्णसिंहासन पर विराजमान हो ? पर देवताओं को यह अच्छा नहीं लग रहा है । विघ्न मना रहे हैं । सरस्वतीजी की

वंदना करने लगे। सरस्वतीजी प्रकट हुई। देवताओं ने प्रार्थना की हे माता ! कोई ऐसा उपाय करिये कि राज्य छोड़कर राम वन को चल जाये जिससे देवताओं का कार्य सफल हो सके।

विपति हमारि विलोक बडि
मातु करिअ सोई आजु ।
रामु जाहिं वन राजु तजि
होई सकल सुरकाजु ॥

सरस्वती ने सोचा यह देवता कितने स्वार्थी है—स्थान ऊँचा है करतूत निम्न है किसी का उत्थान नहीं देख सकते । पर भविष्य का ध्यान कर, विचार कर अयोध्या पहुँची। सरस्वती ने सोचा किसकी बुद्धि विपरीत करूं ? अयोध्या में जिसका जन्म हुआ है उसकी बुद्धि नहीं बदली जा सकती।

नामु मन्थरा मन्दमति चेरी कैकइ केरि।
अजस पेटारी ताहि करि गई गिरा मति फेरि ॥

श्रीमुरारी बापू रामकथा के राजतिलक प्रसङ्ग में मन्थरा के बारे में कहा कि मन्थरा विधि प्रपञ्च का एक अपवाद है। रामायण में रावण से भयंकर पात्र मन्थरा है। रावण का मरण तो सिद्ध है पर मन्थरा यह कान ही है। मन्थरा ने कैकयी जैसी राम को प्रेम करने वाली माता राजा दशरथ की इच्छा, वशिष्ठ की अनुमति, लोक मत के सारे निर्णयों को बदल डाला। राम राज्य को १४ वर्ष पीछे धकेल दिया। मन्थरा तत्व घर में ही रहती है। समर्पण की जगह जब स्वार्थ आ जाय तब सो चलो कि मन्थरा आ गई जहाँ मन्थरा है वहाँ रामराज्य कहां ? मन्थरा हमारे जीवन के राजतिलक तत्व को नष्ट कर देती है।

साधक को चाहिये एकान्त में सुखासन में रहे। एकान्त क्यों ? लाख सोंचें, अपने को बचायें पर लोगों के बीच कभी न कभी चित्त विक्षोभ होता ही है। ज्यादा परीचय से कभी मन में राग-द्वेष भी उत्पन्न हो सकता है। लोगों द्वारा प्राप्त आदर-सत्कार से सहृदयता से ही इच्छा हो जाती है कि कुछ बात करलें। सहृदयता से मुस्करालें। फिर धीरे-धीरे विक्षेप होने लगता है। इसी लिए महात्मा कमरा बन्द करके पूजा करते हैं। सन्त-गण एकान्त वास करते हैं।

एकान्त में स्वभाव और संस्कार से शुद्ध पवित्र स्थान पर सुखासन में साधना करे-समाधिस्थ हो नदी, समुद्र का तट, गिरिगुहा वन्य प्रदेश स्वभाव शुद्ध स्थान है। संस्कार शुद्ध स्थान जहां करोड़ों की तादाद में नाम-कीर्तन हो चुके हों, रामायण पाठ, भागवद् पारायण, यज्ञादि हुये हों ऐसी संस्कार शुद्ध भूमि पर बैठकर एकान्त में रहना सीखें—आवश्यकता हो तब प्रकट में रहें। परिवार में रहते हुये भी जब पूरा परिवार सोया हो तब एकात में प्रभु का ध्यान करें। योग में आसन का बहुत महत्व है आसन ऐसा हो कि शरीर तनाव मुक्त रहे। अनुभवी सन्तों ने बताया है कि ४५ मिनट तक किसी आसन में बैठने के बाद कष्ट न हो, तनाव न हो वह सुखासन है। पवित्र नीम के वृक्ष के नीचे बैठकर आचार्य निम्बार्क ध्यान मग्न रहते थे। चैतन्य महाप्रभु लेटे-लेटे प्रभु विरह में रात्रि भर अश्रुपात करते प्रातःकाल तक तकिया अश्रुओं से भीग जाता था। योग्य गुरु, सद्गुरु के अभाव में आसन प्राणायामादि नहीं सीख सकें तो बसंत से खिली भक्ति मार्ग की यात्रा करें। प्राणायाम से अच्छा है प्राणाधार का ध्यान करे।

पर तरे, पर का भी पर जो परमात्मा है एकाग्र होकर ध्यान करे प्रभु चिन्तन करे,

समाधि रत हो। आत्मा पूर्ण है इस भाव का दर्शन नित्य करें। मैं ब्रह्म हूँ, मैं ही परमात्मा हूँ, यह भाव रहे। उपनिषदों में कहा है— "एकोदेव सर्व भूतेषु"। सभी प्राणियों में उसी आत्मा का, ब्रह्म का निवास है।

यह जगत् आत्मा से बाधित है. जगत् से आत्मा बाधित नहीं है। घड़े में मिट्टी है, घड़ा बाधित है। घड़ा जब टूटता है फूटता है तो मिट्टी ही बनेगी। मिट्टी से अनेक रूप की वस्तुएँ बन सकती है। मिट्टी बाधित नहीं है घड़ा मिट्टी से बाधित है। माटी का घड़ा, माटी भी है घड़ा भी है। स्थूल रूप में घड़ा है सूक्ष्म रूप में, अदृश्य रूप में माटी है। घड़े में माटी है, घड़ा मिट्टी से बना है पर माटी में घड़ा नहीं है। परमात्मा जगत् में है। जगत् से परमात्मा बाधित नहीं है। इसका दर्शन करें।

हमने जन्म-जन्मान्तर से कई जन्मों से जो कर्म किये हुए हैं ऐसे सञ्चित कर्म, प्राक्कर्म जिनका कल आना शुरु नहीं हुआ है उन्हें चित-ज्ञान के बल से, विवेक की अवस्था से जला दो, अंकुरित होने से पूर्व ही समाप्त करदो। जैसे स्वप्न में सुख-दुःख का अनुभव होता है पर जागने के बाद स्वप्न के सुख-दुःख नष्ट हो जाते है इसी प्रकार विवेक जाग्रत होने पर सञ्चित कर्मों के फल नष्ट हो जाते है।

वे कर्म जो अब होने वाले है, जिन्हें हम करने वाले है उत्तरावस्था में होने वाले हैं ऐसे जीवन में होने वाले कर्म, क्रियमाण कर्म है उनसे निर्लेप हो जाओ। जब साधक यह सोचता है कि अमुक कर्म मैं कर रहा हूँ तो लिप्त हो जाता है। कर्म को कर्त्ता बनकर नहीं अभिनेता बनकर करें। क्रियमाण कर्म निर्लिप्त होकर करें। पूर्व में किये जिन कर्मों ने फल देना शुरु कर दिया है जो प्रारब्ध कर्म हैं उन्हें सभी को भोगना ही पड़ता है। प्रारब्ध कर्मों ने फल देना प्रारम्भ किया तभी तो जन्म हुआ है अतः प्रारब्ध कर्मों के फल को ज्ञान पूर्वक हँसते-हँसते भोग लें।

ऐसा जीवन जीते-जीते पर ब्रह्म स्वरूप का बोध हो। संसार रूपी दीवारों के कारण जो भ्रम बने हुए हैं उन भ्रमों में भटके नहीं। इस जीवन को परमात्मा के चिन्तन में प्रवृत्त करना हैं।

श्याम बिन्दु तीसरा नेत्र

युगसन्त श्रीमुरारी बापू ने कथा प्रसंग में कहा कि हमारी निम्बार्क परम्परा में श्यामबिन्दु का विशेष महत्व है। आँख की टीकी—कनीनिका काली होती है। भ्रुवों के मध्य में श्यामबिन्दु तीसरा नेत्र है। जो सभी प्रकार के द्वन्द्वों एवं संशयों को जला देता है।

यह तीसरा नेत्र दृष्टि को निर्द्वन्द्व, असंग बनाकर प्रभु दर्शन की क्षमता देता है।

चलो ! अयोध्या चलें !!

श्रीमुरारी बापू का आह्वान

रामकथा के प्रवचन में श्रीमुरारी बापू ने राम जन्मभूमि की पूर्ण भूमिका बड़े प्रभावी ढ़ंग से प्रस्तुत करते हुए भावुक वाणी में सभी श्रोताओं को अवधपुरी में ले चलने जैसा वातावरण बनाते हुए कहा "राम जन्म होने वाला है" चलो! अयोध्या चलें! हमारी राम जन्मभूमि मुक्त हो इस भावना को लेकर अयोध्या चलो।

श्रीबापू के इस भावपूर्ण आह्वान का करतल ध्वनि की गड़गड़ाहट से ३० हजार श्रोताओं ने उत्साह से भगवान् राम की जय बोलते हुए स्वागत किया ।

श्रीमुरारी बापू ने कहा राम जन्मभूमि वैश्विक श्रद्धा का केन्द्र है, सनातन भारतीय संस्कृति का केन्द्र है । जन-जन के हृदय में राम बसे हैं । "राम जन्मभूमि मुक्त हो।"

इसी क्रम में जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री "श्रीजी" महाराज ने अपने प्रवचन में रामकथा के प्रसंग में कहा कि इस कथा का उद्देश्य वर्तमान दूषित वातावरण में जन-जन के जीवन में भगवान् राम के चरित्र, भक्ति एवं भारतीय संस्कृति का प्रचार-प्रसार है । इसी क्रम में आचार्यश्री ने श्रीमुरारी बापू की भावना की पुष्टि करते हुए आह्वान किया कि राम जन्मभूमि की मुक्ति के लिए विशेष प्रयास होना चाहिये ।

युवक लक्ष्मण की भूमिका निभायें

श्रीमुरारी बापू ने कहा कि राष्ट्र की इस विषम स्थिति में आज देश के लोगों को विशेष रूप से नवयुवकों को लक्ष्मण की भूमिका निभाना चाहिये । राम की भूमिका तो देश के आध्यात्मिक पुरुष, आचार्य गण, सन्त गण निभा रहे हैं, राम कार्य में लगे हैं । परन्तु राम कार्य की पूर्ति हेतु लक्ष्मण की भूमिका निभाने वालों की भी परम आवश्यकता है ।

श्रीमुरारी बापू ने कहा कि लक्ष्मण की भूमिका निभाने हेतु लक्ष्मण की तरह जागना पड़ेगा । भगवान् राम पंचवटी में शयन भी कर सकते हैं—परन्तु लक्ष्मण ने पहरेदार बनकर चौदह वर्ष तक निद्रा का त्याग किया था । देश के लिये, भारतीय संस्कृति की रक्षा, आदर्शों, ऋषि परम्पराओं, तीर्थों, धर्म स्थानों की रक्षा के लिये जागरूक रहकर, जाग्रत रहकर कार्य करने की आवश्यकता है ।

श्रीमुरारी बापू ने कहा कि लक्ष्मण ने कभी यश--अपयश की चिन्ता नहीं की । लक्ष्मण के कार्य में अपयश भी प्राप्त होता है । "छोट कुमार खोट बड़ भागी" लोग बुराई भी करेंगे पर कार्य में लगे रहना चाहिये, समय के अनुसार नई लक्ष्मण रेखायें निर्मित करनी होंगी जिसे कोई रावण-दशानन लांघ नहीं सके । लक्ष्मण का कार्य करते समय यदि कभी कोई इन्द्रजीत शक्ति का प्रयोग करके मूर्छित भी करदे तो भारत का कोई हनुमान संजीवनी अवश्य प्रदान करेगा ।

धर्म के क्षेत्र में राजनीति का प्रवेश अनुचित

श्रीमुरारी बापू ने कहा कि धर्म करुणा, प्रेम अहिंसा, परोपकार का क्षेत्र है । धर्म एक विशाल गहन सिद्धान्त है । धर्म को राजनीति पर अंकुश रखने का अधिकार है, राजनीति को धर्म में प्रवेश का कोई अधिकार नहीं है । धर्म राजनीति को संयमित करता है उसे सही दिशा दे सकता है ।

श्रीमुरारी बापू ने उदाहरण देते हुए बताया कि राजतिलक से पूर्व ऋषि वशिष्ठ ने राम को कहा कि राम आज ही सब प्रकार का संयम करो 'राम करहु सब संयम आजू ।'

श्रीमुरारी बापू ने कहा कि धर्म का व्यापक अर्थ नहीं समझकर 'धर्म-निरपेक्षता' के नाम पर आज अनर्थ हो रहा है । एक पक्ष

विशेष का तुष्टीकरण किया जा रहा है।

श्रीमुरारी बापू ने कहा कि जब राज्य के प्रतिनिधि मन्त्री गण किसी के भय से तुष्टीकरण की नीति के कारण सच्ची बात नहीं कहते, खुशामद करते हैं तब राज्य नष्ट हो जाता है। राष्ट्र का पतन हो जाता है।

देश की सेना को आशीर्वाद

श्रीमुरारी बापू ने कहा कि राष्ट्र की अन्तर्बाह्य स्थितियाँ विषम हो रही हैं भगवान् करे कुछ न हो।

श्रीमुरारी बापू ने सभी सन्तों से एवं निम्बार्काचार्य श्री "श्रीजी" महाराज से कहा कि आपके चरणों में इस नव दिन की रामकथा का जो भी पुण्य प्राप्त होने वाला है वह सभी पूर्वाचार्यों के श्रीचरणों के माध्यम से भारत की सेना को समर्पित करता हूँ। आप भारतीय सेना के जवानों को आशीर्वाद प्रदान करें। सभी पूर्वाचार्य आशीर्वाद प्रदान करें जिससे देश की सरहदों की रक्षा हेतु सैनिक जहाँ भी खड़े हो, जिस स्थिति में भी हो कुशल रहें, जागरूक रहे, राष्ट्र की रक्षार्थ सन्नद्ध रहे।

रामकथा-मञ्च पर होली

वृन्दावन से आये हुए स्वामी श्रीगिरिराजजी शर्मा की रासमण्डली द्वारा श्रीरामकथा के विशाल मंच पर होली की लीला प्रस्तुत की गई। श्रीराधा और कृष्ण के परस्पर गुलाब जल एवं गुलाब के पुष्पों से होली खेलने का एक आकर्षक अनूठा दृश्य उपस्थित हो गया।

होली लीला के लिए मणों गुलाब पुष्पों की व्यवस्था की गई थी। सरस पद गान के साथ-साथ गुलाब के पुष्पों की वर्षा का दृश्य बड़ा ही मनमोहक था। मंच के सारे वातावरण एवं छटा को देखकर ऐसा लग रहा था कि मानों व्रज में साक्षात् श्रीराधा-कृष्ण सखी-परिकर को लेकर होली खेल रहे हो।

मंच पर उपस्थित वरिष्ठ सन्त-महात्माहों के साथ अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री "श्रीजी" महाराज भी भाव विभोर होकर इस समय होली में सम्मिलित होकर भगवान् प्रिया-प्रियतम श्यामाश्याम की छवि पर जब पुष्प-पंखुरियों की बौछार कर रहे थे तो ऐसा लग रहा था कि गगन-मण्डल से सावन की मेघमाला ने अनवरत जल के स्थान पर पुष्प-पराग की झड़ी लगा दी हो।

पुष्प-पंखुरियों के पुञ्ज से जब जब प्रिया-प्रियतम की छवि आकंठ मग्न हो जाती थी तब बार-बार पुष्प-पुञ्ज को हटाते हुए देखा गया।

इस होली के मध्य ऐसा भी देखा गया कि सन्त-महात्मा भी भावविभोर होकर परस्पर पुष्प एवं गुलाबजल की वर्षा से एक दूसरे को आप्लावित कर रहे थे।

पाण्डाल में भारी संख्या में उपस्थित दर्शकों का मन-मयूर भी नृत्य करते हुए इस होली में सम्मिलित होने के लिए तरस रहा था। होली लीला के आयोजक बाबा श्रीमाधुरीशरणजी वृन्दावन के पट्टशिष्य बाबा श्रीगोविन्ददासजी एवं भक्तवर श्रीघनश्यामजी सूतवाले तथा श्रीसत्यनारायणजी कन्दोई विशेष स्मरणीय हैं।

होली का यह सरस कार्यक्रम एक घण्टे तक चलता रहा। न्यौछावर एवं आरती के पश्चात् लीला को विराम दिया गया।

श्रीरामकथा मञ्च पर होरीलीला में क्रीड़ारत श्रीयुगलरासविहारी परस्पर केशर मिश्रित गुलाबजल की रंगभरी पिचकारी चलाते हुए अनुपम शोभायमान हैं।

श्रीहोरीलीला महोत्सव में पूज्यपाद आचार्यचरण श्री 'श्रीजी' महाराज एवं युगलन्न श्रीभुरारी नाग

भगवान् राम का मन्दिर बनकर रहेगा

स्वास्थ्य मन्त्री श्रीललितकिशोर चतुर्वेदी ने युगसन्त श्रीमुरारी बापू को माल्यार्पण कर स्वागत करते हुए कहा कि राजस्थान की पावन धरती पर युगसन्त श्रीमुरारी बापू ने यहाँ पधार कर हमें कृतार्थ किया है। श्रीमुरारी बापू भगवान् राम के जीवन के विभिन्न पहलुओं को जनता के समक्ष प्रभावी ढंग से प्रस्तुत कर रहे हैं।

श्रीचतुर्वेदी ने कहा कि मैं राजस्थान की जनता की ओर से श्रीमुरारी बापू का हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ।

श्रीचतुर्वेदी ने कहा कि भगवान् राम हमारे आदर्श के सर्वस्व आधार है, मर्यादा पुरुषोत्तम हैं, राष्ट्रीयता के प्रतीक हैं। जीवन के प्रत्येक क्षण में राम के आदर्शों को अपनाकर ही हम आगे बढ़ सकते हैं। बड़े खेद का विषय है कि आज स्वतन्त्र भारत में भी राम जन्मभूमि पर भगवान् राम के मन्दिर के निर्माण में कठिनाइयाँ आ रही हैं। राम के इस काम के लिये यदि जनता हनुमान् के समान कार्य करने को कटिबद्ध हैं तो अवश्य ही मन्दिर बनकर रहेगा।

श्रीचतुर्वेदी की इस बात का अपार जनसमूह ने तालियों की गड़गड़ाहट से समर्थन किया।

मंच पर श्रीचतुर्वेदी का श्रीसर्वेश्वर रामकथा समिति की ओर से स्वागत किया गया। इसके पूर्व जब श्रीचतुर्वेदी आचार्यश्री के दर्शनार्थ मन्दिर में पहुँचे तो अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री "श्रीजी" महाराज ने आशीर्वाद स्वरूप शाल एवं प्रसाद प्रदान किया।

तीर्थराज पुष्कर की सेवा से मुझे मोक्ष मिलेगा

राजस्थान सरकार के भेड़ ऊन मन्त्री श्रीरमजान खाँ ने तथा साथ में पधारे क्षेत्र के सांसद श्रीरासासिंह रावत ने "रामकथा मञ्च" पर आज श्रीमुरारी बापू को माल्यार्पण कर स्वागत किया।

श्रीरमजान खाँ ने कहा कि आज का दिन मेरे लिये बड़े सौभाग्य का दिन है कि 'रामकथा' मञ्च पर आकर युगसन्त श्री मुरारी बापू को माल्यार्पण कर चरण स्पर्श का एवं श्री "श्रीजी" महाराज के चरणों में बैठने का सौभाग्य मिला।

श्रीरमजान खाँ ने सायंकाल ३ घण्टे तक लगातार बैठकर रामकथा का श्रवण किया। श्रीरमजान खाँ ने कहा कि मैंने पहिले भी ५ वर्ष विधायक के नाते तीर्थराज एवं क्षेत्र की सेवा की है एवं उसी के फलस्वरूप लगातार दूसरी बार विधायक एवं मन्त्री बनने का अवसर प्राप्त हुआ है मेरा विश्वास है कि इस सेवा के पुण्य से ही मुझे मोक्ष मिलेगा। श्रीरमजान खाँ के इस वाक्य पर ३० हजार श्रोताओं ने तालियों की गड़गड़ाहट से स्वागत किया।

कथा के अन्त में उपस्थित जन समूह ने माँग की कि राज्य सरकार के रिकार्ड एवं डाक तार विभाग के रिकार्ड में इस तीर्थ स्थान का नाम सलेमाबाद के साथ निम्बार्कतीर्थ जोड़कर निम्बार्कतीर्थ-सलेमाबाद होना चाहिये। तथा पास में बन रहे बाँध का नाम पुनः "निम्बार्क बाँध" होना चाहिये। जन समूह के आग्रह को देखकर, जनादेश मानकर श्रीखाँ ने घोषणा की, कि यह दोनों कार्य

निश्चित रूपेण हो जायेंगे। मंच पर उपस्थित सांसद श्रीरासासिंह ने भी पूर्ण योगदान देकर उक्त कार्यों को सम्पन्न कराने का विश्वास दिलाया।

स्वतन्त्रता का अर्थ केवल रोटी, कपड़ा मकान ही नहीं है

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री "श्रीजी" महाराज ने कहा कि आज हमारा देश स्वतन्त्र है। पर स्वतन्त्रता अधूरी है। स्वतन्त्रता का अर्थ केवल भौतिक उपलब्धि मात्र नहीं है। केवल मात्र भोजन, वस्त्र और मकान की पूर्ति यद्यपि आवश्यक है किन्तु केवल इसकी पूर्ति मात्र को स्वतन्त्रता नहीं माना जा सकता। अन्न-वस्त्रादि तो परतन्त्र काल में भी उपलब्ध हो जाते थे।

स्वतन्त्रता का अर्थ है हमारी भारतीय वैदिक सनातन संस्कृति एवं सनातन परम्परा के अनुकूल सम्पूर्ण व्यवस्था।

हमारे यहाँ गौमाता के एक रक्त का बिन्दु भी पृथ्वी पर गिरना महापाप माना गया है परन्तु आज स्वतन्त्र भारत में प्रतिदिन हजारों गायों का वध होता है यह अत्यन्त वेदना का विषय है। स्वतन्त्र भारत में गोहत्या कलंक अविलम्ब मिटाना चाहिये।

राम जन्मभूमि, काशी विश्वनाथ, श्रीकृष्ण जन्मभूमि पर बने हुए परतन्त्रता के चिह्न अविलम्ब हटा कर हमारी संस्कृति के अनुकूल पुनर्निर्माण होने चाहिये।

आज देश का वातावरण दूषित होता जा रहा है, असुरक्षा का वातावरण बनता जा रहा है। नित्य हत्याकाण्ड, अनाचार, अत्याचारों के समाचार पढ़ कर हमारे मानस में ठेस पहुँचती है।

"राजा कालस्य कारणम्" और जो देश का वातावरण बिगड़ा हुआ है, उसका मूल कारण सरकार द्वारा धर्मनिरपेक्षता के नाम पर गलत एवं तुष्टीकरण की नीति पर चलना है।

अत: आज जनता द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधि सरकार को अविलम्ब यथेष्ट प्रयास करके इन समस्याओं का समाधान करना अपेक्षित है। ★

रामकथा मञ्च पर विशाल जन समूह के समक्ष अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्री "श्रीजी" महाराज के सान्निध्य में मेवाड़ मण्डलेश्वर श्रीमहन्त श्रीमुरलीमनोहरशरणजी, रामानुजाचार्य श्री केशवाचार्यजी महाराज (नागोर मठ), रामानुजाचार्यजी श्रीअनिरुद्धाचार्यजी महाराज (चांदोद, गुजरात) दादू सम्प्रदायाचार्यजी (नरेना) महन्त श्रीरामदासजी, महन्त श्रीपुरुषोत्तमदासजी महन्त श्रीबालकृष्णदासजी, अ० भा० निम्बार्क महासभा के अध्यक्ष म० श्रीव्रजविहारीशरणजी 'राजीव' आदि सन्त महन्तों एवं आचार्यों ने श्रीमुरारी बापू को माल्यार्पण कर भावभीना अभिनन्दन किया।

श्रीमेवाड़ महामण्डलेश्वर ने अभिनन्दन भाषण में कहा कि रामकथा में आनन्द तो प्राप्त होता ही है पर युगसन्त श्रीमुरारी बापू आनन्द को परमानन्द से जोड़ देने वाले महापुरुष हैं। मुरारी बापू के नाम शब्दों का अपने अर्थों में विश्लेषण करते हुए बताया कि अपने मुख से रामकथा करके राम को रिझा लेते हैं। शरीर और आत्मा को गंगा यमुना-सरस्वती के संगम रूपी रामकथा में डुबो दिया है। श्रीमुरलीमनोहरजी ने भावपूर्ण शब्दों में मुरारी बापू को सम्बोधित करते हुए कहा —

अधरां अटकी आह, भव जल तो भारी घणों।
बाहर कर भर बाथ, नान्यो तर जाणे नहीं।।

रामानुजाचार्य स्वामी श्रीकेशवाचार्यजी महाराज (डीडवाना) ने कहा कि रामकथा में सबके लिए समान रूप से प्रेम बरसता रहा है ऐसा प्रेम-रस चाहे जहाँ नहीं मिलता, चाहे जिसको नहीं मिलता योग्य पात्र ही इसे हृदयस्थ कर पाते है—

प्रेम न बाड़ी निपजे, प्रेम न हाट बिकाय।
राजा-प्रजा जेहो रुचि, शीश काट ले जाय।।

रामानुजाचार्य (चांदोद-गुजरात) स्वामी श्रीअनिरुद्धाचार्यजी महाराज ने बताया कि 'महाभारत' नीति ग्रन्थ है, 'भागवत' आध्यात्म ग्रन्थ है और 'रामायण' चरित्र ग्रन्थ है। रामकथा को जीवन में उतारकर मनुष्य—मात्र को चरित्र सम्पन्न बनाना चाहिये। मनुष्य को राम की तरह अपना जीवन बनाकर चलना चाहिये। रावण की तरह नहीं। रामायण जीवन की पाठशाला है, मानवता का ग्रन्थ है। रामायण में मानवता की शिक्षा है विश्व की किसी भी अन्य जाति के पास ऐसी मानवता की शिक्षा देने वाला ग्रन्थ नहीं है।

दादू पंथ के सम्प्रदायाचार्य श्रीहरिरामजी महाराज ने कहा कि रामकथा के माध्यम से मुरारी बापू ने विश्वव्यापी ख्याति प्राप्त की है। जो विश्वव्यापी ख्याति प्राप्त करता है वह भगवान् का विशेष अंश होता है। भगवान् राम तो गुणातीत, मायातीत निराकार है। "एक राम घट-घट में बोले, एक राम दशरथ घर डोले।" भक्तों की रक्षा के लिये उन्होंने सदेह, साकार अवतार लिया। राम तो घट-घट में है सर्व समर्थ है।

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज ने अपने आशीर्वचन में कहा कि मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् राम और रामायण जैसे ग्रन्थों का विश्वव्यापी प्रभाव है। आचार्यश्री ने हरदा (म० प्र०) के एक २०० वर्षीय परम वयोवृद्ध श्रीब्रह्मचारीजी की फ्रांस यात्रा का संस्मरण सुनाते हुए कहा कि वहाँ के एक प्रमुख शिक्षालय के पुस्तकालय को देखा। एक अलमारी में एक रजत मन्जूषा रखी थी उस मन्जूषा के अन्दर एक और छोटी स्वर्ण मन्जूषा थी उसमें पीतवर्ण के मखमल के वस्त्र में श्रीमद्भागवत, श्रीमद्भगवद्गीता एवं गोस्वामी श्रीतुलसीदासजी की रामायण रखी हुई थी। फ्रांसवासियों की इस प्रकार की श्रद्धा देखकर विद्वान् ब्रह्मचारीजी के आनन्दाश्रु छलक आये। विदेशों में इन ग्रन्थों के प्रति कितनी श्रद्धा है और हमारे देश में राम-कृष्ण की जन्मभूमि की क्या स्थिति है? आचार्यश्री ने आशा व्यक्त की कि श्रीमुरारी बापू जैसे युगसन्त भारतीय संस्कृति और भगवान् राम के प्रति अपनी कथाओं के माध्यम से सम्पूर्ण भारत एवं विश्व के जन-जन के हृदयों में श्रद्धा और भक्ति के भाव प्रवाहित करते रहेंगे।

निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री "श्रीजी" महाराज के साथ श्रीबापू की पुष्कर यात्रा

पूर्व निश्चित कार्यक्रमानुसार जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री "श्रीजी" महाराज के साथ श्रीमुरारी बापू का पुष्कर पधारना हुआ।

निम्बार्कतीर्थ से मार्ग में अनेक स्थानों पर स्वागत किया गया। मदनगंज में आदित्य मिल पर श्रीअश्विनीकुमारजी कानोड़िया द्वारा भावभीना स्वागत किया गया। इसी प्रकार श्रीकिशनगोपालजी, श्यामसुन्दरजी कामदार ने अपने उद्यान में आचार्यचरणों तथा श्रीमुरारी बापू के चरण पूजन के साथ

हार्दिक स्वागत किया।

पुष्कर पहुँचने से पूर्व कई स्थानों पर मार्ग में धार्मिक जनता भारी संख्या में श्री मुरारी बापू के दर्शनार्थ उपस्थित थी।

पुष्कर के श्रीपरशुराम घाट एवं ब्रह्म घाट पर श्रीबापू ने विधिवत् तीर्थगुरु पुष्कर-राज की अर्चना की। परशुरामद्वारा में श्री-बापू के स्वागत में एक सभा का आयोजन हुआ सभा में श्रीजनार्दनजी एवं श्रीगंगाधरजी 'अणु' आदि महानुभावों के प्रवचन हुए।

साथ ही बापू से निवेदन किया गया कि पुष्करतीर्थ के प्रदूषण निवारणार्थ एवं तीर्थ के तल में जमी हुई मिट्टी आदि की सफाई हेतु के उद्देश्य को लेकर रामकथा का एक विशाल आयोजन रखा जाय। सभा में अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्री "श्रीजी" महाराज ने अपने आशीर्वचन में पुष्करतीर्थ की महिमा का वर्णन करते हुए एकत्रित धार्मिक जनता को सम्बोधित किया।

पुष्कर से निम्बार्कतीर्थ के लिए पुनः प्रस्थान किया। अजमेर में श्रीभीमकरणजी छापरवाल की विशेष भावना पर उनके निवास स्थान पर पादार्पण हुआ। छापरवाल परि-वार ने आचार्यश्री एवं श्रीमुरारी बापू के चरण वन्दन करते हुए हार्दिक स्वागत किया।

मार्ग में खातोली नाके वाले बालाजी के मन्दिर पर पुजारी श्रीमनोहरदासजी ने अग-वानी की। ईनाणी परिवार एवं उपस्थित ग्रामीणों ने स्वागत करते हुए परम हर्ष का अनुभव किया।

कथा मण्डप पर श्रीरामायणजी के क्रमशः प्रतिदिन अर्चना करने वाले भक्तों की नामावली

क्रम	नाम	स्थान	दिनांक
१.	भक्तवर श्रीरामेश्वरलालजी तोषनीवाल	बांसवाड़ा	२१-४-९०
२.	,, श्रीभागीरथजी भराड़िया	सेंधवा	२२-४-९०
३.	,, श्रीरामकरणजी बाहेती	बम्बई	२३-४-९०
४.	,, श्रीरामनिवासजी राठी	अहमदाबाद	२४-४-९०
५.	,, श्रीशुकदेवजी मुन्दड़ा	सम्बलपुर	२५-४-९०
६.	,, श्रीत्रिलोकचन्दजी मुसद्दी	वृन्दावन	२६-४-९०
७.	,, श्रीटीकमचन्दजी तोषनीवाल	मकराना	२७-४-९०
८.	,, श्रीकल्याणमलजी सूतवाले	जयपुर	२८-४-९०
९.	,, श्रीरतनलालजी बालदी	रिड़	२९-४-९०

विशालतम [illegible] में परम पूज्य युगमन्त श्रीमुरारी बापू द्वारा रसमयी रामकथा श्रवण का [illegible] लाभ प्राप्त करते हुए चालीस हजार से भी अधिक श्रोतागण।

श्रीरामकथा के पावन अवसर पर कथा मञ्च पर होरीलीला महोत्सव के पश्चात् श्रीनिम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज, श्रीरामानुजाचार्य स्वामी श्रीकेशवाचार्यजी महाराज (डीड़वाना), श्रीरामानुजाचार्य स्वामी श्रीअनिरुद्धाचार्यजी महाराज चादोद (बड़ोदा), दादूसम्प्रदायाचार्य स्वामी श्रीहरिरामजी महाराज (नरेना) आदि के सदुपदेशोपरान्त श्रीललितकिशोरजी चतुर्वेदी स्वास्थ्य मन्त्री (राज०) श्रीराम जन्मभूमि पर अपने उद्गार व्यक्त करते हुए।

अत्यन्त आकर्षक परम भव्यतम पण्डाल में श्रीरामकथा मञ्च पर विराजित अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री "श्रीजी" श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज उपस्थित जनता को उपदेश करते हुए।

नव दिवसीय श्रीरामकथा कार्य विवरण

श्रीमुरारी बापू "निम्बार्क-रत्न" उपाधि से सम्मानित

चक्रराज सुदर्शन प्रदान

"श्रीसर्वेश्वर रामकथा समिति" द्वारा आयोजित ९ दिवसीय 'रामकथा' के समापन समारोह के अवसर पर युगसन्त श्रीमुरारी बापू को निम्बार्क सम्प्रदाय की "निम्बार्क-रत्न" की सर्वोच्च उपाधि प्रदान कर सम्मानित किया गया। यह उल्लेखनीय है कि श्रीमुरारी बापू इस उपाधि से विभूषित होने वाले प्रथम विभूति हैं।

अखिल भारतीय निम्बार्क महासभा के अध्यक्ष मेवाड़ महामण्डलेश्वर श्रीमुरलीमनोहरशरणजी साहित्यायुर्वेदाचार्य ने आचार्यचरण की आज्ञा से उपर्युक्त घोषणा उपस्थित विशाल जन समुदाय, सन्त-महन्तों, विद्वद्जनों की उपस्थिति में जय जयकार और तालियों की गड़गड़ाहट के मध्य की।

श्रीमेवाड़ महामण्डलेश्वर ने श्रीमुरारी बापू के सम्मान में उपाधि पत्र का वाचन कर माल्यार्पण किया।

श्रीमेवाड़ महामण्डलेश्वर ने कहा कि श्रीमुरारी बापू ने 'रामकथा' के माध्यम से इतनी निधि एवं प्रेरणा प्रदान की है कि हम कृत्य-कृत्य हो गए हैं। हम निम्बार्क सम्प्रदाय की ओर से कृतज्ञता प्रकट कर रहे हैं।

इसके पूर्व स्वागताध्यक्ष श्रीअश्विनीकुमारजी कानोड़िया, समिति के अध्यक्ष श्री भीमकरणजी छापरवाल, महामन्त्री श्रीराधेश्यामजी ईनाणी ने श्रीमुरारी बापू को माल्यार्पण कर आभार व्यक्त किया।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में श्रीविश्वामित्रजी व्यास ने मंगलाचरण किया एवं श्रीसर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय के प्राचार्य श्रीवासुदेवशरणजी शास्त्री व्याकरण वेदान्ताचार्य एवं श्रीनवलविहारीशरणजी ने माल्यार्पण किया।

श्रीसर्वेश्वर रामकथा समिति के संरक्षक एवं अखिल भारतीय जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपाठाधीश्वर श्री "श्रीजी" महाराज ने श्री मुरारी बापू को माल्यार्पण कर आकर्षक रजत आधारिका पर स्थित स्वर्णिम चक्रराज सुदर्शन की प्रतिकृति प्रदान की।

श्री "श्रीजी" महाराज ने अपने आशीर्वचन में समुपस्थित भगवद् भक्त श्रोताओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि आप सभी बड़भागी हैं कि श्रीसर्वेश्वर प्रभु के अनुग्रह से युगसन्त श्रीमुरारी बापू के द्वारा भगवान् राम की कथा सुधा का नो दिन तक पान करने का सौभाग्य प्राप्त किया जो अनुप है।

आचार्यश्री ने कहा कि यह निम्बार्कतीर्थ स्थल कोटि-कोटि तीर्थों के गुरु तीर्थराज पुष्कर क्षेत्र के अंक में स्थित है। पूर्वाचार्यों की तप:स्थली इस पवित्र तीर्थ स्थल पर होने से इस कथा का विशेष माहात्म्य बढ़ गया है। आचार्यश्री ने कहा कि इस 'रामकथा' का आयोजन जन-जन के हृदय में आध्यात्मिक अमृतधारा प्रवाहित हो, मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् राम के जीवन चरित्र से सभी

प्रेरणा प्राप्त करें इस उद्देश्य को ध्यान में रखकर किया गया था।

इस कार्यक्रम का दूसरा उद्देश्य पौराणिक निम्बार्क सरोवर जो कि वर्तमान में जीर्ण-शीर्ण अवस्था में है उसका जीर्णोद्धार करवाना है। चक्रावतार श्रीनिम्बार्क भगवान् इस कार्य को सम्पादित अवश्य करेंगे आप सभी का परिश्रम एवं सेवा आवश्यक है।

आचार्यश्री ने आशा व्यक्त की कि जब निम्बार्कतीर्थ सरोवर का जीर्णोद्धार का कार्य सम्पन्न होकर इस सरोवर में जल भर जाये तो एक बार श्रीमुरारी बापू फिर समय निकाल कर यहाँ अवश्य पधारेंगे। और इसी प्रकार पुनः अपनी अमृतमयी श्रीरामकथा से असंख्य भक्तजनों को आनन्दित करेंगे।

अखिल भारतीय निम्बार्क महासभा के महामन्त्री एवं "भक्ति भागीरथी" के प्रधान सम्पादक महामण्डलेश्वर महंत श्रीव्रजविहारीशरणजी 'राजीव' ने भी श्रीमुरारी बापू को माल्यार्पण कर अभिवादन किया।

श्रीमुरारी बापू को श्रीमवंश्वर रामकथा समिति की ओर से एक अभिनन्दन पत्र समिति के अध्यक्ष श्रीभीमकरणजी छापरवाल द्वारा समर्पित किया गया जिसका वाचन श्रीदयाशंकरजी शास्त्री महामन्त्री अखिल भारतीय निम्बार्काचार्यपीठस्थ विद्वत्परिषद् द्वारा किया गया। एवं मञ्च का सञ्चालन भी श्रीशास्त्रीजी ने ही किया।

श्रीरामचरितमानस-हंस, निम्बार्कवीथीपथिक, विश्वविख्यात, तपःसाधनानिरत, त्यागमूर्ति, भक्तिरसपूरितहृदय, परमपूज्य

"युगसन्त" श्रीमुरारी बापू

के कर कमलों में सादर समर्पित

❁ अभिनन्दन पत्र ❁

निम्बार्कवीथीपथिक !

सुदर्शन चक्रावतार आद्याचार्य श्रीनिम्बार्क भगवान् का आविर्भाव दक्षिण भारत के तैलङ्गप्रदेशान्तर्गत गोदावरी तटवर्ती मूंगी-पैठन में हुआ, आपने उत्तर भारत की व्रज वसुन्धरा में पहुँच कर गोवर्धन की सुरम्य तलहटी में तपश्चर्या की, यतिरूप ब्रह्मा से निम्बार्क नाम तथा देवर्षि नारद से वैष्णवी दीक्षा ग्रहण कर श्रुति-स्मृति सूत्र प्रभृति शास्त्रों से समर्थित स्वाभाविक द्वैताद्वैत सिद्धान्त का लोक में प्रवर्तन किया। श्रीराधाकृष्ण युगल स्वरूप की माधुर्योपासना के साथ भक्तितत्व का सर्वत्र प्रसार करते हुए समस्त तीर्थों की यात्रा की, यात्रा में अनेक चमत्कार पूर्ण घटनाएँ घटी हैं। आचार्य परम्परा में रसिक राजराजेश्वर श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज

के पट्टशिष्य श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज प्रसिद्ध आचार्य हुए। आपने विधर्मियों द्वारा आक्रान्त इस प्राचीनतम निम्बार्कतीर्थ का पुनरुद्धार किया और यहाँ निम्बार्काचार्यपीठ की स्थापना की। तीर्थगुरु पुष्करराज के अञ्चल में स्थित ऐतिहासिक निम्बार्कतीर्थ में आपका शुभागमन इस क्षेत्र की जनता के लिए तो मङ्गलकारी है साथ ही आपको भी इस तपोभूमि के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ यह परम हर्ष का विषय है।

मानस–हँस !

हिमालय स्थित पावन जलपूरित मानसरोवर में अवगाहन पूर्वक विहरण करने वाला राजहंस तो केवल स्वयं मोती चुग सकता है, आप तो श्रीरामचरितमानस के अथाह अन्तःस्तल तक पहुँच कर भक्ति रसमय मोती का आस्वादन न केवल स्वयं करते हैं अपितु असंख्य भावुक जनों में वितरण करते हैं। गुणग्राही हंस जलमिश्रित दूध को जल से पृथक् कर केवल दूध ही ग्रहण करता है, आप तो गुणलिप्त मानस में भक्ति रसामृत का सिञ्चन करके उसे रूपान्तरित कर देते हैं। यह आपकी लोकोत्तर प्रतिभा का परिचायक है।

विश्वविख्यातगौरव !

देववन्दित भारत के सौराष्ट्र में जन्म ग्रहण कर आपने सत्पुरुषों की निष्कपट भाव से सेवा शुश्रूषा करते हुए सत्सङ्ग किया, उसके फल स्वरूप विश्व के इतिहास में आपका नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित होगा। भारत में उत्पन्न विद्वान् ब्राह्मणों से विश्व के समस्त मानव सदाचार की शिक्षा ग्रहण करें। मनु की इस उक्ति को सार्थक करते हुए आप देश-विदेश में श्रीरामकथा के माध्यम से सदाचार एवं भक्ति की शिक्षा प्रदान कर रहे हैं। यह हम भारतवासियों एवं देश के लिए परम गौरव की बात है।

तपोधन !

शास्त्र कहते हैं विषयों के प्रति आसक्ति रखने वालों को तपोवन भी दोषयुक्त हो जाता है तथा इन्द्रियों को वश में रखकर शास्त्रानुकूल रीति से ग्रहस्थ जीवन में रहने वालों के लिए घर ही तपोवन होता है। निश्चय ही इसी शास्त्रीय मर्यादा का पालन करते हुए आपने अपना जीवन तपोमय बनाया है। ग्रहस्थाश्रम में रहते हुए भी 'युगसन्त' की मानद उपाधि से आप विभूषित हैं। सन्त एकनाथ, सन्त तुकाराम आदि महापुरुषों का सा आपका जीवन है नित्य अग्नि होत्र, गङ्गोदक सेवन, मौनव्रत, गो सेवा, अतिथि सेवा, सन्त सेवा आदि आर्षपद्धति का परिपालन करते हुए भावुकजनों को अनवरत कथा-सुधा का पान कराते हैं। यह सब भगवत्कृपा एवं सन्तों के अनुग्रह का महान् फल है।

त्यागमूर्ति !

कर्म करते हुए कर्म फल की आशा न रखना ही वास्तविक त्याग कहा गया है। भक्तवत्सल भगवान् त्यागी पुरुषों के हृदय में निवास करते हैं, विपुल वैभव प्राप्त होने पर भी उसमें आसक्ति का लेश न होना महान् त्याग व्रत है। मानो अपने स्वामी को ढूंढने भगवती लक्ष्मी आपके पीछे-

पीछे फिर रही हो ऐसा प्रतीत होता है। क्योंकि आपने उनके प्राणनाथ को अपने हृदय मन्दिर में अवरुद्ध कर रखा है।

सरस हृदय !

आपका हृदय भक्ति रसामृत से परिपूरित है। कथा ही आपका जीवनाधार है। भक्ति के बिना शास्त्रों का ज्ञान निर्गन्ध पुष्प के समान शोभा मात्र है सरस नहीं। आपके मुखारविन्द से निझरित सरस प्रवाहमयी वाणी का श्रवण कर किस मानव का हृदय द्रवीभूत नहीं होगा! आज हम भारत के विभिन्न अञ्चलों से आये हुए और इस पुष्कर क्षेत्र के निवासी सभी जन आचार्यचरणों के सान्निध्य में मधुरातिमधुर श्रीरामचरितामृत का पान कर धन्य-धन्य हुए हैं।

श्रीसर्वेश्वर प्रभु से आपके दीर्घायुष्य एवं सुस्वास्थ्य की अभ्यर्थना करते हुए ऐसा सुअवसर हमें बारम्बार मिलता रहे ऐसी प्रार्थना करते हैं। अन्त में श्रीसर्वेश्वर रामकथा समिति के सदस्यगण समस्त जनता की ओर से कृतज्ञता प्रकट करते हुए आपके कर कमलों में अभिनन्दन समर्पित करते हैं।

हम हैं आपके—

मिति वैशाख शुक्ला ५　　**समस्त सदस्य श्रीसर्वेश्वर रामकथा समिति**
रविवार वि० सं० २०४७　　**अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ**
दिनांक २९-४-९०　　निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) जिला—अजमेर [राज०]

★★

❁ कथासुधा ❁

रसिक मुरारी को रघुवर की कथा सुनाते ऐसा देखा।
प्रेमभाव में श्रोतागण को झूम-झूम कर सुनते देखा ।। टेर ।।

हनुमत लाल को सदा बिठाकर सरस कथा का पान कराते।
जगत् जननी सीतामाता का वन्दन करने ध्यान दिलाते ।।
सभा में सबके मुख से केवल राम-राम ही रटते देखा..........

जीवन मुक्त ब्रह्म-विज्ञानी को यह कथा परमप्रिय लगती।
रस की धारा अमृतमयी है, प्रेम भगनि के जल से भरती ।।
अनुष्ठान इस कथा श्रवण का बिना बताये करते देखा..........

प्रेम स्रोत है, हृदय कमल का अभिसिंचन नित होता रहता।
कथा सुधारस पान करन हित निर्मल गति से बहता रहता ।।
कर्णपुटों को सरिता से मन सागर कभी न भरते देखा..........

लोचन प्यास प्यास ही निरखें, युग-युग का ज्ञान झरोखा।
सन्त मुरारी बापू की नूतत, इस कथा का रूप अनोखा ।।
भवसागर की दीनदशा को कथा मिटाती आँखों देखा..........

—रामलोचनदास

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री "श्रीजी" महाराज स्वर्णमण्डित श्री[illegible] को विश्वविख्यात युगसन्त श्रीमुरारी बापू को प्रदान करते हुए।

श्रीरामकथा समापन पर परम भागवत युगसन्त श्रीमुरारी बापू श्रीरामायणजी के भक्तों द्वारा समर्पित सम्पूर्ण भेंट (धनराशि) श्रीनवेश्वर रामकथा समिति के अध्यक्ष श्रीभीमकरणजी छापरवाल जो भक्तवर श्री[illegible] एवं श्रीरामकरणजी बाहेती के मध्य में खड़े है को प्रदान करते हुए।

श्रीसर्वेश्वर रामकथा समिति के अध्यक्ष श्रीभीमकरणजी छापरवाल इचलकरंजी (महाराष्ट्र) एवं उक्त समिति के उपाध्यक्ष श्रीरामेश्वरलालजी फतेहपुरिया अजमेर (राज०) युगसन्त श्रीमुरारी बापू को अभिनन्दन पत्र समर्पित करते हुए।

मेवाड़महामण्डलेश्वर श्रीमहन्त श्रीमुरलीमनोहरशरणजी युगसन्त श्रीमुरारी बापू को आचार्यश्री द्वारा प्रदत्त सर्वोच्च उपाधि "श्रीनिम्बार्क रत्न" की विशिष्ट उपाधि से अलंकृत करते हुए।

श्रीरामकथा के अन्तर्गत हवनात्मक-

❀ श्रीरामयज्ञ का आयोजन ❀

श्रीरामकथा ज्ञानयज्ञ के अन्तर्गत हवनात्मक श्रीरामयज्ञ का आयोजन हुआ। दि० २२ अप्रेल १९९० ई० रविवार को प्रातः ९ बजे पं० श्रीसत्यनारायणजी शास्त्री अजमेर के आचार्यत्व में कलश यात्रा से यज्ञ का शुभारम्भ हुआ। गणपत्यादि देव पूजन ब्राह्मण वरण एवं निम्बार्कतीर्थ पर वरुणादि पूजन शास्त्रीय विधि से सम्पन्न होकर निम्बार्कतीर्थ से यज्ञ मण्डप तक सौभाग्यवती महिलाओं द्वारा मांगलिक वाद्यों के साथ कलश यात्रा उल्लासमय वातावरण में सम्पन्न हुई। तदनन्तर मण्डप प्रवेश व देव पूजन विधि प्रारम्भ हुई। यज्ञ में १५ विद्वानों ने भाग लिया। यज्ञ के उपाचार्य पं० श्रीगोकुलप्रसादजी भारद्वाज अजमेर एवं ब्रह्मा पण्डित श्रीवासुदेवशरणजी उपाध्याय प्राचार्य श्री सर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय निम्बार्कतीर्थ सलेमाबाद थे।

दि० २३ अप्रेल सोमवार को अपराह्न १।। बजे अरणी मन्थन द्वारा अग्निदेव का प्राकट्य होकर अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री "श्रीजी" महाराज के तत्वावधान में श्रीअश्विनीकुमारजी कानोड़िया सपत्नीक के यजमानत्व में अग्नि स्थापन होकर हवन का शुभारम्भ हुआ। पं० श्रीगोविन्ददासजी 'सन्त' ने इस अवसर पर अपने भाव सुमन सर्मपित किये और आचार्यश्री ने अपने शुभाशीर्वचन से यजमान व विद्वानों को कृतार्थ किया। अपराह्न ३।। बजे आचार्यश्री के साथ युगसन्त श्रीमुरारी बापू ने यज्ञशाला में दर्शनार्थ पधार कर हार्दिक प्रसन्नता व्यक्त की। साथ ही आचार्यपीठ के कुछ विभागों (श्रीराधामाधव गोशाला, श्रीसर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय, रासलीला मञ्च आदि) का अवलोकन करके जीर्णोंद्धाराधीन श्रीनिम्बार्कतीर्थ सरोवर का विशेष रूप से अवलोकन करते हुए आचार्यश्री से विस्तार पूर्वक सरोवर सम्बन्धी ऐतिहासिक जानकारी प्राप्त की।

यज्ञ मण्डप की शोभा वर्णनातीत है। स्थायी रूप से इस यज्ञशाला का निर्माण एवं लीला मञ्च का भव्य स्वरूप आचार्यपीठ की एक सुन्दर उपलब्धि है। दर्शक श्रोताओं को इनके उपयोग में श्रीरामयज्ञ तथा रासलीला का पावन आनन्द दि० २१ से दि० २९ अप्रेल १९९० तक निरन्तर मिलता रहा।

झलकियाँ

★ दि० २१-४-९० ई० को मध्याह्न १ बजे श्रीमुरारी बापू ने निम्बार्कतीर्थ में प्रवेश किया तब हजारों स्त्री-पुरुष हाथों में पुष्प लिए मुरारी बापू के स्वागतार्थ चिलचिलाती धूप में खड़े मुरारी बापू की एक झलक पाने के लिए व्याकुल हो रहे थे ।

★ श्रीमुरारी बापू की रामकथा प्रवचन की सरसता देखने योग्य ही बन पड़ती है जब सुबह श्रीमुरारी बापू रामकथा पर व्याख्यान दे रहे थे तो रोड़वेज की बसें भी पाँच से दस मिनट के मध्य पाण्डाल के समीप रुककर जाती थी व बस में बैठे यात्रियों को बरबस ही भाव विभोर होकर निम्बार्कतीर्थ में उतरने को बाध्य होना पड़ता था ।

★ "श्रीराधे-राधे" की कीर्तन में पाण्डाल में कई भावुक भक्त नृत्य तो कर ही रहे थे साथ ही एक विचित्र घटना यह भी थी कि पाण्डाल में श्रीमुरारी बापू के सन्निकट एक वन में स्वच्छन्द विचरण करने वाला तोता भी निश्चल भाव से "राधे-राधे" की ध्वनि में तन्मय हो रहा था ।

★ श्रीमुरारी बापू की ओजस्वी वाणीयुक्त रामकथा में वह बल उत्पन्न हुआ कि रविवार को महाभारत के समय भी हजारों की संख्या में भक्तगण, राम-नाम का रसास्वादन करने हेतु पाण्डाल में उपस्थित थे ।

★ महाभारत टी० वी० सीरियल के समय भक्तगण बड़ी दुविधा में व्याकुल बने हुये थे । एक तरफ लोकप्रिय सिरियल व दूसरी तरफ रामकथा का श्रवण । आयोजकों ने इस दुविधा का निवारण बड़ी सूझबूझ के साथ निकाला कि महाभारत की विडीयो कैसट रामकथा के विराम पर भक्तों को दिखलाई गई ।

★ रविवार का अवकाश होने की वजह से प्रथम दिवस के अपेक्षा तीन गुने अधिक संख्या में भक्तगण आज निम्बार्कतीर्थ में रामकथा का रसास्वादन लेने हेतु इकट्ठे थे ।

★ कथा के मध्य श्रीमुरारी बापू ने आचार्य श्री "श्रीजी" महाराज से प्रश्न किया कि इसका सलेमाबाद नाम क्यों पड़ा, यह तो प्रसिद्ध निम्बार्कतीर्थ है, इसका नाम बदलना चाहिये । इस प्रश्न से पाण्डाल करतल ध्वनि से गून्ज उठा । आचार्यश्री ने भी मन्द-मन्द मुस्कराकर इसमें अपनी मौन स्वीकृति दी ।

★ युगसन्त जब "विरह" की चर्चा कर रहे थे, तो कृष्ण विरह का प्रसंग आने पर कई महिलाओं के नेत्रों में आंसू बह चले ।

★ श्रीमुरारी बापू अपने भक्तों का भी पूरा ध्यान रखते हैं । एक भक्त आगे बनी हुई विशिष्ट पंक्ति में आकर बैठ गया वहाँ तैनात कार्यकर्ताओं ने उसे वहाँ से हटाना चाहा तो श्रीबापू ने कार्यकर्ताओं को निर्देश दिया कि 'प्रभू इन्हें बैठा रहने दो' ।

★ मुरारी बापू ने पाण्डाल में युवाओं की अधिकता को देखकर प्रसन्नता व्यक्त की ।

★ पाण्डाल में गर्मी से अनेक व्यक्ति व्याकुल हो रहे थे, बिजली के पर्याप्त पंखाओं की व्यवस्था रहने पर भी हाथ पंखे से स्वयं और

पास में बैठे भक्तगणों को राहत पहुँचा रहे थे।

★ रामकथा का पाण्डाल में इतना प्रभाव हो रहा था कि कुछ शिक्षित युवक-युवतियाँ जिनको प्रथम दिन "राम-नाम व राधे-राधे" लेने में कुछ लज्जा आ रही थी, दूसरे दिन कुछ कम होती हुई चतुर्थ दिन तो पूर्ण भावना व तन्मन्यता से वे गा रहे थे।

★ 'श्रीराधे-राधे' की मधुर उच्चारण से पाण्डाल में ऐसा प्रत्यक्ष अनुभव हो रहा था कि सभी भक्त कृष्ण की विरह में नाच रहे थे, वृन्दावन की कुञ्ज गलियों जैसा मनोरम दृश्य उत्पन्न हो रहा था, मानो स्वयं कृष्ण 'राधे-राधे' गाते हुये राधा की विरह में तड़प रहे हों।

★ पाण्डाल मञ्च पर एक महिला इतनी भावविभोर होकर नृत्य कर रही थी, कि उसे आने गिर जाने का लेशमात्र भी दु:ख नहीं हुआ, वह पुन: खड़ी होकर नृत्य करने लगी।

★ महिलाएँ राजस्थानी पोशाक में घूँघट निकाले बड़ा ही मनोरम नृत्य प्रस्तुत कर रही थी।

★ पाण्डाल मञ्च के समीप ही किसी ने लाउडस्पीकर चला रखा था, जिससे कथा में निरन्तर व्यवधान पड़ा। एक बार तो स्वयं श्रीबापू ने उसे बन्द करने का आदेश दिया फिर भी बन्द नहीं हुआ तो कुछ क्षण राम कीर्तन करके 'लाउड स्पीकर' बन्द होने की प्रतीक्षा की।

★ श्रीमुरारी बापू पिता-पुत्री (हिमालय-पार्वती) के प्रेम की चर्चा में उनके परायी हो जाने की व्याख्या समझा रहे थे तो, सूरत से आई दो गुजराती लड़कियों की आँखों में अविरल अश्रुधारा बहने लगी।

★ 'युगसन्त' श्रीमुरारी बापू ने भक्तों को एक तरह से प्रश्न करते हुये कहा कि आप लोग यहां क्यों आते हो? तब पाण्डाल में एक सन्नाटा सा छा गया तब उन्होंने उस सन्नाटे को तोड़ते हुये कहा कि—हमारा तो क्या, हम तो दीवाने ठहरे, चले तो चले, बैठे तो बैठे, लेकिन तुम्हारी नजर, इतनी बेताब क्यूं है? तुम्हें भी कोई गम सताने लगा है, नशे में जमाना, जमाने में हम भी: हम पर इलजाम आने लगा, सभी मस्त हैं, कोई किसको संभाले जिसे देखे वो, लड़खड़ाने लगा। नशे में जमाना ......।

★ श्रीमुरारी बापू विद्वान् होने के साथ-साथ बेहद विनोदी स्वभाव के भी हैं, कथा के बीच-बीच में हास्य का पुट देने से कथा अत्यधिक रोचक बन पड़ती है। आज हास्य की निम्नांकित पंक्तियाँ कही जिसमें एक पिता-पुत्र का वार्तालाप है। पुत्र—पिताजी मैं इतना बड़ा कब होऊंगा जब बाजार से स्वयं माँ से बिना पूछे सब्जी खरीद सकूं। पिता – बेटा, मैं स्वयं अभी इस लायक नहीं हो सका, तेरी तो क्या बिसात।

★ श्रीमुरारी बापू ने निम्न पंक्तियों के साथ (वर्तमान में सन्तों की महिमा) भक्त-गणों को तालियाँ बजाने पर बाध्य कर दिया, प्रस्तुत है वे पंक्तियाँ—

इतने बदनाम हुये, इस जमाने में।
लगेगी सदियाँ आपको हमें भुलाने में।।

★ ● ★

अनमोल वचन

★ साधु कभी हिंसा सह नहीं सकता, चाहे शस्त्र से हो या शास्त्र से।

★ व्याख्या सब पराई है, अनुभव स्वयं अपना होता है।

★ अगर आपको कुछ समझ में नहीं आता है तो समझ लेना कि इसके पीछे कठोर अनुभूति है।

★ आनन्द का कारण-तीर्थ प्रभाव।

★ महापुरुषों की तपस्या का कारण भी आनन्द बन जाती है।

★ शरीर में आत्मा का आरोहण विरोध पैदा करता है।

★ देह आत्मा नहीं है, आत्मा का वस्त्र है।

★ देह वासना का पिण्ड है।

★ आत्मा तो परमात्मा का प्रतिबिम्ब है।

★ देह जड़ है, आत्मा चेतन है।

★ अपने जीवन में अपने इष्ट व सद्गुरु के अलावा किसी और को आश्रय मत दो।

★ गुरु सहानुभूति देता है और सद्गुरु 'समानानुभूति' करता है।

★ पतिव्रता स्त्री दूसरे से रक्षा की गुहार नहीं करती।

★ ममता ईश्वर से करो, समता सबसे करो।

★ अहन्ता और ममता, उपासना में विरोध है।

★ अपने जीवन को कभी निम्न मत मानो।

★ अपने को वैष्णव नहीं मानना, प्रभु को बुरा लगता है।

★ साधक सक्षम होना चाहिये।

★ मांगना सबसे बुरी बात है।

★ सरिता समुद्र में विलीन होती है न कि समुद्र सरिता में।

★ एकान्तवास कठिन है।

★ मर्यादा लाँघ कर कार्य नहीं करना चाहिये।

★ मूर्ख की मंडली में हँसना नहीं चाहिये।

★ कन्जूस की सेवा से कोई फल नहीं मिलता है।

★ खराब स्वभाव व कुलक्षण वाली नारी से दूर रहना चाहिये।

★ श्वसुर के घर में जमाई को ज्यादा दिन नहीं रुकना चाहिये।

★ कभी अधम को परिचय मत देना।

★ विरह से विशिष्ट संयोग व एकाग्रता आती है।

★ संयोग में सुख अवश्य मिलता है, लेकिन क्षणिक होता है।

★ ऊपर से जो नीचे आये उसको धारा कहते हैं। नीचे से जो सबको ऊपर ले जाये उसे 'राधा' कहते हैं।

★ सुख में आंसू क्षणिक आते हैं, लेकिन विरह में तो निरन्तर चलते रहते हैं।

★ साधक को प्रभु की ओर ले जाने के लिये निम्न तीन नियमों का पालन करना चाहिये। १. मन संयम २. गुरु निर्देश ३. हरिनाम।

★ दुःख बुद्धि को स्वच्छ रखता है। दुःख जीवन में अनिवार्य है।
★ सुख की सुरक्षा में दुःख ही दुःख होता है।
★ चरित्र देखने से ज्यादा अच्छा है, चरित्र शील बनो।
★ राजमद उसको सताता है, जिसने सन्त समागम नहीं किया है।
★ अहंकार से सावधान रहो।
★ मनुष्य को नित्य वेद का पाठ करना चाहिये।
★ गीता, रामायण, उपनिषद् व भागवत वेद स्वरूप ही है।
★ मनुष्य का किया सृजन पूर्ण नहीं हो सकता।
★ काम्य मति का परित्याग करो।
★ शांति अतृप्त हो जाये उसे पाप कहते हैं।
★ पाप कामनाओं से होता है।
★ सन्त दर्शन से पाप मिट जाते हैं।
★ संसार के सुखों में दोष दर्शन करना चाहिये।
★ आत्म इच्छा को प्रबल बनाओ।
★ आत्म ज्ञान की प्रबल इच्छा साधकों के लिये आवश्यक है।
★ देह को परोपकार में लगाओ।
★ कर्तव्य में प्रतिकार मिलता है तो वैराग्य उत्पन्न होता है।
★ काम विषयक आकर्षण, भावनामय आकर्षण नहीं हो सकता।
★ आशा त्याग दो, आशा बन्धन में डालती है।
★ क्रोध में आदमी स्थिर नहीं रह पाता है।
★ गुरु आज्ञा बिना कोई कार्य नहीं करना चाहिये।
★ ईश्वर चरण में जो रह जाते हैं, उनका दुनिया में कुछ भी नहीं होता है।
★ सरलता ही अहंकार तोड़ता है, तत्पश्चात् भक्ति मिलती है।
★ समय निकल जाने के पश्चात् पश्चात्ताप नहीं करना चाहिये।
★ हिन्दू धर्म के विविध पंथ, भारतीय संस्कृति के वैभव हैं।

संकलनकर्ता—कमल जोशी

❋ भावनात्मक सन्देश ❋

परम भागवत युगसन्त श्रीमुरारी बापू द्वारा श्रीरामकथा प्रवचन का विराट् आयोजन अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ निम्बार्कतीर्थ-सलेमाबाद में अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी' श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज के संरक्षण में सं. २०४७ दि० २१-४-९० से २९-४-९० तक हो रहा है, यह महान् महत्व का कार्य है, यही प्रवाह विश्वविख्यात युगसन्त श्रीमुरारी बापू द्वारा, उज्जैन में राम सुधारसवर्षिणी वाणी से हुआ है, तथा मैं उक्त समय में नव दिवसीय रामचरित भक्तिरस के जन मानस की एक अकिञ्चन लहर ले रहा हूँ, मुझे रामचरितमानस के महामनीषी श्रीमुरारी बापू के कथामृत का रसास्वाद श्रीसर्वेश्वर के अनुग्रह से कर, जीवन सार्थक करने का अलभ्य लाभ मिला है।

वस्तुतः युगसन्त श्रीमुरारी बापू रामचरितमानस के महामनीषी हैं इनकी वाणी में सरस्वती का निवास है, मैं सारी समिति के सदस्यों का निमन्त्रणार्थ आभार मानता हूँ एवं श्री 'श्रीजी' महाराज के चरणों में सादर प्रणाम करता हूँ। **— उत्सवलाल तिवारी 'सुमन' उज्जैन**

संरक्षक गु० गो० ब्राह्मण महासभा

अमृत बिन्दु

"युगसन्त" श्रीमुरारी बापू हरिव्यासी के सदुपदेश

★ प्रत्येक युवान भाई-बहनों से मैं कहता हूँ कि तुम खूब पढ़ो, खूब प्रगति करो। परन्तु जीवन ऐसा जिश्रो कि तुम्हारे माता-पिता को सन्तोष प्राप्त हो।

★ प्रत्येक माता-पिता का कर्तव्य है कि उसकी सन्तानों को प्रेरणा मिले वैसा जीवन जियें, बचपन से ही बच्चों में ऐसे संस्कारों का सर्जन करो। अपने बालक को शान्ति से बैठाकर उसके सिर पर हाथ रखकर कहो कि बेटा, तूने उपन्यास कथायें तो बहुत पढ़ो, अब थोड़ी गीता भी पढ़ो।

★ अमुक समय तक माताओं को अपना दूध अवश्य पिलाना चाहिए, इससे ही आनुवंशिक संस्कार आयेंगे।

★ सन्तान सब उत्तरदायित्व ले सकेंगे, जब ऐसा प्रतीत हो तो समझ बूझकर तमाम जबाबदारी उन्हें सौंप दो। लड़के छीन लें और रोते-रोते देना पड़े, इसकी अपेक्षा समझ बूझकर दे देना हितावह है।

★ पदार्थ की लूट, चीज वस्तुओं की चोरी तुम्हारी भूख को कम नहीं कर सकती। परन्तु यदि तुम सभी के साथ सद्भावपूर्ण और सेवाभावी व्यवहार के द्वारा लोक हृदय के प्रेम को लूट सकोगे, लोगों के चित्त की चोरी कर सकोगे, तो तुम्हारे आत्मा की भवोभव की भूख खत्म हो जायगी।

★ जिसके जीवन का प्रारम्भ सूर्योदय से पूर्व होता है, वह दशरथी (दैवी) प्रकृति का मानव है, और जिसके जीवन का प्रारम्भ सूर्योदय के बाद होता है, वह दशाननी (आसुरी) प्रकृति का जीव है।

★ ईश्वर को याद करते समय यदि आँखों से अश्रुधारा बहने लगे, तो समझ लेना तुम्हारी प्रार्थना इष्ट तक पहुँच गयी।

★ सभी लोग नित्य कर्म करो। तुम सनातन धर्म के हो, वैदिक परम्परा के अवतार हो। थोड़ा ही नित्यकर्म करो, ज्यादा नहीं तो पाँच मिनट।

★ अर्वाचीन समय में हमारे घर होटलों और क्लबों के समान होने लगे हैं। ब्राह्ममुहूर्त में उठो, दीप प्रकटावो, प्रभु के गीत गावो, सायं घर के सभी सभ्य मिलकर पाँच मिनट प्रभु की प्रार्थना करो।

★ आफिस या किसी व्यवसाय पर जाने से पहले प्रातःकाल स्नान करो, पाँच मिनट अपने इष्टदेव के सामने खड़े रहो। प्रार्थना करो। 'मैं जाता हूँ, मुझे शक्ति प्रदान करो, मुझसे अन्याय न हो ऐसी प्रेरणा प्रदान करो।'

★ कुटुम्ब के सभी व्यक्ति एक साथ बैठकर प्रार्थना करो, इसके लिए कुछ समय अवश्य निकालो। प्रार्थना का समय धीरे-धीरे बढ़ाते जाओ।

★ किसी न किसी भाँति यदि हम ईश्वर से सम्बन्ध बाँध लेंगे, तो ईश्वर हमारा कल्याण करेगा।

★ वही प्रार्थना हरि के दरबार तक पहुँचती है, जो आँसुओं से शुरू होती है।

★ यौवन, यह जीवन का केन्द्र है। भारतीय संस्कृति के आधार पर मनुष्य को अपने यौवन को दिव्य बनाना हो, तो मनुष्य को छः अति से बचना चाहिये। अतिशय बोलना नहीं, अतिशय चलना नहीं, अतिशय सोना नहीं, अतिशय भोजन न करना, अतिशय क्रोध न करना, अतिशय विषय भोग से दूर रहना।

★ इस संसार में मनुष्य अपने संस्कारों से अच्छा लगता है, वस्त्र से नहीं। अन्यथा हमारे साधु-सन्त केवल लंगोटी ही पहनते थे, किन्तु आश्रम के द्वार में प्रवेश करते ही मनुष्य अपने वाहनों से नीचे उतर जाते थे।

★ भारत का ऋषि गृहस्थियों से सम्पत्ति नहीं, संतति मांगता था – देश अस्मिता के काम करने की यह याचना थी और भारत का गृहस्थ उसे प्रेम से देता था। कारण कि, भारत की संस्कृति त्याग करके भोगने में आनन्द मानती थी।

★ देव बनना बहुत कठिन नहीं है। ज्यादा पुण्य करो, देव बन जाओगे। कठिन तो यह है कि हम जिस स्थान पर श्वास लेते हैं उस स्थान पर सच्चे मानव को बनाना, कठिन यह है कि हम जिस देश में पैदा हुये हैं उस देश के ऋषियों का श्राद्ध कर सकें, ऐसी योग्यता प्राप्त करना।

★ मानव जीवन एक पवित्र यज्ञ है। इसमें अनेक विकार, वासनायें, उपाधियां और चिन्ताएँ तथा निर्बलताएँ विक्षेप करती हैं। जीवन यज्ञ को परिपूर्ण नहीं होने देती। जीवन यज्ञ को धन्य बनाना हो तो राम-लक्ष्मण को जीवन में लाना पड़ेगा। राम अर्थात् सत्य और लक्ष्मण अर्थात् समर्पण। जिसके जीवन में सत्य और समर्पण आ जाए, उसका जीवन यज्ञ धन्य बन जाता है।

★ जीवन को धन्य बनाना हो तो सभी के साथ समन्वय करो। दीनजनों को प्रेम से स्वीकार करो और मन प्रभु को अर्पण करो, तुम कृत्यकृत्य बन जाओगे।

★ जीवन में सुवास और प्रभु में विश्वास, इस सूत्र को यदि हम अपने जीवन में चरितार्थ कर सकें तो जीवन धन्य बन सकता है।

★ ईश कृपा की वर्षा प्रत्येक व्यक्ति के ऊपर समान रूप से हो रही है, परन्तु जिसके पात्र की–जीवन के तल भाग की अर्थात् जिसकी श्रद्धा प्रबल नहीं होगी, जिसकी श्रद्धा में छिद्र और दरारें होगी उसके पात्र में प्रभु की कृपा बह जायेगी, परन्तु जिस पात्र का नीचे का भाग मजबूत होगा, वहीं प्रभु की कृपा ठहर सकेगी।

★ प्रभु की कृपा होने पर विष अमृत बन जाता है। दुश्मन मित्र बन जाता है। समुद्र गाय के खुर के समान खड्डा बन जाता है अर्थात् सभी विघ्न दूर हो जाते हैं।

★ प्रभु की कृपा ही मनुष्य को प्रभु का गुणगान करने की प्रेरणा देती है। उसकी कृपा से ही मनुष्य हिमालय सदृश विराट् अवरोधों को पार करके प्रभु चरणों में पहुँचने की शक्ति प्राप्त करता है।

★ केवल राम नाम का जप करें, परन्तु उसके साथ राम कार्य का समन्वय न कर सके तो प्रभु कृपा की वर्षा नहीं हो सकती। राम काम और रामनाम का समन्वय करो।

प्रेषक –

प्रिः श्रीकृष्णशरणाचार्य 'विमल'

स० श्रीभक्ति भागीरथी, अहमदाबाद

श्रीनिम्बार्कसम्प्रदाय और भगवान् श्रीराम

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्री "श्रीजी" महाराज के अमृतवचन

अखिलब्रह्माण्डनायक, क्षराक्षरातीत, जगज्जन्मादिहेतु, ब्रह्मरुद्रेन्द्रादिकिरीटकोटीड़िनपादपीठ परब्रह्म, अनुग्रहविग्रह, कौशल्यानन्दवर्द्धन, दशरथतनय, मर्यादापुरुषोत्तम भगवान् श्रीरामभद्र का पावनतम चरित कितना समुज्ज्वल, दिव्य और शास्त्रमर्यादाओं से निबद्ध है—इसे प्राकृत भाषा में अङ्कित करना अति कठिन है। लोकाभिराम भगवान् श्रीराम का ऐसे अत्यन्त भीषण संकटकाल में आविर्भाव हुआ, जबकि दुर्दान्त रावण-कुम्भकरण एवं मेघनाद-खरदूषण-जैसे अगणित प्रबल अत्याचारी क्रूरकर्मा निशाचरों का अतिशय प्राबल्य था। गो-ब्राह्मण-साधुजन देवगण, ऋषि-मुनि-महात्मा नाना प्रकार से महाघोरकर्मपरायण इन असुरों के अकल्पनीय भयंकर कुकृत्यों से अत्यन्त उत्पीड़ित थे। त्रिभुवनविमोहन करुणा-वरुणालय श्रीराघवेन्द्र सरकार ने कृपा कर इन नृशंस दुष्ट दैत्यों का दलन और प्रपन्न भक्तजनों का परित्राण कर वैदिक-धर्म एवं शास्त्रमर्यादा की सम्यक् प्रकार से स्थापना की। आपके लोकपावन चरित का श्रवण, मनन और निदिध्यासन कर आज भी विभ्रान्त मानव सत्पथानुगामी बनकर आपकी महामहिमामयी परमानुकम्पा का सद्भाजन बन जाता है, तथा आपके अति दुर्लभ मधुर दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त कर लेता है। भगवान् श्रीराम के सभी चरित्र इतने आदर्श और महान् हैं कि उनके स्मरण मात्र से ही त्रिविध ताप एवं पातकोपपातक पल भर में ही प्रणष्ट हो जाते हैं।

रघुकुलतिलक श्रीराम के अखण्ड साम्राज्य में सर्वत्र सुख शान्ति की अजस्र धारा प्रवाहमाण थी। सम्पूर्ण प्रजा धन-जन-समृद्धि से सम्पन्न थी और नित्यनव हर्षोल्लास का अनुभव करती थी। जनकतनया श्रीसीताजी सहित श्रीरामभद्र की अतुलित-अनुपम-सौन्दर्य-माधुर्य-जन्य विलक्षण शोभा के दर्शन हेतु अगणित देवऋषि-मुनि वृन्द आ-आकर अपनी अनन्तकाल की उपार्जित तपः साधना की उपलब्धि का साक्षात्कार करते थे। असीम बलनिधान पवनतनय श्रीहनुमान् जिन भगवान् श्रीराम के युगल पदकंज में सदा अनुरक्त रहते थे, उन प्रभु की इच्छित सेवा-सामग्री को सतत प्रस्तुत करना कैसी आदर्श और उत्कृष्ट भक्ति का निदर्शन है। श्रीप्रभु के सुविस्तृत राज्य में धर्म और नीति के अद्वितीय मर्मज्ञ महामुनि श्रीवशिष्ठ-जैसे प्रमुख परामर्शदाता का होना रामराज्य की गरिमा का महत्तम द्योतक था। अवधेश महाराज दशरथ और माता कौशल्या का अनिर्वचनीय अगाध अनुराग बरबस किसे अनुप्राणित नहीं कर देता।

लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न जैसे परम अजेय महामहिम भ्राता रामाज्ञा के अनुपालन में सर्वदा विनम्र-भाव से सन्नद्ध रहते एवं तदनुवर्तन में अपना अतिशय सौभाग्य मानते हैं।

इस प्रकार मानव-जीवन का यथार्थ प्रेरक एवं उदात्त उद्बोधनप्रदायक मर्यादापुरुषोत्तम भगवान् श्रीराम का त्रैलोक्यपावन मङ्गलमय चरित सामने है। वह जिस दृष्टि से भी देखा जाय, सर्वोत्कृष्ट और दिव्यातिदिव्य है। नीलाम्बुजश्यामल कोमलाङ्ग हृदयरमण नयनाभिराम श्रीराघवेन्द्र प्रभु के निखिललोकवन्दित परमाद्भुत चरित का श्रुति-स्मृति-पुराणतन्त्रादि धर्मशास्त्र एवं वाल्मीकि रामायण, अध्यात्म रामायण प्रभृति अनेक रामायणों तथा अनेक ऋषीश्वर, सम्प्रदायाचार्यों, सन्त महात्माओं ने भी भव्य, सरस और अति विस्तृतरूप से वर्णन किया है। श्रीरामचरितमानस तो प्रसिद्ध ही है। श्रीगोस्वामीजी ने जिस अनूठे प्रकार से मानस का प्रणयन किया है, वह अद्वितीय है। श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय के सर्वमूर्द्धन्य पूर्वाचार्य एवं परवर्ती आचार्यचरणों ने भी श्रीराम महिमा का गुणगान जिस अनुपमेय, अतिललित भाषा में किया है, वह भी विशेषतः द्रष्टव्य है।

श्रीमन्निम्बार्काचार्यपीठाधिरूढ़ जगद्विजयी जगद्गुरु श्रीकेशवकाश्मीरिभट्टाचार्यजी महाराज ने "श्रीकृष्णशरणापत्तिस्तोत्र" में भगवान् श्रीकृष्ण की दर्शनाकांक्षा करते हुए भगवान् श्रीराम की भी प्रपत्ति बड़ी ही सरसता से की है –

श्रीरामचन्द्र रघुनाथ जगच्छरण्य राजीवलोचन धनुर्धर रावणारे।
सीतापते रघुपते रघुवीर राम त्रायस्व केशव हरे शरणागतं माम्॥

(श्रीकृष्णशरणापत्तिस्तोत्र, श्लोक ४)

श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर जगद्गुरु श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज ने भी अपने "श्रीपरशुरामसागर" नामक वृहद् ग्रन्थ में अनेक दोहों और पदों से राजीवलोचन भगवान् राम का गुणगान किया है। उदाहरणार्थ –

रंक विभीषन कौं दयो, लै रावन को राज।
'परसा' परम उदार अति, राम गरीब निवाज॥

'परसा' हित करि सेइयै, हरि तारन भवपार।
और न को रघुनाथ सम, नेह निबाहन हार॥

घर बाहर सनमुख सदा, हरि जहँ-तहँ इक तार।
रामचन्द्र भजि "परसराम" दाता परम उदार॥

रामचन्द्र दशरथ सुअन, 'परसा' परम उदार।
लंक दई जिन हेत करि, भयो अवधि दातार॥

जिन तारी सिल सिंधु परि, 'परसराम' सो राम।
ता सुमिरयां सब सुद्धरै, करिये जो कछु काम॥

(श्रीपरशुरामसागर खंड २, दो० ९, ११, १३, १४, १७ पृ० ३४)

पद-रज पावन राम ! तुम्हारी ।
सद्गति भई सिला अब-हीं-अब, देखि प्रकट साखी रिषि नारी ।।
पलट गयो पाषान पलक में, यह अचिरज लागत अति भारी ।
कटे कलंक सकल, पद-पंकज परसत दिव्य देह जिनि धारी ।।
बरनि सकै कवि कौन-सुमहिमा जानि अजानि मेम बिसतारी ।
सोइ दीजै, रघुनाथ ! कृपा करि 'परसा' जन-रज काज भिखारी ।।

(श्रीपरशुरामसागर खंड ४ पद ३६, २, पृ० ११९, २०५)

इसी प्रकार श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधिपति जगद्गुरु श्रीवृन्दावनदेवाचार्यजी महाराज ने अपने निजप्रणीत "गीतामृतगङ्गा" नामक वाणी-ग्रन्थ में अवधेशकुमार श्रीरामलला की महिमा का अनेक स्थलों पर बड़ा ही मार्मिक वर्णन किया है । यथा—

जय-जय रघुवर ! करुणासागर ! कार्मुकहस्त ! अयोध्यानागर !
भव-भयखण्डन ! निजजनमंडन ! हय-खरक्रूनदानवपुर-कंडन
जनकसुता-सहचर गुणराशे, वितर दयां "वृन्दावनदासे"

जागु रे, मनुवां ! लै रे राम कौ नाम ।
काम-क्रोध-मद-लोभ-मोह में कत भटकत बेकाम ।
विनसि गएं तन छिनक एक में कोउ न छुवै है चाम ।।
'(श्री) वृन्दावन' यह समझि, बावरे ! बेगि पकरि निज धाम ।।

(श्रीगीतामृतगङ्गा, घाट १०, १३, पद २०, ६)

श्रीनिम्बार्काचार्यपीठसमारूढ़ आचार्यवर्य जगद्गुरु श्रीगोविन्दशरणदेवाचार्यजी महाराज ने भी अपनी अति मनोहर मञ्जुल पदावली में रघुकुलतिलक जनकसुतापति विश्व-विमोहन श्रीराघवेन्द्र के विवाहोत्सव एवं हिंडोरा-उत्सव का कितना हृदयग्राही और मनोरम वर्णन किया है । यथा—

मिथिला आय जनकपुर हंसा । गुन रूप सील अवतंसा ।।
ठाढ़ी जनक-लली जु अटा हैं । मानो रूप की घटा हैं ।।
सजनी सौं बोलीं बेना । ये काके कुँवर छबि-ऐना ।।
तन सांवल सरस सलोनें । सुन्दर अस भये न होने ।।
यासों मन-लगन लागी है । मेरी नींद रु भूख भगी है ।।
पितु कठिन धनुष पन लीनों । कोउ कहे जाय कहा कीनौं ।।
ये मृदुल मनोहर गाता । यह धनुष कठिन अति ताता ।।
सब घातें भई अकामी । (मैं) इनकी पतनी ये स्वामी ।।
जनकसुता की करुना-बानी । रघुपति अपने मन मानी ।।
सिव कठिन धनुष लै तोरयो । भट बीरन कों मद मोर्‍यो ।।

भयौ ब्याह, बधाई भलियाँ । सब गली गली रंगरलियाँ ।।
दुलहा ले निजपुर आये । भये 'गोविंदसरन' मनभाये ।।

(श्रीगोविन्दशरणदेवाचार्यजी की वाणी, पद ६७)

झूलत जनकलली रघुनन्दन ।
अति अभिराम धाम छवि, गुननिधि धनुषबान कर कंजन ।।
सरजू तीर कलपतरु छइयाँ, हरित भूमि मनरंजन ।।
पावस रितु बन उपबन शोभा निरखि होत मन मंजन ।।
उर बिसाल मुक्ताफल सोहैं भक्तन के भय भंजन ।
"गोविंदसरन" राजाधिराज नृप तिलक असुर दल गंजन ।।

(श्रीगोविन्दशरणदेवाचार्यजी की वाणी, पद २०२)

यद्यपि श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय के आराध्य नित्यनिकुञ्जबिहारी युगलकिशोर श्यामा-श्याम भगवान् श्रीराधाकृष्ण हैं, तथापि सम्प्रदाय के सिद्धान्तानुसार भगवान् श्रीराम और भगवान् श्रीकृष्ण में अन्तर नहीं माना गया है । तत्वत: वे एक ही परात्पर-तत्त्व रसस्वरूप परब्रह्म हैं लीला विलासहेतु भक्तों को आनन्द देने, धर्म संस्थापन एवं निशाचरों के दमनार्थ ही समय-समय पर विभिन्न रूप से अवतार लेते हैं, जैसे कि श्रीपरशुरामशरणदेवाचार्यजी महाराज ने स्पष्ट किया है—

राम कृष्ण हरि नाम में, भेद अभेद न कोय ।
पार करन कौं 'परसराम', परम पोत प्रभु सोय ।।

(श्रीपरशुरामसागर, प्र० खण्ड ३७०/२)

भगवान् श्रीराम का दिव्य चरित मर्यादास्थापनादि के उद्देश्य से की गयी अनेक लीलाओं से परिपूरित है और इसी प्रकार भगवान् श्रीकृष्ण के लोकोत्तर, अप्राकृत ललित चरित का भी मुख्य उद्देश्य निज-प्रपन्नजनों को सुख देने के अतिरिक्त दिव्य-केलि रस प्रदान ही है, असुर-संहारादि कार्य तो प्रासङ्गिक हैं ।

आध्यात्मवादी एवं दलितोद्धारक

युगसन्त श्रीमुरारी बापू

भारतीय संस्कृति का उत्थान और युवकों में सच्चरित्रता व आदर्श पथ की प्रेरणा तथा दरिद्रनारायण की सेवा ही सौराष्ट्र के आध्यात्मिक सन्त श्रीमुरारी बापू का जीवन लक्ष्य है। गुजरात के सौराष्ट्र क्षेत्र में महुवा नगर के निकट तलगाजरड़ा ग्राम में पिता श्रीप्रभुदासजी हरिव्यासी के घर में माता सावित्री की कोख से दिनांक २५ सितम्बर १९४६ को जन्मे मुरारी बापू को बचपन से ही अपने आध्यात्मवादी दादा श्रीत्रिभुवनदास रघुराम हरिव्यासी से आध्यात्म एवं लोकोपकार के पुनीत संस्कार प्राप्त हुए, जिन्होंने बालक मुरारी बापू को प्रतिदिन रामायण की ५ चौपाई को सअर्थ कण्ठस्थ कराया। 'होनहार विरवान् के हात चिकने पात' के अनुसार आपने १४ वर्ष की अल्प आयु में ही अपने गांव में एक माह तक अमृतवाणी में श्रीरामायण पर प्रवचन देकर सबको मन्त्रमुग्ध कर दिया। सन् १९६६ से नवान्ह परायण कथा आरम्भ करके करीब ४०० परायण भारत के कोने-कोने के अलावा अमेरिका इङ्गलैण्ड, कनाडा केनिया, अफ्रीका, तनजानिया आदि देशों में प्रवचन करके करोड़ों लोगों में आध्यात्म एवं परोपकार की प्रेरणा जागृत कर आप विश्व के प्रख्यात एवं सरस कथावाचक बन चुके हैं।

आपके प्रवचन में १० से १५ लाख तक व्यक्ति उपस्थित होते हैं। प्राचीन कथा को आधुनिक परिपेक्ष में कहकर लोगों में आध्यात्मिक भावना, युवकों में राष्ट्रीयता व चरित्र उत्थान व परोपकार की भावना जागृत करने का आपको अद्भुत कौशल आता है। साथ ही आप विशाल जन समुदाय को उन्मुक्त हँसाने में, अश्रुधारा प्रवाहित कराने में, करतल ध्वनि कराने, भक्ति और प्रेम की रस धारा का स्फुरण कराने में आप पूर्ण सिद्ध हस्त हैं। मुस्कराते चेहरे पर फबती श्याम दाढ़ी एवं काली कमरिया ओढ़े आपके ओजस्वी एवं मोहक व्यक्तित्व से स्नेहधारा परिप्लावित होती रहती है, इसीलिए आपसे व्यक्तिगत साक्षात्कार एवं मार्ग दर्शन लेने वालों का भी तांता लगा रहता है जिन्हें आप आध्यात्मिक मार्ग बनाने, चरित्र उत्थान और परोपकार की ही प्रेरणा देते हैं यही नहीं आपके प्रवचनों के हजारों कैसेट घर-घर में हैं, कथा के रूप में इन कैसेटों से स्वतन्त्र नवान्ह परायण भी होता है।

इतना सब कुछ होते हुए भी आप विनम्रता एवं निरभिमानता की प्रतिमूर्ति हैं और पाखण्ड व आडम्बर से सदैव दूर, गृहस्थ होते हुए भी जल कमलवत रहते हैं। इसका रहस्य पूछने पर आप बताते हैं मेरे प्रवचनों में मैं वक्ता नहीं, मैं तो स्वयं एक श्रोता होता हूं, वक्ता कोई और ही है। मैं प्रवचन की पूर्व तैयारी नहीं करता पीठासीन होकर जो मन में आता वही बोलता हूँ। ईश्वरीय रचना में कहीं कोई व्यवधान नहीं है उसके सब कार्य पूर्व नियोजित व व्यवस्थित होते हैं। जिस समय कोई नवीन प्रवाह आने वाला होता है उस समय प्रभु किसी व्यक्ति

को निमित्त बना देते हैं, यदि वह व्यक्ति नहीं होगा तो भी प्रवाह तो आएगा ही उसको कोई नहीं रोक सकता।'

अर्जित धन लोकोपकार में

बहुत कम लोग जानते होंगे कि युग-सन्त मुरारी बापू ने सन् १९७७ से हो निर्णय कर रखा है कि कथा प्रवचन में प्राप्त धन-राशि का व्यक्तिगत हित में उपयोग नहीं करके गरीब, रोगी, दलितों, छात्रावास आदि के कार्य में ही खर्च करते हैं। कथा के दौरान श्रीराम जन्म पर भी आप गरीबों को अन्न वस्त्र व आर्थिक दान वितरित करते हैं। समय-समय पर अकाल के समय भी आप गरीबों को अनाज आदि की सहायता करते हैं। इस बार आप राजस्थान में २१ से २९ अप्रेल तक अखिल भारतीय श्री निम्बार्काचार्यपीठ निम्बार्कतीर्थ —सलेमाबाद में आयोजित रामकथा में अर्जित राशि भी अपने सम्प्रदाय गुरु जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज की प्रेरणा से सलेमाबाद में ही जनता को जल उपलब्ध कराने हेतु सूखे गये निम्बार्क सरोवर के जीर्णोद्धार व जल व्यवस्था हेतु लगाएँगे जिसमें करीब १० लाख रुपए लगने का अनुमान है।

राम जन्मभूमि, पंजाब समस्या आदि राष्ट्रीय प्रश्नों पर भी आपके स्पष्ट व सटीक विचार हैं। सही मायने में आप तत्वज्ञान के राही सत्यानवेषक सन्त हैं-एक भक्त ने आपके बारे में सही लिखा है।

कच्छ के सिंधु कछरन में,
राम रसायन को एक टापू।
राधा पद रेणु रसायन पाय के
सत्यान्वेषक मुरारी बापू॥

—जनार्दन शर्मा

ज्ञान मानस का सिखा दे। ज्योति का दीपक जगा दे।
सो रहा है विश्व सारा, दूर है जिसका किनारा,
ले रहे हैं स्वप्न सोये, भावना के कोष खोये,
उन सुसुप्तों के हृदय में, जागरण के गीत गा दे। ज्ञान……
मोह में लिपटे हुए हैं, आलस्य में सिकुड़े हुए हैं,
गात है जिनका सिथिल सब, उठ सकते हैं बता कब।
उन भटकतों के मनों में, कर्तव्य की स्फूर्ति ला दे। ज्ञान……
है जलधि में ज्वार आया, सर्व सुख संहार पाया,
डगमगाती नाव कैसे, मानव पड़ा हो सुप्त जैसे,
नाव को सीधी चलाकर, ज्ञान के तट से लगा दे॥ ज्ञान……
टूटते नक्षत्र नभ के, पश्चिमी है वायु जब से,
है उगलता आग शशि, कर क्षीण कर बैठा दिवाकर,
इस प्रकृति के उलटपन को, मोड़कर सीधा बना दे॥ ४॥। ज्ञान……
इन निरीहों की दशा पर, सोच लो बापू मुरारी,
गणतन्त्र भारत के पड़े, इस भाग्य को फिर से जगा दे॥ ५॥ ज्ञान……

—हरिश्चन्द्र लाटा, प्राध्यापक
श्रीसर्वेश्वर सं० म० वि० निम्बार्कतीर्थ

श्रीमद् बापूमुरारे र्वियति च वियतिः कल्पवन्धुः सुगन्धः

श्रीराधामाधवौ तीर्थे निम्बार्कऽनुग्रहायितौ ।
असाधारणकारुण्यौ विजयेतेतरां सदा ।।१।।

अनल्पकारुण्यमया विकल्पाः कल्पद्रुमस्याश्रिततापहर्तुः ।।
निम्बार्कतीर्थोपवनेऽत्रनैर्य आचार्यवर्याभिधया जयन्ति ।।२।।

द्वैतस्यचाद्वैतमतस्य यत्र, तज्ज्ञापकर्चामुभयश्रुतीनाम् ।।
समन्वयस्तद्वदिहापिराम, गोविन्दयोःसत्कथयोः प्रवाहः ।।३।।

तीर्थानि यान्ति तीर्थानां यात्रायै इति नः श्रुतम् ।
निम्बार्के नवरात्रार्थं मयोध्येव समागता ।।४।।

श्रीरामेकृष्णचन्द्रे विदधतु परमब्रह्मणि भ्रांतिभावान् ।
वक्षो विक्षोभरुक्षा विघटनपटवः क्लिष्टवाचो निकृष्टाः ।।
निम्बार्के चात्र धाम्नि प्रसरति नितरां तीर्थसुत्राम्णि प्रेम्णा ।
श्रीमद् बापूमुरारे र्वियति च वियतिः कल्पवन्धुः सुगन्धः ।।५।।

—राधावल्लभ शास्त्री कचनारिया (जयपुरं)

* श्रीमुरारी बापू प्रशस्तिः *

मुखेऽनुरागः शुकवद् विराजते, सुधामयी वाक् परपुष्ट सन्निभा ।
स्वभाव आदर्श गुणाञ्चितस्तथा, मुरारिबापूरयमस्ति शोभनः ।।१।।

(वंशस्थ वृत्तम्)

सौराष्ट्रदेशवास्तव्यो हरिव्यासिकुलोद्भवः ।
औदार्यगुणसम्पन्नो राजते प्रियमानसः ।।२।।

(अनुष्टुप् छन्दः)

श्रीमन्मुरारि-पदपङ्कज-निष्ठचित्तः श्रीमन्मुरारिगुणवर्णनमात्र वित्तः ।
श्रीमन्मुरारिरितिमञ्जुलनामधेयः श्रीमन्मुरारिपदवारिसुधैकपेयः ।।३।।
श्रीराघवेन्द्रचरणाम्बुजचंचरीकः सद्धर्मकर्मकरणापहृतव्यलीकः ।
रामायणप्रियकथाकथनेसुदक्षो निम्बार्कतीर्थपरिरक्षणदत्तलक्षः ।।४।।

(वसन्त तिलका वृत्ते)

युवा सन्नपि यो बापू र्जरठै र्विनिगद्यते ।
निम्बार्कसेवी सत्र् आपि मधुवाक् शोभते सदा ।।५।। (अनुष्टुप्वृत्तम्)

—हरिनारायण शर्मा शास्त्री

※ चरण नमन ※

परम पूज्य निम्बार्क गगन के, महाराज "श्री" चरण नमन ।
महापुरुष आते हैं जग में, कर्णधार बनने जग के ।
पावन करने दिशा दिखाने, दूर भगाते तम मन के ।
गोविन्द नाम का अमर संदेशा, सदा सुनाते चरण नमन ।
है "कमल" सदा पाता सुख दर्शन, है भानु आप जीवन धन के ।
राधामाधव से नैन दिलाकर, सफल बनावें चरण नमन ।
जब तक गंगा यमुना पृथ्वी पर, बहे आप सानन्द रहे ।
सर्वेश्वर प्रभु से यही विनय, अमर रहे रज चरण नमन ।

—कमल जोशी 'पत्रकार'

※ अवतारी श्रीराम है ※

भव-सागर से पार करे जो, दो अक्षर का नाम है ।
मर्यादा पुरुषोत्तम नरहरि, अवतारी श्रीराम है ।।
दशरथ के सुपुत्र दाशरथ, कौशल्या के नयन सितारे ।
भरत, शत्रुघन, लक्ष्मण भ्राता, भक्तों के भगवान् दुलारे ।
हनुमान के रोम-रोम में, रम गए सीता-राम हैं ।।१।। मर्यादा.......

पितु-आज्ञा को शिरोधार्य कर, राज्य छोड़ बन गए वन-वासी ।
तुलसीदास के मानस-मोती, अमावस में पूरणमासी ।।
शबरी के मीठे बेरों में, छिपी प्रीति निष्काम है ।।२।। मर्यादा.......

निशिचर-हीन-मही करने को, भुजा उठा धरि प्रण भीषण ।
राख हुई सोने की लंका, धन्य हुए सुग्रीव, विभीषण ।।
धन्य हो गई दशों-दिशायें, नगर-डगर, हर ग्राम है ।।३।। मर्यादा.......

ऋषि-मुनि-सन्त-तपस्वी-योगी, लालायित हैं जग के जन-जन ।
भव-भय-भंजन असुर-निकन्दन, राम-राज्य के जन-मन-रंजन ।
युग-युग से कर रहे प्रतीक्षा, पुनः अयोध्या-धाम है ।।४।। मर्यादा.......

निराकार-साकार सृष्टि के, अणु-अणु के कण-कण के स्वामी ।
"जननी जन्मभूमि स्वर्गादपि गरीयसी" कहे अन्तर्यामी ।।
प्रथम-काव्य के प्रथम-पात्र-श्री तुमको प्रथम-प्रणाम है ।।५।। मर्यादा.......

—सत्यनारायण शर्मा 'पथिक'

❋ श्रीरामजन्मभूमि अयोध्या ❋

लेखक-पं० चन्द्रदत्त पुरोहित, प्रकाशक–सनातन भारती प्रकाशन, परबतसर

मुद्रक—श्रीनिम्बार्क मुद्रणालय, निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) राज०

न्योछावर (मूल्य) दस रुपये प्रति । नि:शुल्क वितरण कर्ताओं के लिये १० प्रति से अधिक लेने पर आठ रु० प्रति । एजेन्टों पुस्तक विक्रेताओं को २५/ प्रतिशत कमीशन । अधिक के लिए लेखक के पते पर पत्र व्यवहार करें। स्टाक सीमित है शीघ्रता करें ।

श्रीराम जन्मभूमि अयोध्या मन्दिर है, मस्जिद नहीं, तथाकथित मस्जिद में नमाज क्यों नहीं पढ़ी जाती ? अजान के लिए इसमें मीनार तक क्यों नहीं ? वजूद के लिए भला मस्जिद में पानी का स्थान निर्मित क्यों नहीं ? हिन्दू मन्दिरों के समान सदर दरवाजे पर चन्दन की सिल्ली स्थापित क्यों ?

कसौटी के खम्बों पर आर्य धर्म संस्कृति का प्रतीक "ॐ" शब्द अंकित क्यों ? और क्यों है ? कमल एवं घण्टी आदि के हिन्दू चिह्न ? साथ ही–सीता पाक–रसोई सम्बन्धी अंकन क्यों ? और क्यों हैं हिन्दू मन्दिरों के समान इसमें विशाल परिक्रमा तथा झरोखे आदि–आदि ।

इन सब बातों की जानकारी के साथ–साथ आप जान पायेंगे–श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर बादशाह बाबर द्वारा कब और क्यों तोड़ा गया ? तत्कालीन नरेशों, राजराणियों, सन्त-महात्माओं तथा देश के जन समुदाय द्वारा समय-समय पर इसकी रक्षार्थ आक्रमणकारियों से संघर्ष का विवरण, विभिन्न तथ्य पूर्ण सामग्री। देश में शान्ति, समृद्धि एवं जन-जन के कल्याण हेतु श्रीराम मन्दिर का जन्मस्थली पर नव निर्माण, सर्वधर्म समभाव एवं विश्व बन्धुत्व का हमारा परम्परागत आदर्श 'वसुधेव कुटुम्बकम्', सभी धर्म, जाति, वर्ग के प्रति समान आदर, समस्त नागरिकों में एकता आदि के दिशा बोध हेतु पढ़िये—"श्रीराम जन्मभूमि अयोध्या ।"

पुस्तक प्राप्ति स्थान—

१. *पं० चन्द्रदत्त पुरोहित*
   सनातन भारती प्रकाशन, वार्ड नं० ७, पो० परबतसर (जि० नागौर) राज०

२. *सर्वेश्वर पुरोहित*
   रमेश न्यूज एजेन्सी बुक स्टाल, रेल्वे प्लेटफार्म, पो० मकराना (जि० नागौर) राज०

३. *श्रीनिम्बार्क मुद्रणालय*
   अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ
   निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) जि० अजमेर [राज०]

पं. सं. आर. एन. १८१०२-७० 'श्रीनिम्बार्क' रामकथा विशेषांक रजि. नं. आर.जे./ए.जे. १२३

* राम कथा जग मंगल करनी *

एहि महँ रघुपति नाम उदारा। अति पावन पुरान श्रुति सारा ।।
मंगल भवन अमंगल हारी। उमा सहित जेहि जपत पुरारी ।।
भनिति बिचित्र सुकबि कृत जोऊ। राम नाम बिनु सोह न सोऊ ।।
बिधुबदनी सब भाँति सँवारी। सोह न बसन बिना बर नारी ।।
सब गुन रहित कुकबि कृत बानी। राम नाम जस अंकित जानी ।।
सादर कहहिं सुनहिं बुध ताही। मधुकर सरिस संत गुनग्राही ।।
जदपि कबित रस एकउ नाहीं। राम प्रताप प्रगट एहि माहीं ।।
सोइ भरोस मोरें मन आवा। केहिं न सुसंग बड़प्पनु पावा ।।
धूमउ तजइ सहज करुआई। अगरु प्रसंग सुगंध बसाई ।।
भनिति भदेस बस्तु भलि बरनी। राम कथा जग मंगल करनी ।।

छं०—मंगल करनि कलि मल हरनि तुलसी कथा रघुनाथ की।
गति कूर कबिता सरित की ज्यों सरित पावन पाथ की ।।
प्रभु सुजस संगति भनिति भलि होइहि सुजन मन भावनी।
भव अंग भूति मसान की सुमिरत सुहावनि पावनी ।।

---

* भगति तात अनुपम सुखमूला *

भगति तात अनुपम सुखमूला। मिलइ जो संत होइँ अनुकूला ।।
भगति कि साधन कहउँ बखानी। सुगम पंथ मोहि पावहिं प्रानी ।।
प्रथमहिं बिप्र चरन अति प्रीती। निज निज कर्म निरत श्रुति रीती ।।
एहि कर फल पुनि बिषय बिरागा। तब मम धर्म उपज अनुरागा ।।
श्रवनादिक नव भक्ति दृढ़ाहीं। मम लीला रति अति मन माहीं ।।
संत चरन पंकज अति प्रेमा। मन क्रम बचन भजन दृढ़ नेमा ।।
गुरु पितु मातु बंधु पति देवा। सब मोहि कहँ जानै दृढ़ सेवा ।।
मम गुन गावत पुलक सरीरा। गदगद गिरा नयन बह नीरा ।।
काम आदि मद दंभ न जाकें। तात निरंतर बस मैं ताकें ।।

दो०—बचन कर्म मन मोरि गति भजनु करहिं निःकाम।
तिन्ह के हृदय कमल महुँ करउँ सदा बिश्राम ।।